ओ३म्

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्

# आर्यसमाज बिहारीपुर, बरेली

के द्वारा प्रकाशित

# ऋषि दर्पण

(वर्ष प्रथम - अप्रैल एवं जून 2013, अंक - 2 व 3) वेद विज्ञान विशेषांक (त्रैमासिक प्रगति पत्रिका)

श्रद्धांजलि

स्वतंत्रता सेनानी

आर्यरत्न स्वामी इन्द्रदेव यति

स्वतंत्रता सेनानी

आर्यरत्न शान्तिशरण विद्यार्थी

प्रकाशक

डॉ. ओ. पी. अग्रवाल — प्रधान/संरक्षक

डॉ. श्वेतकेतु शर्मा — मंत्री/सम्पादक

संदीप अग्रवाल — कोषाध्यक्ष

वेदभानु आर्य — पुस्तकालयाध्यक्ष

आर्यसमाज बिहारीपुर, महर्षि दयानन्द चौक

आर्यसमाज गली, बरेली (उ.प्र.)-243003

Mob. 09412289393, Ph. 0581-2452525 ● e-mail : shwetketusharma@gmail.com

# चित्रों में आर्यसमाज बिहारीपुर की गतिविधियाँ

वेद विज्ञान संगोष्ठी में मंचासीन अतिथिगण

वेद विज्ञान संगोष्ठी में आचार्य विशुद्धानन्द स्मृति वेदपी
नई दिल्ली के द्वारा विद्वानों का अभिनन्दन

शोभायात्रा 10 मार्च 2013 का दृश्य

शारदीया संस्कृत संगोष्ठी में बोलते हुए स्वामी ब्रह्मान

ऋषि दर्पण के प्रथम अंक का विमोचन

एक शाम दयानन्द के नाम में काव्य पाठ करते श्री राजेश गौ

आर्यसमाज द्वारा स्वतंत्रता सेनानी शांतिशरण विद्यार्थी का सम्मान

आर्यसमाज स्थापना दिवस पर आचार्य व्रतपाल शास्त्री का अभिन

।। ओ३म् ।।

# ऋषि-दर्पण

## (वेद विज्ञान विशेषांक)

### प्रमुख आकर्षण


| | | | |
|---|---|---|---|
| १. | वेदोपदेश | श्रीमती रामकीर्ति देवी शास्त्री | ३ |
| २. | शुभकामना सन्देश | | ४-६ |
| ३. | सम्पादकीय : संस्कृत बनाम विज्ञान | डॉ० श्वेतकेतु शर्मा | ७-१२ |
| ४. | जैमिनी ऋषि व वेद | स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती | १३-१४ |
| ५. | वेदोऽखिलोधर्ममूलम् | डॉ० सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या | १५-१८ |
| ६. | ज्ञान विज्ञान का मूल वेद | प्रो० (डॉ०) ज्वलन्त कुमार शास्त्री | १८-२७ |
| ७. | वेदों में विज्ञान एक चिन्तन | आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय | २८-३३ |
| ८. | वेद में विज्ञान के सूत्र | डॉ० ओ० पी० अग्रवाल | ३४-३६ |
| ९. | वैदिक गीत | डॉ० दामोदर शर्मा | ३६ |
| १०. | विज्ञान व वेद | डॉ० वेदप्रकाश शर्मा | ३७-४९ |
| ११. | हम वेदों को रोज पढ़ें | गीतकार इंद्रदेव त्रिवेदी | ४९ |
| १२. | Animal Husbandry and Veterinary Science in Vedas and Vedic Period | Dr. A. K. Garg | ५०-५३ |
| १३. | यज्ञ का वैज्ञानिक दार्शनिक चिन्तन | आचार्य रामदेव शास्त्री | ५४-५७ |
| १४. | ईश्वर की सर्वव्यापकता का दार्शनिक चिन्तन | आचार्य अवनीन्द्र शास्त्री | ५८-५९ |
| १५. | वेदोक्त सृष्टि विज्ञान | ओम आर्य शास्त्री | ६०-६५ |
| १६. | यज्ञ | गीतकार इंद्रदेव त्रिवेदी | ६५ |
| १७. | ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना मंत्रों का वैज्ञानिक दार्शनिक चिन्तन | डॉ० वी० के० शर्मा | ६६-६९ |
| १८. | वेदों में चिकित्सा विज्ञान | डॉ० डी० के० द्विवेदी | ७०-७३ |
| १९. | उपनिषदों में वर्णित चिकित्सा का वैज्ञानिक दार्शनिक चिन्तन | डॉ० आर० के० यादव | ७४-७६ |
| २०. | आत्मा का वैज्ञानिक दार्शनिक चिन्तन | सुश्री रीता माथुर | ७७-८१ |

| | | |
|---|---|---|
| २१. प्रयत्नशील व्यक्ति की हार नहीं होती | स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती | ८१ |
| २२. अथर्ववेद में चिकित्सा विज्ञान | डॉ० श्वेतकेतु शर्मा | ८२-९२ |
| २३. अनुपम है सत्यार्थ प्रकाश | गीतकार इंद्रदेव त्रिवेदी | ९२ |
| २४. वेदों में वर्णित ओ३म् पर वैज्ञानिक अनुसन्धान | साभार- अमर उजाला | ९३-९४ |
| २५. प्राणायाम का वैज्ञानिक दार्शनिक चिन्तन | डॉ० वेदप्रकाश शर्मा | ९५-९७ |
| २६. सूर्यदेव | गीतकार इंद्रदेव त्रिवेदी | ९७ |
| २७. अक्षर, मंत्र, वेद की त्रयी से | गीतकार इंद्रदेव त्रिवेदी | ९८ |
| २८. वेदों को अपनाओ, वेदों को अपनाओ | गीतकार इंद्रदेव त्रिवेदी | ९९ |
| २९. ओ३म् | गीतकार इंद्रदेव त्रिवेदी | ९९ |
| ३०. ऐसा है सत्यार्थ प्रकाश | गीतकार इंद्रदेव त्रिवेदी | १०० |
| ३१. श्रद्धाँजलि स्वामी इन्द्रदेव यति जी के प्रति | | १०१-१०२ |
| ३२. स्वामी इन्द्रदेव यति जी का जीवन परिचय | | १०२-१०३ |
| ३३. श्रद्धाँजलि श्री शान्ति शरण विद्यार्थी जी के प्रति | | १०४-१०५ |
| ३४. सम्पादक के नाम पत्र | | १०६ |
| ३५. आर्यसमाज बिहारीपुर की गतिविधियाँ | | १०६-११८ |
| ३६. जिले के विभिन्न आर्यसमाजों की गतिविधियाँ | | ११९-१२० |
| ३७. वेद और विज्ञान (गीत) | पं० देवेन्द्र नाथ शर्मा | १२० |
| २५. विनम्र निवेदन | | १२० |



"सम्पादक"

**डॉ० श्वेतकेतु शर्मा**

(चलभाष : ०९४१२२८९३९३)


*विशेष - ऋषि दर्पण में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के है, सम्पादक अथवा प्रकाशक का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी प्रकार की शंका होने पर पाठक बन्धु लेखकों से स्वयं समाधान प्राप्त कर सकते हैं।*

**"आर्य समाज बरेली फेस बुक देखिए व सदस्य बनें"**

**आजीवन सदस्यता : रू० ११००.००, इस अंक की सहयोग राशि : रू० ४०.००**

।। ओ३म् ।।

# वेदोपदेश

(श्रीमती रामकीर्ति देवी शास्त्री)

*कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतꣳ समाः।*
*सर्व त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।*

(यजुर्वेद के ४०वें अध्याय का २ मंत्र)

शब्दार्थ - कुर्वन् = करता हुआ। एव = निश्चय। इह = इस संसार में। (कर्माणि) कर्मों को (जिजीविषेत्) जीना चाहे (शतम्) सौ (समाः) वर्ष (एवम्) इस प्रकार (त्वयि) तुझ में (न) नहीं (अन्यथा) दूसरी तरह (इतः) इसके सिवाय (अस्ति) है (न) नहीं (कर्म) काम (लिप्यते) चिपटता है (नरे) मनुष्य में।

भावार्थ - इस वेद मन्त्र में परमात्मा जीव को इस बात का उपदेश करते हैं कि हे जीवों ! तुम इस संसार में सौ वर्ष तक कार्य करते हुए जीने की इच्छा करो अर्थात् पूर्ण आयु पर्यन्त कार्य करते रहो, तुम्हारे लिए सबसे अच्छा मार्ग यही है, क्योंकि अच्छे कर्म जीव के बन्धन का कारण नहीं होते। बहुत से मनुष्य यह कहेंगे कि मन्त्र में तो केवल कर्म लिखे हैं तुम अच्छे किस प्रकार कहते हो। तो इसका उत्तर यह है कि ईश्वर की आज्ञा के विरुद्ध दूसरों का अधिकार लेने वाले कर्मों के करने का निषेध पिछले अंक में दिये गये मन्त्र में हो चुका है। उनको छोड़कर जो कर्म हैं वह सब ईश्वर की आज्ञा के अनुसार होने से शुभ ही हैं। किसी प्रकार की बुराई हो नहीं सकती, क्योंकि ईश्वर कभी दुःखदायक कर्म के करने का उपदेश जीव को नहीं करते और कर्म के उपदेश का तात्पर्य भी यही है। मनुष्य सदा अच्छा या बुरा कुछ न कुछ कार्य करता रहता है, इसलिए कर्म के उपदेश की कोई आवश्यकता न थी। परन्तु पहले मन्त्र में किसी का अधिकार न लेने वाले कर्मों का उपदेश इसलिए किया कि बिना शुभ कर्मों के लिए मनुष्य बुरे कर्मों से बच नहीं सकता और बुरे कर्मों से सदा दुःख उत्पन्न होता है और कोई मनुष्य दुःख की इच्छा से कोई कार्य नहीं करता। इस सब बुराई को दूर करने के लिए उपदेश किया कि किसी समय भी शुभ कर्म से वंचित न रहो, जिससे अवकाश मिलने से बुरे कार्य का विचार ही उत्पन्न न हो। क्योंकि मन सदा कर्म करता रहता है। वह किसी समय भी कर्म से पृथक् नहीं होता। ऐसी अवस्था में जबकि मन की शक्ति को समाधि या सुषुप्ति के द्वारा नितान्त रोक दिया जाये, मनुष्य का सबसे बढ़कर कर्त्तव्य यह है कि वह मन को अवकाश न दे।

★

ओ३म्

।। वेदोऽखिलोधर्ममूलम्।।

**स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती**
**'वेदभिक्षु'**
वेद उपनिषद, दर्शन
एवं आर्ष साहित्य
के प्रख्यात प्रकाण्ड विद्वान

आर्यसमाज बिहारीपुर
महर्षि दयानन्द चौक
बरेली।
मो.०९४१२३७२१७९

# ऋषि दर्पण (विशेषांक) के प्रकाशन पर शुभकामनाएं

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने इस युग में सर्वप्रथम 'वेदों की ओर लौटो' की उद्घोषणा की थी, क्योंकि वेद ही सभी सत्य विद्याओं का मूल हैं। वेदों का अध्ययन विश्व की आवश्यकता है। बिना वेदों के विज्ञान की कल्पना सम्भव नहीं है। वेदों में विज्ञान सार्वभौमिक सत्य एवं अकाट्य है, इस विषय पर 'ऋषि दर्पण' का विशेषांक "वेदों में विज्ञान" वैज्ञानिकों के लिए ही नहीं अपितु समाज के प्रत्येक वर्ग हेतु महत्वपूर्ण होगा। सत्य व असत्य का समुचित विवेचन वेदों के पठन-पाठन से ही सम्भव है, इस हेतु आर्यसमाज बिहारीपुर के प्रधान श्री डॉ० ओ० पी० अग्रवाल जी एवं मंत्री श्री डा० श्वेतकेतु शर्मा जी का यह प्रयास अत्यन्त प्रशंसनीय है जिससे ऋषि के वाक्य "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सभी आर्यों का परम धर्म है।" तथा "सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।" को सार्थकता प्रदान कर रहा है।

"ऋषि दर्पण" के "वेद विज्ञान विशेषांक" के प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं प्रदान करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि वेदों में विज्ञान का चिन्तन से लाभ उठायेंगे, सत्यार्थ दिशा को प्राप्त करेंगे। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ –

शुभेच्छु :

**स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती 'वेदभिक्षु'**

**राजेश अग्रवाल**
पूर्व मंत्री, उ० प्र० सरकार
पूर्व उपाध्यक्ष, उ० प्र० विधान सभा

276, कर्नलगंज, बरेली
E-mail : rajeshrajeshbly05@yahoo.in
फोन : 0581-2457878, मो. 8765954824

# शुभकामना संदेश

प्राचीनतम ज्ञानकोष के रूप में वेदों की महत्ता सर्वविदित है। वेद और हमारे सनातन ग्रन्थों ने बिना किसी पूर्वाग्रह के सम्पूर्ण विश्व के मंगल का विधान रचा है। यथा -

*उतः नोधियो गो अग्रा पूषन्विषगवेवयावः*
*मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।*
*माधवीर्नः सन्त्वोषधीः।*
*मधु नक्तमुतोषसो मधुयत्पार्थिव रजः। मधुद्यौरस्तु न पिता*
*मधु मान्नौ वनस्पतिर्मधुमां अस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तुनः।*

(जैसे - गाय पोषक दूध देती है, हे पूषन ! पोषण के देवता ! हमारी बुद्धि को पोषक विचारों से प्रवाहित करने वाला बनायें। वायु मधुर हो। नदियाँ मधुर प्रवाह में हों। औषधियाँ मधुर हों। पिता की तरह पोषक दिव्य शक्तियाँ मधुर हों। रात्रि और दिन मधुर हों। पृथ्वी की रज मधुर हों। अन्तरिक्ष मधुर हो। वनस्पतियाँ मधुर हो। सूर्य मधुर हो। गायें मधुर दुग्धरस दें।)

-ऋग्वेद (१.९०, ५-८)

वेद ज्ञान का सम्यक् प्रसार, अध्ययन-अध्यापन और शोध आदि कार्य न केवल स्वयं, अपितु जन-जन के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करेगा। इस दिशा में आर्य समाज, बिहारीपुर, बरेली द्वारा किये जा रहे कार्य अत्यन्त सराहनीय है।

**'ऋषि दर्पण'** त्रैमासिक द्वारा प्रकाश्य **'वेद विज्ञान विशेषांक'** अपने पुनीत लक्ष्य प्राप्त करे, इस हेतु मेरी शुभकामनाएँ।

(राजेश अग्रवाल)

डॉ० श्वेतकेतु शर्मा जी
सम्पादक - ऋषि दर्पण
मंत्री, आर्य समाज, बिहारीपुर
महर्षि दयानन्द चौक, बरेली

53, गुलिस्तां कालोनी, लखनऊ फोन/फैक्स : 0522-2236755

भारतीय पशु-चिकित्सा अनुसंधान संस्थान
इज्जतनगर—243 122 (उ.प्र.) भारत
INDIAN VETERINARY RESEARCH INSTITUTE
IZATNAGAR - 243 122 (U.P.) INDIA
IVRI
ICAR

**प्रो. गया प्रसाद**
**Prof. Gaya Prasad**
कार्यवाहक निदेशक
Acting Director

# शुभकामना संदेश

'वेद' शब्द का प्रादुर्भाव 'विद' अर्थात 'जानने' से हुआ है। यह जानना वस्तुतः अपने पंचज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से किसी 'सहज' अर्थात् प्राकृतिक अनुभव को अपने तंत्रिकातंत्र पर जानना है। वेदों में वर्णित इसी सहज अर्थात् प्राकृतिक अनुभव के 'जानने' अर्थात 'ज्ञान' को, जिसकी शाब्दिक उत्पत्ति 'ग्नौस्टिक्स' शब्द अर्थात् जानने से हुई है, को 'विज्ञान' कहा गया। पंचज्ञानेन्द्रियों के पाँच विषय थे : गंध, रस, रूप, स्पर्श तथा शब्द और इनके क्रमशः संबंध रखने वाले ये पाँच तत्व 'पृथिव्यापस्तेजोवायुराकाश' ('क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा', तुलसीदास के शब्दों में) थे। ब्रिटिश तथा यूरोपीय विज्ञान की कसौटी-सिद्धांत और अभ्यास/प्रयोग पर आधारित रही जबकि भारतीय वैज्ञानिक ज्योतिर्विज्ञान के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों की गवेषणा करने में 'सहजज्ञान' पर विश्वास करते थे। भारतीय वैज्ञानिकों के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों के वैज्ञानिक जैसे निकोल टेस्ला जिन्होंने प्रत्यावर्ती विद्युत धारा, विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र तथा कई अन्य महत्वपूर्ण खोजें की, श्रोडेंगर, आइंस्टीन, नील्स बोहर तथा आधुनिक परमाणु जनक-राबर्ट औपेन हाइमर जिन्होंने आधुनिक विज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान दिया, ये सभी वेदों तथा उपनिषदों के अनुगामी थे।

भारत में महर्षि भारद्वाज के नेतृत्व में हिमालय की तलहटी में वनस्पतियों के गुणधर्म जानने के लिए आज से २,५०० वर्ष पूर्व एक महान सम्मेलन हुआ, जिसका विवरण चरक संहिता में मिलता है। पिप्पली, पुनर्नवा, अपामार्ग आदि वनस्पतियों का उल्लेख अथर्ववेद में है। यजुर्वेद में स्वर्ण, ताम्र, लौह, त्रपु या वंग तथा सीस धातुओं की ओर विवरण है। इन धातुओं के कारण धातुकर्म विद्या का विकास लगभग सभी देशों में हुआ। कणाद भारतीय परमाणुवाद के जन्मदाता हैं। उनके अनुसार द्रव्य परमाणुओं से मिलकर बना है तथा प्रत्येक द्रव्य के परमाणु भिन्न-भिन्न हैं। दो परमाणु मिलकर ही द्वयणुक और त्रयणुक आदि बनते हैं। दशमलव प्रणाली का उपयोग और शून्य की परिकल्पना बड़ी ज्योतिषीय गणना के लिए अनिवार्य थे और इनकी मदद से ७वीं सदी में ब्रह्मगुप्त जैसे गणितज्ञों ने पृथ्वी की परिधि की गणना लगभग २३,००० मील कर लेने में समर्थ बनाया जो आधुनिक गणना के करीब ही है। इसने भारतीय ज्योतिषियों को भारत के महत्वपूर्ण स्थानों के देशांतर की भी काफी शुद्ध गणना करने में समर्थ बनाया था। आयुर्वेद विज्ञान नामक प्राचीन भारतीय प्रणाली भी इस देश में फली-फूली। वैद्यों ने शवविच्छेदन, शल्यक्रिया और स्वास्थ्य वर्धक पोषण के दिशा-निर्देशों का विकास किया तथा वैद्यक प्रणाली, रोगियों की सुश्रूषा और रोग के लक्षणों की पहचान के लिए विधि संहितायें लिखीं।

अत्यन्त हर्ष एवं सन्तोष का विषय है कि प्रदेश का एक जागरुक बुद्धिजीवी वर्ग वैज्ञानिक चेतना एवं जागरुकता तथा सामाजिक प्रगति हेतु 'ऋषि दर्पण' नामक प्रतिष्ठित त्रैमासिक पत्रिका का सफलतापूर्वक प्रकाशन कर रहा है। 'ऋषि दर्पण' पत्रिका के अग्रिम अंक के प्रकाशन के इस सुअवसर पर मैं अपनी तथा इस संस्थान के समस्त परिवार की ओर से इसके विद्वत सम्पादक मंडल को उनके सार्थक एवं सराहनीय प्रयासों हेतु हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(गया प्रसाद) 5/6/2011

प्रतिष्ठा में,
डॉ० श्वेतकेतु शर्मा, सम्पादक
आर्य समाज, बिहारीपुर
महर्षि दयानन्द चौक, बरेली। मो. ९४१२२८९३९३
मेल : shwetketusharma@gmail.com

Phone 0091-581-2300096 (O), Gram : VETEX Fax : 0091-581-2303284, E-mail : dirivri@ivri.res.in, directorivri@gmail.com

## सम्पादकीय

# संस्कृत बनाम विज्ञान

भारतीय गणराज्य का प्रथम वाक्य 'सत्यमेव जयते' विश्व को यह संदेश दे रहा है कि प्राचीनतम भारतीय संस्कृति का मूल बिन्दु देवभाषा संस्कृत है। संस्कृत भाषा इस देश की माँ के समान है क्योंकि सभी भाषाओं की जननी 'सर्वाषां भाषानां जननी' है। विश्व की जितनी भी भाषायें हैं उसका मूल संस्कृत भाषा से निहित है। इसलिए कहा गया है "भा प्रभा यस्यां रतं मातरम्" अर्थात् जिसकी ज्योति में सारा संसार विद्यमान था, ऐसा हमारा भारत देश है। इसलिए कहा गया है "गायन्ति देवा किल गीत कानी धन्यास्तुते ये भारत भूमि भागे" अर्थात् इस देश में जन्म लेने वाले वे लोग धन्य है। "सुजलां सुफलां मलयज शीतलां शस्य श्यामलां मातरं वन्दे मातरम्" इसलिए बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय ने उपरोक्त पंक्तियों में भारत देश की महिमा का वर्णन किया है। भारतीय संस्कृति की मूल भाषा संस्कृत है। बिना संस्कृत के भारतीयता की कल्पना करना असंभव है। इस देश के प्रत्येक नागरिक का रक्त संचार संस्कृत की गरिमा से रंजित है।

ऐसी गरिमामयी भारतीयता के मूल में विद्यमान माँ स्वरूपा संस्कृत भाषा के प्रति अभी हाल में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी उ० प्र० के दीक्षान्त समारोह दि० ६ फरवरी २००७ को माननीय राज्यपाल उ० प्र० श्री टी० वी० राजेश्वर महोदय ने संस्कृत भाषा के मंच से संस्कृत विरोधी शब्दावलियों का प्रयोग कर भारतीय संस्कृति के पुजारियों को अपार आघात पहुँचाया है।

उन्होंने कहा कि "किसी जमाने में संस्कृत देववाणी रही होगी, आज जमाना बदल रहा है अब यह मानवीय व्यवहार के लिए व्यावहारिक नहीं रह गयी है। संस्कृत की डिग्री लेकर आप बहुत लम्बा सफर तय नहीं कर सकते हैं, केवल शिक्षक मंदिर के पंडित तथा पुरोहित बना जा सकता है। दिल्ली या विलायत जाना है तो संस्कृत को पकड़ कर न रखें, लोग चांद पर जा रहे हैं, ऐसे में आप बैलगाड़ी युग में न रहें" (अमर उजाला, बरेली)

उपरोक्त वाक्यों से ऐसा प्रतीत हो रहा है कि राज्यपाल महोदय को या तो संस्कृत का ज्ञान नहीं है या फिर अंग्रेजियत की मानसिकता के चलते भारतीय संस्कृति व भाषा को अपमानित करना चाहते हैं।

संस्कृत मात्र पुरोहित या कर्मकाण्ड की भाषा ही नहीं अपितु पूर्ण वैज्ञानिक भाषा है। इस देश के ज्ञान विज्ञान की मूल भाषा संस्कृत में निहित है। सृष्टि के आदि काल में सर्वप्रथम ऋग, यजु, साम अथर्व इन चार ऋषियों के द्वारा अपौरुषेय ज्ञान विज्ञान की महान कृति वेदों का आविष्कार हुआ और वेदों की भाषा वैदिक संस्कृत में विद्यमान है। भाषा के रूप में संस्कृत भाषा का उद्भव आदिकाल से ही है। वेद पूर्ण वैज्ञानिक है जिसमें विभिन्न विद्यायें हैं और उन्हीं विद्याओं से आधुनिक विज्ञान का आविष्कार हो रहा है। इसीलिए कहा है कि "वेदो ही सर्वविज्ञानमूलम्"। वेदों में विज्ञान किस रूप में और कहाँ-कहाँ, किन-किन मंत्रों में विद्यमान है, उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत है -

**वेदों में विज्ञान :- १. ब्रह्म विज्ञान** - ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद के निम्नलिखित मंत्रों में

ब्रह्म विज्ञान का वर्णन है - तमीशानं जगत० ऋ० १/२/५, तद्विष्णों० ऋ० १/२/२/७५, युञ्जते. मन०ऋ०४/४/२४, मध्यक्षं० अथर्व० १०/२३/८/३८, परीत्य भूतानि परीत्य लोक्रान यजु० ३२/११, सनो वन्धु जनिता० यजु० ३२/१०, इस प्रकार न जाने कितनी ऋचाएं प्रेरित करतीं हैं कि सभी मानवों को धर्म के आचरण, वेद व योग के अभ्यास तथा सत्संग आदि कर्मों से शरीर की पुष्टि और आत्मा की शुद्धि का संपादन कर परमात्मा को प्राप्त कर सुखमय होना चाहिए। ये ऋचाएँ ब्रह्म विज्ञान की सूचिका मात्र है। इनके स्वाध्याय मनन और चिन्तन से अर्थ की गहनता में उतारा जा सकता है। परमात्मा की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति का वैज्ञानिक चिन्तन वेद है जो संस्कृत भाषा में विद्यमान है जो बिना संस्कृत ज्ञान के ब्रह्म विज्ञान को नहीं समझा जा सकता है।

**२. सृष्टि विज्ञान :-** चारों वेदों में सृष्टि विज्ञान बीज रूप में निहित है उदाहरणार्थ - तम आसीत ऋ०८/७/१७, हिण्यगर्भ ऋ ०८/७/३, यत्परं अथर्व० ११/२४/४/२७, विश्वायद्रपा साम० ८/१२/७, सहस्त्रशीर्षा यजु० २९/३, आदि मंत्रों में सृष्टि विज्ञान का र्णन है। इसके अतिरिक्त पुरुष सूक्त में भी सृष्टि विज्ञान के बीज मिलते हैं। सृष्टि विज्ञान के ाथ पृथिव्यादि लोकभ्रमण के मंत्र भी वेदों में उपलब्ध हैं यथा त्य सुमेष महया० साम० ९/३/८, सूर्या चन्द्र मसौ० ऋ० १०/१९, सूक्ष्मा चासि० यजु० १/२७, निधि विभ्रती० अथर्व० १२/४४, आकृयणेन रजसा वर्तमानो० यजु० ३३/४३। इस प्रकार उपरोक्त ऋचाएँ ानव मात्र को प्रेरणा दे रही हैं कि भूगोलादिलोकों के साथ जो सूर्य का आकर्षण है वही वृष्टि द्वारा अमृतरूपी जल को बरसाता है जो मूर्त द्रव्यों को दिखाने वाला है वैसे ही सूर्यादि लोक भी ःश्वरीय प्रकृति धारण किये हुये हैं। सम्पूर्ण सृष्टि विज्ञान वेद की देन है।

**३. विमान विज्ञान :-** वेदों में विमान विज्ञान का वर्णन है "समुद्रं गच्छ स्वाहा ऽन्तरिक्षं गच्छ स्वाहा" अर्थात् सुख पूर्वक समुद्र की यात्रा करो अन्तरिक्ष की यात्रा करो, यात्रा के लिए वेगवान रथ का वर्णन निम्न ऋचाओं में है -

*आ वा रथं पुरूमायं मनोजुवं जीवाश्वं यज्ञियं जीमंसे हुवे।*
*सहस्त्र केतुं वनितं शतद्वसुं श्रुष्टीवातं वरिवोधा मर्मिपिय। ऋ० १/११९/१*

यहाँ रथ के विशेषणों में पुस्मायम्, मनोजुवम्, श्रुष्टीवानम्, वरिवोधाम में विशेषण रूप में द्रष्टव्य है। पुरुमायम - बहुत वृद्धि से, मनोजुवम - वेगन्त मन की भांति वेगवान, व्युष्टीवानम - शीघ्र गति करने वाला, वारिवोधान - सुख सेवन करने वाला आदि विशेषण विमान विद्या पर ही चरितार्थ हो रहे हैं। महर्षि दयानन्द ने रथ का अर्थ विमानादिमानम किया है। इसी प्रकार ऋग्वेद ३/१५/२ में निम्न मंत्र में भी वर्णन है -

*येन पन्थानों वहवो देवयानां अन्तरा द्यावा पृथिवी संचरन्ति।*
*ते मा जुषतां पयसा घृतेन यथा कृत्वा धनमाहराणि।।*

इस मंत्र में आकाश व पृथ्वी के मध्य विमानों के जाने का वर्णन है। जिसमें वैश्य के मुख से यह कहा गया है कि उस पृथ्वी व आकाश में मध्यवर्ती मार्गों द्वारा यात्रा करके मैं खुद धन प्राप्त करूँ। यह विमान द्वारा आकाश मार्ग का निर्देशक है। इस प्रकार वेदों में विमान विज्ञान का वर्णन अनेकों मंत्रों में बीजरूप में मिलता है।

**४. विद्युत से चलने वाले रथों का वर्णन :-** वेदों में अनेकों स्थानों पर विद्युत से चलने

वाले रथों का वर्णन है - ऋग्वेद के ४/३६/१ मंत्र में

*अनश्वा जानो अनभीशु रुक्ष्यो रथास्त्रि चक्रः परिवर्तने रजः तथा*
*तक्षन्न सत्याम्य सुखं रथं - ऋ० १/२०/३*

मंत्र से स्पष्ट है कि न घोड़े हैं न रश्मियां न लगामें किन्तु यह जल, स्थल व आकाश तीनों में घूमने वाला है तथा क्षेत्र परिवर्तन कर सकता है, जल स्थल व आकाश में जब चाहें चल सकता है, ऐसे अद्‌भुत यान का अभी तक आविष्कार नहीं हुआ है। यह रथ ही विद्युत से चलने वाला है।

**५. सागर में चलने वाले पोतों का वर्णन :-**

*वेदा यो वीनां पद मन्तरिक्षेण पतताम्।*
*वेद नावः समुद्रियः। ऋ० १/२५/६*

इस मंत्र में पक्षियों की भांति उड़ने वाले विमानों व सागर में चलने वाले पोतों की गति को जानने वाला ही श्रेष्ठ विमान है। इस प्रकार बीज रूप में सागर में चलने वाले पोतों व विमानों को इस मंत्र में स्पष्ट किया है।

**६. वेदों में पनडुब्बियों का वर्णन :-** ऋग्वेद के ६/५८/६ तथा ऋ० ६६/१४/१ में परि प्रासिरायदत्र कविः सिन्धोरूर्मावधिश्रितः व कारं विभ्रत पुरूस्पृहम् अर्थात् समुद्र में रहने वाले कान्तिदर्शी, ज्ञानी, शिल्पी, समुद्र में पनडुब्बियों को सर्वत्र चलाता है। उपरोक्त मंत्रों में सूक्ष्म रूप में पनडुब्बियों का वर्णन है।

**७. वेदों में ज्योतिष विज्ञान :-** ज्योतिष विज्ञान वेदांग है, इसका मूल ही वेद है। सूर्य सिद्धान्त के अनुसार ज्योतिष एक श्रेष्ठ विज्ञान है। वेदांगमग्रमयखिल ज्योतिषां गतिकारणं अर्थात् वेदांग के कारण नक्षत्रों व सूर्यादि की गति का ज्ञान होता है। सुपुर्म्णाः सूर्य राश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्व यजु० १८/४० में चन्द्रमा के सूर्य की रश्मि से प्रकाशित होने का प्रतिपादन है। इसके अतिरिक्त अथर्व० १६/७/१ व ऋग्वेद ११/८४/१५ मंत्र में भी ज्योतिष विज्ञान का वर्णन है। अथर्ववेद में २७ नक्षत्रों का वर्णन है। पाणिनी ने भी संवत्सर मुहूर्त व निर्मित शब्द का जगह-जगह उल्लेख किया है।

प्राचीन काल में वेदों के आधार पर ही महीनों के नाम भी प्रचलित थे - जैसे मधु (चैत), माधव (वैशाख), शुचः (ज्येष्ठ), शीच (आषाढ़), नमः (श्रावण), नमस्य (भादों), सहः (अगहन), सहस्य (पौष), तपः (माघ), तपस्य (फाल्गुन) आदि थे। महान ज्योतिषी आर्य भट्ट वराहमिहिर तथा भास्कराचार्य ने मास के नामों को नक्षत्र के नामों पर निर्धारित किया था। इस प्रकार सम्पूर्ण ज्योतिष विज्ञान वेदों पर आधारित है। इसी विज्ञान पर ही सृष्टि गति निर्धारित की जा रही है, यह विज्ञान संस्कृत ज्ञान के बिना संभव नहीं है।

**८. वेदों में आयुर्वेद विज्ञान :-** आयुर्वेद के सुश्रुत सूत्रस्थान अ० १० में लिखा है - इह खल्वायुर्वेदो नाम यदुपाङ्ढमथर्व वेदस्य" अर्थात् आयुर्वेद अथर्ववेद का उपांग है। अथर्ववेद के अतिरिक्त ऋग्वेद के १०/९७, १०/१६१, १०/१६२, १०/१८६ तथा यजुर्वेद में ६/२२, १२/९६ आदि मंत्रों में सूक्त रूप में आयुर्वेद का वर्णन है। इसी प्रकार वनस्पति विज्ञान यजुर्वेद के ४/१०, १/६८, १/७१, १०/३२ अध्यायों के मन्त्रों में उल्लिखित है।

सम्पूर्ण वनौषधि व वनस्पति विज्ञान वेदों की देन है जो संस्कृत भाषा में विद्यमान है।

**६. वेदों में भूगर्भ विज्ञान :-** भूगर्भ विज्ञान का मूल भी वेदों में विद्यमान है। इस बात को महाराष्ट्र के श्री नारायण भगवानी राव पारवी ने अपनी पुस्तक The Vedic Father of Geology में पूर्णतया स्पष्ट किया है। वेदों में अनेक मंत्र इस प्रकार के उपलब्ध हैं जैसे - यः पृथिवी व्यथमाना महं हद्र यः पर्वतान प्रकुपिता अरम्णत ऋ० ५/१२/२ तथा सः प्राचीनाम पर्वमान अहंहदोजसाङधराचीन मकृणोदयामयः ऋ० २/१७/५ आदि मंत्रों में इस विषय का दिशाबोध किया गया है।

उपर्युक्त से स्पष्ट है कि वेदों में विज्ञान है जो संस्कृत भाषा में विद्यमान है जिसको जानने-समझने के लिए संस्कृत को समझना व पढ़ना आवश्यक है।

**संस्कृत भारतीयता की प्राण है :-** भारतीय संस्कृति की प्राण संस्कृत है। भारतीय संस्कृति से सम्बन्धित वेद, उपनिषद, गीता, रामायण, ब्राह्मण ग्रन्थ, आयुर्वेद, ज्योतिष, व्याकरण, निरुक्त, शतपथ सभी संस्कृत में ही है। इस देश का सम्पूर्ण विज्ञान, जीवनशैली, योग आदि संस्कृत भाषा में ही विद्यमान है। बिना संस्कृत के भारतीय दर्शन को न पढ़ा, न समझा जा सकता है।

**आधुनिक परिप्रेक्ष्य में संस्कृत :-** विश्व स्तर पर संस्कृत का महत्व बढ़ रहा है। अरबी फारसी, जर्मनी, फ्रेंच, रशियन तथा भारत की सभी प्रान्तीय भाषाओं का उद्भव संस्कृत से है। संस्कृत से ही इन भाषाओं के ज्ञान-विज्ञान व साहित्य का अध्ययन किया जा सकता है। आज जितने भी चिकित्सा विज्ञान के आविष्कार हो रहे हैं, उनका मूल आधार वेद है जिसकी भाषा संस्कृत में निहित है। वैदिक मंत्रों से गम्भीर रोगों के इलाज पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने पहल की है। सोलर थैरेपी, रेडियो थैरेपी जैसी आधुनिक पद्धतियाँ भी ग्रह रश्मि चिकित्सा पर आधारित है। प्राणायाम के मंत्रों से ब्लडप्रेशर को नियंत्रित करने का प्रयोग किया गया है। गायत्री मंत्र से एकाग्रता का भी सफल प्रयोग किया गया है। वेद मंत्रों के सस्वर पाठ से हृदयाघात की सफल चिकित्सा, भूमण्डलीय नक्षत्र तारों का ज्ञान, आयुर्वेद में वनस्पति विज्ञान, अणु बम का निर्माण, सेना में प्रयुक्त होने वाले अस्त्र-शस्त्र का निर्माण व प्रयोग, वायुमण्डल की गैसों की खोज व प्रयोग, वैदिक गणित के द्वारा सरलता से गणितीय शिक्षा, वैज्ञानिकों द्वारा चन्द्रमा पर जाना व जीवन की तलाश करना, इन सबके मूल में वेद है जो संस्कृत भाषा के द्वारा ही सम्भव है।

**कम्प्यूटर के लिए उपयुक्त भाषा संस्कृत :-** आई० आई० टी० के वैज्ञानिकों ने यह प्रमाणित कर दिया है कि संस्कृत भाषा कम्प्यूटर के लिए सर्वोत्तम भाषा है। आज दुनिया कम्प्यूटर की भाषा तैयार करने के लिए संस्कृत की ओर देख रही है। सूचना और प्रौद्योगिकी मंत्रालय भारत सरकार ने सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी में कम्प्यूटर पर इस्तेमाल लायक संस्कृत का कारपोरा (शब्द संग्रह) तैयार कराया है। यह प्रोजेक्ट जर्मनी की मदद से पद्म भूषण पं० विद्यानिवास मिश्र के नेतृत्व में १२ वर्ष पहले तैयार किया गया था। जैसे यदि 'यह पुस्तक है' के स्थान पर यदि "है यह पुस्तक" तो उसका भाव विन्यास बदल जायेगा परन्तु यदि इसे संस्कृत में 'सः गृहम गच्छति' को 'गच्छति गृहं सः' और 'गृहं सः गच्छति' को किसी में भी बात की जाये तो भाव विन्यास का अर्थ नहीं बदलेगा। संस्कृत भाषा

की यही ताकत उसे कम्प्यूटर की पूर्णता की ओर ले जा रही है। कम्प्यूटर गणितीय बाइनरी प्रणाली पर आधारित है, जिस प्रकार गणित में तीन व पांच तथा पांच व तीन जोड़ने पर एक ही उत्तर आयेगा, उसी प्रकार संस्कृत में कर्त्ता व क्रिया के उलट फेर से भाषा पर प्रभाव नहीं पड़ता। इसलिए उसे पूर्ण भाषा कहा जाता है। जर्मन के वैज्ञानिकों ने संस्कृत को समर्थ भाषा के रूप में विकसित किया है। नासा के वैज्ञानिक रिग ब्रिग्स ने भी इसी दिशा में महत्वपूर्ण अनुसंधान कर संस्कृत भाषा की सराहना की है। इण्डियन हैरिटेज ग्रुप ने पाणिनी के व्याकरण की सी० डी० तैयार की है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में भी संस्कृत के लिए कम्यूनिकेशन एण्ड लैंग्वेज के नाम से पूरा एक विभाग विकसित किया है।

**देश में संस्कृत का प्रचार-प्रसार :-** संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार एवं जन सामान्य तक पहुँचे, इसके लिए संस्कृत भारती संस्था पूरे देश में काम कर रही है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सहयोग से संस्कृत संस्थान दिल्ली द्वारा संस्कृत भारती ने हजारों की संख्या में संस्कृत सम्भाषण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें २००० पूर्णकालीन संस्कृत प्रशिक्षित युवकों को लगाया गया है। परिणामस्वरूप लाखों की संख्या में भारतीयों ने संस्कृत संभाषण प्रारम्भ किया है और कर रहे हैं। राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान दिल्ली ने वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री के सम्पादक में व्यवहारावतरणी, व्यवहारावगाहनी, काव्यावगाहनी, व्यत्पादिनी नामक पाँच दीक्षाओं के लिए पाठ्यक्रम तैयार किये गये हैं। प्रत्येक पाठ्यक्रम का समय तीन माह निश्चित किया गया है। इनसे संस्कृत सम्भाषण, पठन, लेखन का व्यावहारिक ज्ञान हो जाता है।

संस्कृत भारती ने विज्ञान विषयों जैसे भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित आदि को संस्कृत में अनुवाद करना प्रारम्भ कर दिया है, जिससे विज्ञान विषयों को संस्कृत अध्येता सरलता से समझ सकें तथा वैदिक वाङ्गमय में जहाँ-जहाँ विज्ञान विषयक प्रसंग है, उसका सम्यक् विश्लेषण हो सके।

इस प्रकार आधुनिक परिवेश में संस्कृत को जनभाषा के साथ वैज्ञानिकों के लिये उपयुक्त बनाया जा सके और आम जनता को संस्कृत की सरलता का बोध हो सके। राजा भोज व महर्षि चाणक्य के समय में संस्कृत जनभाषा के रूप में प्रचलित थी।

**भारतीय संविधान में संस्कृत :-** भारतीय संविधान के भाषा अनुच्छेद में १७ भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है जिसमें संस्कृत भाषा को शासकीय भाषा के रूप में पूरे अधिकार प्राप्त हैं। अंग्रेजी को केवल कामकाज के रूप में ही मान्यता प्रदान की गई है। मान्यता प्राप्त भाषाओं में हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में दर्जा दिया गया है तथा अन्य भाषाओं के लिए भी सरकार बाध्य है कि यदि कोई भी नागरिक किसी भी मान्यता प्राप्त भाषा में अपना प्रतिवेदन या कोई भी लेखन कार्य करना चाहे तो उसी भाषा में उसका उत्तर देना होगा या उस भाषा के प्रतिवेदन को स्वीकार करना होगा।

संविधान ने संस्कृत को भाषा के रूप में पूर्णतया मान्य माना है तथा प्रत्येक भारतीय नागरिक को संस्कृत पढ़ने-लिखने, बोलने तथा सरकारी तंत्र में प्रयोग करने के लिए स्वतंत्रतापूर्वक अधिकार प्रदान किये हैं। भारतीय मुद्रा में भी संस्कृत सहित १५ भाषायें लिखी हुई है।

संस्कृत समृद्ध, भारतीय संस्कृति के अनुरूप, भारतीय संविधान में मान्य, कम्प्यूटर व विज्ञान के लिए उपयुक्त वैज्ञानिक भाषा है। वैज्ञानिक शोध करने के लिए संस्कृत का ज्ञान आवश्यक है। संस्कृत से ही भारतीय वैदिक विज्ञान, साहित्य, दर्शन आदि को समझा जा सकता है। आधुनिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में संस्कृत की परम आवश्यकता है। प्रत्येक भारतीय नागरिक, वैज्ञानिक, चिकित्सक, साहित्यकार को संस्कृत का ज्ञानं अवश्य होना चाहिए। संस्कृत बैलगाड़ी युग की भाषा नहीं अपितु वायुयान आविष्कारक की भाषा है। संस्कृत का ज्ञान पुरोहित, पण्डित एवं मात्र शिक्षक बनने के लिए नहीं अपितु वैज्ञानिक बनकर शोध करने के लिए है।

हम सब भारतीयों को चाहिए संस्कृत पढ़ें, पढ़ायें, उसका उपयोग करें तथा भारतीय होने का गौरव प्राप्त करें।

अन्त में महामहिम राज्यपाल महोदय के शब्दों ने मेरे अन्तःकरण के भावों को वेदों में विज्ञान, संस्कृत, वैज्ञानिक भाषा तथा वेदज्ञ व संस्कृतज्ञ वैज्ञानिक बन सकते हैं तथा इन विचारों को सामाजिक परिप्रेक्ष्य में स्थापित करने के लिए "वैदिक सिद्धान्तों का वैज्ञानिक चिन्तन व्याख्यान माला" को प्रारम्भ करने हेतु प्रेरित किया। ६ जनवरी २०१३ को आर्यसमाज बिहारीपुर, बरेली के साप्ताहिक सत्संग के वैज्ञानिक व्याख्यान सत्र में परिवर्तित करके सर्वप्रथम "वेद विज्ञान परिचय" विषय पर सुविख्यात पैथोलॉजिस्ट (शील हॉस्पिटल, बरेली) एवं अध्ययनशील डॉ० वेदप्रकाश शर्मा जी के सारगर्भित व्याख्यान से इस क्रम को प्रारम्भ करते हुए अर्न्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वेदविज्ञान विद्वान आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय, मूर्धन्य विद्वान प्रो० (डॉ०) ज्वलन्त कुमार शास्त्री, आचार्य विष्णु मित्र वेदार्थी जैसे विद्वानों के व्याख्यानों ने वेदों में विज्ञान को आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में लाकर "वेद विज्ञान संगोष्ठी" जो रोटरी क्लब रुहेलखण्ड के सहयोग से १३ मार्च २०१३ के सफल आयोजन से समाज को दिशा प्रदान की थी।

इसी संदर्भ में "ऋषि दर्पण" त्रैमासिक प्रगति पत्रिका को वेद विज्ञान विशेषांक के रूप में प्रकाशित करते हुए आह्लाद का अनुभव हो रहा है।

आशा ही नहीं विश्वास है कि इस प्रामाणिक सफलता के बाद वेदों में हो रहे अनुसन्धानों, शोधों का सामाजिक, व्यवहारिक वैज्ञानिक पक्ष चरमोत्कर्ष को प्राप्त हो। सुविज्ञ पाठक बन्धुओं को इस विशेषांक का लाभ अवश्य मिलेगा। प्रेरणास्रोत अर्न्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हृदय रोग विशेषज्ञ प्रधान डॉ० ओ० पी० अग्रवाल जी के आशीष स्वरूप इन आयोजनों को सफल होते अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर भी अन्य भाषाओं में भी इसका अनुवाद किया जाना है। जिससे वैदेशिक अनुसन्धानकर्त्ता वैज्ञानिक लाभ उठा सकेंगे।

अन्त में मैं आर्यसमाज बिहारीपुर के उपप्रधान डॉ० आलोक कुमार सेठ प्रवक्ता विष्णु इण्टर कॉलेज, बरेली एवं आचार्य रामदेव शास्त्री जी का हृदय से आभार व्यक्त करना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ जिन्होंने टंकण की अशुद्धियों के गुरुतर भार को सरलता एवं तन्मयता से पूर्ण किया।

*–डॉ० श्वेतकेतु शर्मा*
*सम्पादक*

# जैमिनी ऋषि और वेद

(स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती 'वेदभिक्षु', आर्यसमाज बिहारीपुर, बरेली)

(संदर्भ एवं परिचय :- आर्य जगत के मूर्धन्य वेद वेदाङ्गों के प्रकाण्ड विद्वान स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती वेदभिक्षु जी समाज को सुसंस्कृत एवं वेदानुकूल बनाने में संलग्न है। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आपके व्याख्यानों से समाज को नवीन दिशा प्राप्त हो रही है। अनेकों पुस्तकों के रचयिता स्वामी जी वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में संलग्न है। आर्य समाज बिहारीपुर द्वारा आयोजित "वैदिक सिद्धान्तों का वैज्ञानिक चिन्तन व्याख्यान माला" में आपका सारगर्भित प्रामाणिक व्याख्यान का लाभ मिल रहा है। -सम्पादक)

वेद संहिताओं को पुनः उनके गौरवशाली स्थान पर लाकर बलपूर्वक प्रतिष्ठित करने का श्रेय सर्वप्रथम नास्तिक युग के पश्चात् महर्षि जैमिनी को हैं। व्यास के शिष्य एवं गौतम के प्रशिष्य जैमिनी को ऐसा लगा कि - "वास्तविक सत्यता" इन भौतिक इन्द्रियों के द्वारा जानी नहीं जा सकती, इनकी पहुँच से वह परे है। जिस ईश्वर ने इस विचित्र विश्व की रचना की है वही इसके समस्त रहस्य का ज्ञाता सम्भव है। उसी के द्वारा दिया गया ज्ञान इसके वास्तविक रहस्यों का बोध कराने वाला हो सकता है। जिस प्रकार मैं अपने पिता का पुत्र हूँ, इस ज्ञान के लिए मेरे पिता के वचन ही निर्भ्रान्त प्रमाण हैं। दूसरे तर्क आदि मुख्य प्रमाण न होकर केवल गौण या परतः प्रमाण हो सकते हैं, वह भी तब जबकि ईश्वरीय वचनों के अनुकूल हों।

"बिरोधे अनपेक्ष्येस्यात् असति ह्यनुमानम्" जैमिनी के इस सूत्र के अनुसार यदि ईश्वर वचन के साथ अनुमान प्रमाण का विरोध हो, तर्क यदि ईश्वर के वचनों के विरुद्ध जाता हो तो उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाना चाहिए। वह केवल उसी दशा में मान्य प्रमाण होगा जब ईश्वर वचन से उसकी समानता होगी। तर्क मनुष्यकृत है, मनुष्य की शक्ति सीमित है और ज्ञान भी। पूर्ण ज्ञान तो असीम है, उसका अधिकारी मनुष्य नहीं है।

यथा - "सपर्यगाच्छुक्रमकायम ब्रणम्" मन्त्रोक्त दैवी विभूति परमेश्वर ही इस पावन ज्ञान का धारक एवं आदि स्रोत है। उस प्रभु के उस दिव्य एवं निर्भ्रान्त ज्ञान की विमल धरोहर वेद संहिताओं में ही है। "अपौरुषेया वाक्य कृतिर्वेदे" वेद संहिताओं की वाक्य रचना अमानुषी है। उन वाक्यों में ईश्वरीय दिव्यता स्पष्ट झलकती हैं। ऐसे वाक्यों की रचना मानव शक्ति से परे है। "धर्म विशेष प्रसूतात् आम्नायस्य स्वतः प्रमाणम्"। विशेष दैवी शक्ति के द्वारा उत्पन्न होने के कारण इस संहिता चतुष्टय की स्वतः ही प्रमाण्यता है। सूर्यवत् ये स्वयं प्रकाशित है। इन्हें तर्क दीप की आवश्यकता नहीं है। इनमें जो विधान है। वही मान्य है, जो नहीं है वह अन्यत्र उपलब्ध नहीं हो सकता।

अपनी विलक्षण प्रतिभा तथा पैने तर्क के वल पर महर्षि जैमिनी ने वेद संहिताओं की स्वतः प्रमाणिकता सिद्ध की+मीमांसा दर्शन की यही विशेषता है। परिणामस्वरूप वेद का

विधान मनुष्य के कर्त्तव्य बन गये, अतीन्द्रिय पदार्थों के सम्बन्ध में वेद में जो कुछ कहा गया है वही प्रमाण है। प्रत्यक्ष प्रमाण की सीमा प्रत्यक्ष भौतिक जगत तक ही सीमित है। अनुमान प्रत्यक्ष के आधार पर अवलम्बित लिंगलिंगी सम्बन्ध से दूरस्थ पदार्थों के प्रति उपकारी है। परन्तु जो वस्तु इन्द्रियों का विषय नहीं है, उसकी सिद्धि में आगम प्रमाण है, आगम ही वास्तविक ज्ञान शास्त्र है + आगम ही वेद संहिता है।

विश्व का आदिमूल दो प्रकार की रचना का अभिन्न निमित्तोपादान कारण है। एक तो यह दृश्यमान भौतिक जगत् जो पृथ्वी से आकाशपर्यन्त समस्त दंश, मशक, पशु-पक्षी, कीट-पतंग, वन-पर्वत, सर-सरिता, सागर, मानव, जीव, जन्तु, सूर्य-चन्द्रादि, ग्रह-उपग्रह, जो विद्यमान हैं। और दूसरा इसका स्वरूप बताने वाला ज्ञान समुच्चय जिसकी सहायता से यह सब जाना जाता है, वेद चतुष्टय के रूप में विद्यमान निर्भ्रान्त - ज्ञानशास्त्र - "तस्माद्वाएतस्मादात्मनः, आकाशः, सम्भूतः, आकाशाद्वायुः, वायोरग्निः अग्नेरापः, अदम्यः पृथिवी, पृथिव्या औषधयः, औषधिभ्यो अन्नम्, अन्नादरेतः, रेतसः पुरुषः सोयं पुरुष अन्नरसमयः" में वर्णित क्रमशः आत्मा से आकाश, आकाश से वायु आदि करके समस्त जगत उत्पन्न हुआ है। इसी प्रकार उसी आत्मा से "तस्माद्यज्ञात् सर्वहुताः ऋचः सामानि जज्ञिरे, छन्दासि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायतः।" उसी परम् यज्ञ पुरुष से = दिव्यात्मासे, ऋग्वेद, अथर्ववेद एवं समस्त यजुर्वेद उत्पन्न हुआ। ज्ञान का उदय या प्रकाश ब्रह्मतत्व अथवा आत्मतत्व से हुआ है। सांख्य कारिका के रचयिता ईश्वर कृष्ण ने यह स्वीकार किया है कि प्रत्यक्ष उपलब्धि सामान्य पदार्थों के लिए है, दूरस्थ पदार्थ अनुमान से जाने जाते हैं। परन्तु जिन तत्वों का ज्ञान अनुमान से भी दुर्लभ है, वह आगम (वेद) द्वारा ही सिद्ध होते हैं। "आप्तोपदेशः शब्दः" न्याय एवं वैशेषिक ने आप्तवचन (ऋषि-विद्वानों के वचनों) को भी स्वीकार किया है और इस प्रकार वेदों की महिमा पुनः एक बार सामने आई, फिर इसक विरुद्ध एक प्रतिक्रिया की लहर उठी। तात्कालिक नास्तिकों ने तीक्ष्ण तर्कों का आश्रय लेकर वैदिक धर्म और ईश्वर के विरुद्ध डंका बजा दिया। वेद पुनः शंका की कोटि में पहुँचने लगे। वेदों को मानने वाले काशी की गलियों में पुकारने लगे - "वेदान को उद्धरिष्यति" वेदों का उद्धार कौन करेगा ? इसका उत्तर देने वाला उस समय पर एक ब्राह्मण ऋषि कुमारिल भट्टाचार्य ही था। उन्होंने सब कुछ किया परन्तु पूर्ण रूपेण समर्थ न हो सके।

सदियों के बाद इस पुण्य भूमि भारत में महर्षि दयानन्द महाराज का अवतरण एक संयोग बना और उन्होंने लुप्त प्रायः वैदिक धर्म और संस्कृति का पुनरुद्धार किया। हे महर्षि दयानन्द ! तुम्हारी जय हो। तुमने सदियों की सोई हुई आर्य जाति में प्राण फूँक दिए। जाति को अपने गौरवशाली इतिहास का भान कराया और इस जाति को मोह व अज्ञान निद्रा से जगाकर खड़ा किया।

"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है" का उद्घोष देकर पुरानी खोई हुई निधि दे दी। प्राचीन महर्षियों के विलुप्त आर्ष साहित्य एवं वैदिक पथ का बोध देकर महर्षि दयानन्द ने मानव जाति पर महान उपकार किया है।

★

# वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

**(लेखिका : ब्रह्मलीन प्रकाण्ड वेद विदुषी (डॉ०) सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या)**

(प्रसंग एवं परिचय :- प्रकाण्ड वेद विदुषी एवं अर्न्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त, विश्व की प्रथम वेदाचार्या, विश्व की चतुर्थ आर्य विदुषी, ऋषि दयानन्द के बाद वेदों का प्रचार करने वाली प्रथम प्रचारिका वेदाचार्या (डॉ०) सावित्री देवी शर्मा ने वेदों के प्रचार-प्रसार में अद्भुत योगदान दिया था। पाँच विषय में आचार्य, हिन्दी-संस्कृत में एम.ए. तथा पी. -एच.डी. की उपाधि से विभूषित थीं। 'शतपथ ब्राह्मण' का भाष्य करने वाली प्रथम महिला विदुषी तथा शतपथ ब्राह्मण के प्रतीक" विशाल ग्रन्थ की रचना की थी। आपको राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय अनेक सम्मानों से अलंकृत किया जा चुका है। २६ नवम्बर २००५ में वेदों का उपदेश देते हुए वेदों व संस्कृत का सूर्य अस्ताचल की ओर सदा के लिए चल बसा। वेदों के तत्व को समाज व राष्ट्र के लिए अपनी स्मृतियाँ छोड़ गई। वेदों के सम्बन्ध में उनके विचार आलेख के रूप में प्रस्तुत है - सम्पादक)

तैत्तिरीय संहिता भाष्य भूमिका का शुभारम्भ करते हुए श्री सायणाचार्य वेदों के विषय में अपना विचार निम्नलिखित प्रसिद्ध श्लोक द्वारा प्रस्तुत करते हैं :-

*प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न विद्यते।*
*एवं विदन्ति वेदेन तस्मात् वेदस्य वेदता।।*

अर्थात् जो उपाय प्रत्यक्ष और अनुमान प्रमाण से सिद्ध न हो सके उस परोक्ष उपाय का ज्ञान जिसके द्वारा सिद्ध होता हो वही सत्य विद्याओं का प्रकाशक वेद है। "इस्ष्टप्राप्ति+अनिष्ट परिहारयोरलौकिकमुपायं योग्रंथो वेदयति स वेदः" संसार में प्रत्येक प्राणी इष्ट वस्तु की प्राप्ति और अनिष्ट का परिहार चाहता है। वेद इन दोनों विषयों का अलौकिक प्रामाणिक उपाय बताता है। "विन्दन्ति जानन्ति विद्यन्ते भवन्ति विन्दन्ति अथवा विन्दन्ते लभन्ते, विन्दन्ति विचारयन्ति सर्वे मनुष्याः सर्वाः सत्यविद्या यैर्येषु वा तथा विद्वांसश्च भवन्ति ते वेदाः। संसार के मनुष्य जिनके गम्भीर अध्ययन से सभी लौकिक पार लौकिक विद्याओं में पारंगत होता है, वही अपौरुषेय वेद है।

**मनु की दृष्टि में वेद :-** धर्म व्यवस्थापक महाराज मनु वेदोत्पत्ति के विषय में वैदिक वाङ्मय के अन्तः साक्ष्य के आधार पर अपना विचार प्रकट करते हैं।

*कर्मात्मनां च देवानां सोऽसृजत् प्राणिनां प्रभुः,*
*साध्यानां च गणं सूक्ष्मं यज्ञं चैव सनातनम्।*
*अग्नि वायुरविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्म सनातनम्,*
*दुदोह यज्ञ सिद्धध्यर्थं त्रयं ब्रह्म सनातनम्।।*

अर्थात् परमेश्वर ने कर्मशील देवों, साध्यों के सूक्ष्म समुदाय तथा वेदोक्त सनातन यज्ञ को उत्पन्न किया। जीवन यज्ञ की सफलता के लिए उस प्रभु ने अग्नि से ऋग्वेद, वायु से यजुर्वेद, सूर्य से सामवेद को प्रकट किया। इस विषय में वेदों का अन्तरंग प्रमाण भी प्रस्तुत किया जाता है :

*बृहस्पते प्रथमं वाचोअग्रे यत्प्रैतरत नामधेयंदधानाः*
*यदेषां श्रेष्ठं यदरिप्रभासीत् प्रेणातदेषां निहितं गुहाविः।*

सृष्टि के आदिकाल में सर्वप्रथम नाम सहित पदार्थों के उच्चारण की प्रेरणा ईश्वर के द्वारा ही मनुष्यों को प्राप्त हुई। इनका श्रेष्ठ पापरहित ज्ञान हृदय गुहा में निहित था। इस प्रकार भाषा सहित वेदों का ज्ञान ऋषियों के हृदय में दिव्य प्रेरणा से प्रस्फुटित हुआ। इसी आधार पर ज्ञान और भाषा का नित्य सम्बन्ध सभी प्राचीन भाषा वैज्ञानिक स्वीकार करते हैं।

इस विशाल ब्रह्माण्ड को देखकर एक अटल सिद्धान्त समझ में आता है "यत्यिण्डे तद् ब्रह्माण्डे" दार्शनिकों की दृष्टि में हमारा लघु पिण्ड शरीर और विस्तृत ब्रह्माण्ड एक रूप है। यद्यपि दोनों में आकार, पदार्थ, देश काल की दृष्टि से आकाश पाताल का अन्तर स्पष्ट दिख रहा है। पुरुष सूक्त में इन दोनों के सादृश्य का वर्णन प्रतीकात्मक दृष्टि से किया गया है :-

*चन्द्रमा मनसोजातश्चक्षोः सूर्योऽजायत।*
*मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद् वायुरजायत।।*
*नाश्या आसीदन्तरिक्षं शीष्णों द्यौः समवर्तत्।*
*पद्भ्यां भूमिः दिशः श्रोत्रात् तथा लोकानकल्पयत्।।*

पुरुष सूक्त ८/४/१६

प्रजापति के मन से चन्द्रमा, चक्षु से सूर्य, मुख से इन्द्र और अग्नि तथा प्राण से वायु प्रकट हुआ। नाभि से अन्तरिक्ष, मस्तिष्क से द्युलोक, पैरों से भूमि, श्रोत से दिशायें और लोक उत्पन्न हुये।

इस वर्णन में ब्रह्माण्ड और पिण्ड का ऐक्य कहलाता है। इस लघुकाय के सूक्ष्म नेत्रों को ब्रह्माण्ड के सूर्य से अक्षय ज्योति, चन्द्रमा के आह्लादक गुणों से हार्दिक भाव, सौन्दर्य, ज्योतिर्मय द्युलोक से विज्ञान रश्मियाँ सतत प्रवाहित हो रही हैं। इसी प्रकार बौद्धिक धर्म, ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य, प्रेरणा स्रोत हमारे सत्य सनातन वेद ही हैं। इस वैदिक प्रकाश के बिना सकल विश्व अन्धकारमय है।

कविवर जयशंकर प्रसाद ने सार्वभौम वैदिक सन्देश को विश्व की विज्ञानमयी प्रेरणा बताते हुए अपने काव्यात्मक मनोभाव इस प्रकार प्रकट किये हैं :-

*हिमालय के आंगन में जिसे प्रथम किरणों का दे उपहार।*
*उषा ने हँस अभिनन्दन किया और पहनाया हीरक हार।।*
*जगे हम लगे ज़गाने विश्व लोक में फैला वेदालोक।*
*सप्तस्वर सप्त सिन्धु में उठे अखिल संस्कृति हो उठी अशोक।।*

वस्तुतः वेद ईश्वरीय ज्ञान की सार्वदेशिक सार्वकालिक अनुपम कृति है। "सर्व वेदात् प्रसिध्यति" इसके मनन चिन्तन एवं आचरण द्वारा ही मानव मात्र का कल्याण सम्भव है।

**ईश्वपरोसना से दुःख निवारण :-** नहि तेषामाचन नाध्वसु वारेणेषु (यजुर्वेद ३/३२) ईश्वरभक्तों के जीवन पथ में, भयंकर संग्रामों में तथा आवास ग्रहों में भी पाप समर्थक दुष्ट पुरुष क्लेश देने में समर्थ नहीं हो सकता। परमेश्वर की सुखद छत्रछाया में उसका अनन्य भक्त अकुतोभय होकर सानन्द बिहार करता है। कण्टकाकीर्ण लोकयात्रा में परम प्रभु का सम्बल उसे त्रिविध दुःखों से मुक्ति प्रदान करता है। अतः निरुक्तकार ने सर्वसुखदायक

परमेश्वर का वर्णन ही वेदों का मुख्य विषय बताया है - ग्रहाभाम्याद् देवताया एक एवात्मा बहुधा स्तूयते। एकस्यात्मनोऽन्ये देवाः प्रत्यगानि भवन्ति।"

उस महान ऐश्वर्यशाली महादेव के मुख्य वर्णन के साथ अन्य दिव्यशक्तियों का भी प्राणियों के हितार्थ अनेक नामों से विवेचन प्रस्तुत किया गया है। किन्तु ईश्वर के विषय में वेद की सार्वभौम प्रेरणा ही मानवीय क्लेशों का समूल निवारण कर सकती है। "तमेव विदित्वातिमृत्युमेतिनान्यः पन्था विद्यतेऽय नाथ"। अर्थात् आदित्य के समान तेजस्वी उस प्रभु को भली प्रकार जानकर ही सांसारिक दुख एवं मृत्यु भय से मोक्ष सम्भव है इससे भिन्न अन्य कोई मार्ग अभीष्टलक्ष्य को प्राप्त कराने में समर्थ नहीं है।

**वेदों में आत्म ज्ञान :-**

*वायुरनिलममृतमथेदंभस्मान्त शरीरम्।*
*ओ३म् क्रतोस्मर। क्लिवेस्मराकृत स्मर।*

प्रस्तुत मंत्र में आत्म स्वरूप स्वरूप की समीक्षा कितने प्रभावोत्पादक शब्दों में व्यक्त की गई है। प्रत्येक विशेषणजीवात्मा की यथार्थता का प्रकाशक है।

वायु-वा गति गन्धनयो। धातु से वायु शब्द निष्पन्न होता है जिसका अर्थ है गति और गन्ध। यह शरीरधारी जीवात्मा विभिन्न योनियों में आवागमन करने से गतिमान कहा जाता है और अनेक शुभाशुभ कर्मों से यश अपयश प्राप्त करने के कारण गन्धनशील है। यशः सुरभि और अपयश को दुर्गन्ध कहा गया है।

अनिलम् - न इला पार्थिवंशो विद्यते यस्मिन् + तत् जिसमें पार्थिव अंश नहीं है केवल सच्चिन्मय है, वही अनिल आत्मा है।

अमृतम् - अमृतत्व आत्मा की तीसरी विशेषता है। इस अमरत्व का ज्ञान ही भारतीय संस्कृति की आशावादिता का सशक्त प्राण है।

इसी प्रकार अनेक वेद मंत्र आत्म ज्ञान विहीन पाश्चात्य जगत् को आध्यात्मिक चेतना का दुर्लभ सन्देश आदि काल से देते रहे हैं। निम्नांकित मंत्र आत्मा के विषय में विचारणीय है - अपश्यं गोपामनिपद्यमानम् (ऋग्वेद २/३/२० :: द्वा सुपर्णा सयुजासखाया ऋक् २/३/१७) "अश्वत्थे वोनिषदनां पर्णे वो वसतिष्कृता (यजुर्वेद ३५/४) विस्तार भय से सूची मात्र प्रस्तुत है।

**वेदों का दार्शनिक चिन्तन :-** गणित ज्योतिष आयुर्वेदादि विषयों की भांति दार्शनिक विचारधारा का आदि स्रोत वेद है। इस भौतिक प्रपंच को देखकर तत्वान्मेषी महर्षियों ने हृदय में जो विविध प्रश्न उत्पन्न हो सकते हैं वे प्रश्नोत्तर रूप में यत्र-तत्र वेदों में बिखरे पड़े हैं। सृष्टि से पूर्व जगत् की अवस्था इयं विसष्टिर्यत आवभूव यदि वा दधे यदि वा न (ऋग्वेद ८/७/२७) यो अस्थाध्यक्षः परमे व्योमन् सो अगंवेद यदि वा न वेद।

सृष्टि रचना से सम्बद्ध ऐसे अनेक प्रश्न वेदों में विद्यमान हैं यह विस्मय जनक ब्रह्माण्ड कैसे रचा गया ? इसका अध्यक्ष कौन है ? वह कौन है जो स्वयं अस्थि रहित होकर भी अस्थिमय स्थूल शरीर में व्याप्त है ? इन कौतूहलपूर्ण प्रश्नों का समाधान भी वेद स्वयं करते हैं - "विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वस्तपात्" (यजु० १७/१९) अर्थात् उस परमेश्वर के नेत्र, मुख, भुजायें आदि इस सृष्टि के चारों ओर हैं। सर्वव्यापक होने से ही

वह चेतन महाप्राण प्रभु कारण रूप प्रकृति को गति दे रहा है। उसी देव ने पञ्च भौतिक परमाणुओं से तीनों लोकों की रचना की। सृष्टि से पूर्व तो सत् असत् भी नहीं था। न अपार नभ न परमाणु विस्तार। न मृत्यु थी न अमरता। बिना वायु के ही एक सूक्ष्मातिसूक्ष्म परम आत्मा श्वास ले रहा था। कितना गम्भीर जल था। "न मृत्युरासीद मृतं न तर्हि न रात्र्याअहन आसीत् प्रकेतः" (ऋग्वेद ८/७/१७) यह पूर्ण मंत्र सृष्टि से पूर्व महाप्रलय आदि का वर्णन करता है। इस प्रकार दार्शनिक तत्वों व सरल स्वाभाविक चित्रण वेदों की अपनी विशेषता है। सकल विश्व में त्रेतवाद का दर्शन कराना ही वैदिक संस्कृति की विशुद्ध दार्शनिकता पर प्रकाश डालता है।

**अतुल राष्ट्र की प्रेरिका श्रुति :-**

*यत्र ब्रह्म च क्षत्रञ्च सम्यञ्चौ चरतः सह।*
*तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना।।* (यजु० २०/२५)

अर्थात् जहाँ ब्रह्म शक्ति और क्षात्र शक्ति से परस्पर संघटित होकर प्रशासक राष्ट्र कल्याण में प्रवृत्त होते हैं उसी देश में ऐश्वर्यवान, इन्द्र का साम्राज्य होता है। वस्तुतः वेदशास्त्रवित् राजन्य ही ब्रह्मवेत्ता ब्राह्मण की सहायता से सेनापत्य, राज्यदंण्डने तृत्व और सर्वलोकाधिपत्य को प्राप्त कर लेता है।

**वेदों में राजनीति :-** इसी प्रकार राजधर्म विषय सभी सिद्धांम् लोकानुरञ्जनकारी राजा का सुयोतों मंत्रिमंडल अथवा संन्यासियों द्वारा चयन, प्रजारक्षण, यथोचित दण्ड विधान द्वारा स्वच्छ प्रशासन, विविध अस्त्र शस्त्रों का निर्माण, बहुविधशिल्पकला, राज्यसमृद्धि हेतु वैज्ञानिक आविष्कारों का प्राविधान आदि पर विस्तृत व्याख्यान वेदों में उपलब्ध होते हैं। विश्व कल्याण के लिए सभी राजनेताओं को वेद की आदर्श राजनीति अवश्य अनुकरणीय है।

**वेदों में विज्ञान :-**

*विलक्षणअनश्वरथ अनश्वोजातो अनभीशुरुक्थ्यो रथस्त्रिचक्रः परिवर्तते रजः।*
*महत्तद्वो देव्यस्य प्रवाचन द्यामृभवः पृथिवीं यच्च पुष्यथः।।* (ऋक० ३/७/६)

अर्थात् तीन पहियों वाला अश्वों के बिना चलने वाला यह रथ अन्तरिक्ष तक उड़ सकता है। यह विद्वान वैज्ञानिकों का प्रशंसनीय कर्म है।

*विद्युत-रथ आविधुन्मध्दिः मरुतः स्वर्कैरथेभि यात।*
*सप्तचक्रम विमान-सोभायूष्णा रजसोविमनं सप्तचक्रं रथमविश्वामिन्वम्।*

सोम और पूषण की शक्ति से चलने वाला सप्तचक्र विमान आधुनिक वैज्ञानिकों द्वारा परीक्षण करने योग्य है।

**सूर्य रश्मियों से रोग निवारण :-** चिकित्सा विज्ञान-उद्यन्नादित्यः क्रमीन् हन्तु निम्रोचन् हन्तु रश्मिभिः (अथर्व० २/६/३२)

अथर्ववेद में जल चिकित्सा, श्वेत कुष्ठ चिकित्सा, मणिविज्ञान, जड़ी बूटी, संजीवनी बूटी, सूर्य किरण विज्ञान, गणित विज्ञान, नक्षत्र विद्या आदि विषयों का वैज्ञानिक वर्णन है।

अतः स्पष्ट है कि वेद मानव जीवन के शाश्वत प्रेरणास्रोत है। विभिन्न वर्गों में विभक्त आज मानव समाज को वैदिक संविधान ही एकता के सूत्र में बांध सकता है। "नानन्यः पन्था विद्यतेऽयनाय"। ★

# ज्ञान-विज्ञान का मूल वेद

**(प्रो० ज्वलन्त कुमार शास्त्री, प्रकाण्ड विद्वान, अमेठी)**

(प्रसंग एवं परिचय - राष्ट्रीय अर्न्तराष्ट्रीय वेद वेदाङ्गों के प्रकाण्ड विद्वान आचार्य प्रो० (डॉ०) ज्वलन्त कुमार शास्त्री आर्य जगत के ही नहीं अपितु जहाँ वेदों की चर्चा भी होती है वहाँ शोध प्रमाण के रूप में जाने जाते हैं। राजा रणञ्जय सिंह महाविद्यालय अमेठी में प्रोफेसर एवं संस्कृत विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यरत है, वेद, दर्शन, उपनिषदों पर अनेकों प्रमाणिक ग्रन्थों के रचयिता है। आर्यसमाज बिहारीपुर बरेली के द्वारा "वैदिक सिद्धान्तों का वैज्ञानिक चिन्तन" व्याख्यान माला के परिप्रेक्ष्य में रोटरी क्लब रोहिलखण्ड के सहयोग से आयोजित १३ मार्च २०१३ रोटरी भवन बरेली में "वेदविज्ञान संगोष्ठी" में विशिष्ट अतिथि व वक्ता के रूप में गौरवान्वित किया था। इस अवसर पर आपको आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र स्मृति देववाणी शोध व विकास पीठ दिल्ली के द्वारा वेद श्री सम्मान से अलंकृत भी किया गया था। इस अवसर पर आपके द्वारा दिये गये सारगर्भित प्रामाणिक व्याख्यान को आलेख के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है : सम्पादक)

मानवीय सभ्यता संस्कृति ज्ञान और विज्ञान का आदिस्रोत वेद है। भारतीय मनीषी अपनी सारस्वत साधना का उद्गम स्थल वेद को मानते हैं। महर्षि मनु ने सर्वज्ञानमयो हि सः (मनु० २/७) तथा वेदोऽखिलो धर्ममूलम् (मनु० २/६) कहकर भगवान् वेद को ही समस्त ज्ञान-विज्ञान का मूल स्वीकार किया है।

**अक्षर विज्ञान, भाषा विज्ञान और व्याकरण शास्त्र का मूल वेद :-** ऋग्वेद वाणी के विषय में कहता है - जन्म-जन्मान्तरों में गमनशील जीवात्मा वाणी को (शब्दों को) मन की सहायता से धारण करता है। मन के अन्दर अनभिव्यक्त उस वाणी को प्राणवायु प्रकाशित करती है। उस हितकारिणी आत्मेच्छा से जनित वाणी को ऋषि आदि मेधावीजन अध्ययन-अध्यापन से ऋत (सत्य या ज्ञान) के पद (स्थान) में भली-भाँति रक्षा करते हैं।

*पतश्रो वाचं मनसा बिभर्ति तां गन्धर्वोऽवदत् गर्भे अन्तः।*
*तां द्योतमानां स्वर्यं मनीषामृतस्य पदे कवयो निपान्ति।।*
*(ऋग्वेद १०/१७७/२)*

इसी मन्त्र के आधार पर श्लोकात्मक पाणिनीय शिक्षा में शब्दोत्पत्ति के प्रकार का सुन्दर वर्णन किया गया है -

*आत्मा बुद्ध्या समेत्यार्थान् मनो युङ्क्ते विवक्षया*
*मनः कायाग्निमाहन्ति स प्रेरयति मारुतम्।।*
*मारुतस्तूरसि चरन् मन्द्रं जनयति स्वरम्।*
*(श्लो० पा० शिक्षा ६, ७)*

अर्थात् - कहने की इच्छा से जीवात्मा अर्थों को बुद्धि से इकट्ठा कर मन को प्रेरित करता है। मन कायाग्नि (जठराग्नि) को प्रेरित करता है। मनः प्रेरित अग्नि वायु को उद्बुद्ध करके उरः स्थान की ओर उठता हुआ कण्ठबिल को प्राप्त कर गम्भीर ध्वनि (वादध्वनि) को

उत्पन्न करता है।

पाणिनि-शिक्षा में 'वर्णास्त्रिषष्टिः" "चतुःषष्टिरित्येके" कहा गया है। अर्थात् वर्णों की संख्या तिरसठ (६३) या चौंसठ (६४) है। वर्णों की ६४ संख्या का आधार चौंसठ अध्यायों वाला ऋग्वेद है। ऋग्वेद में आठ (८) अष्टक हैं और प्रत्येक अष्टक में आठ (८) अध्याय हैं। "कामशास्त्र" में "काम" की ६४ कलाओं का आधार चतुःषष्टि (६४) अध्यात्मक ऋग्वेद को माना गया है।

६३ या ६४ वर्षों का विवरण 'शिक्षा' नामक वेद में मिलता है। स्वर वर्णों का प्रद्यमतः तथा व्यंजन वर्षों का विवरण उसके बाद दिया गया है। प्रद्यमतः शुद्ध स्वर - अ, इ, उ, पुनः अन्य स्वर - ऋ, लृ, तत्पश्चात् संयुक्त स्वर - ए, ओ, ऐ, औ। इनके ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत भेद पुनः सानुनासिक और निरनुनासिक भेद बताये गये हैं। व्यंजन वर्णों का विवरण या उपस्थापन पूर्णतः वैज्ञानिक है। समग्र कण्ठ्य वर्ण ( क, ख, ग, घ, ङ) एक साथ क वर्ग काम से, समग्र तालव्य वर्ण (च, छ, ज, झ, ञ) एक साथ च वर्ग नाम से, समग्र मूर्धन्य वर्ण (ट, ठ, ड, ढ, ण) एक साथ ढ वर्ग नाम से, समग्र तालव्य वर्ण (त, थ, द, ध, न) एक साथ त वर्ग नाम से तथा समग्र ओष्ठ्य वर्ण (प, फ, व, भ, म) एक साथ प वर्ग नाम से अनुक्रमित, विनृतया अध्यापित किया जाता है। तत्पश्चात् अन्तःस्थ और ऊष्म वर्णों की प्रस्तावना है।

*ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन् देवा अधिविश्वे निषेदुः।*
*यस्तत्र वेद किमृचा करिष्यति य इतविदुस्त इमे समासते।।*
*(ऋग्वेद १/१६४/३९)*

*अक्षरेण मिमते सप्त वाणीः।। (अथर्व० ९/१०/२)*

इन मन्त्रों के आलोक में पाणिनि प्रभृति वैयाकरणों ने माहेश्वर सूत्रों में वैदिक और संस्कृत भाषा का सम्पूर्ण 'वर्ण-समाम्नाय' सन्निविष्ट किया। ज्ञातव्य है कि माहेश्वर सूत्र पाणिनि की उपज नहीं है। ये भगवान् (ऐतिहासिक) शिव या महेश्वर के उपदिष्ट सूत्र हैं, जिन्हें पाणिनि ने यथावत ग्रहण कर लिया (द्रष्टव्य - संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास' -पं० युधिष्ठिर भीमांसक)। संसार की किसी भाषा के वर्ण-समाम्नाय का ऐसा वैज्ञानिक प्रस्तवन नहीं पाया जाता। स्थान, करण और प्रयत्न के अनुसार ध्वनियों (वर्णों) को वर्गीकृत करके पाणिनि ने इन १४ (चौदह) सूत्रों में प्रस्तुत कर दिया है।

कहना न होगा कि वैदिक-संस्कृत भाषा के वर्ण-समाम्माय का ऐसा वैज्ञानिक वर्गीकरण किसी भी भाषा में नहीं पाया जाता। पाठक अंग्रेजी के वर्ण क्रम - A, B, C, D और वर्णों की २६ (छब्बीस) संख्या तथा उर्दू के अलिफ, बे, पे, ते, से तथा अक्षरों की ३८ संख्या से स्वयं तुलनात्मक अध्ययन करके उपर्युक्त निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं।

"व्याक्रियन्ते विविच्यन्ते शब्दा अनेनेति व्याकरणम्" जिस शास्त्र की सहायता से शब्दों के प्रकृति और प्रत्यय का विवेचन किया जाता है, उसे व्याकरण कहते हैं अर्थात् शब्द (word) कैसे बनता है ? उसका Root अर्थात् प्रकृति क्या है और उसमें कौन-सा प्रत्यय Suffix लगा है, इसका विवेचन व्याकरण विधा का विषय है। यजुर्वेद के एक मन्त्र में कहा गया है कि "प्रजापति ने सत्य और असत्य का, साँच और झूठ का व्याकरण किया अर्थात् विश्लेषण किया। उसने सत्य को श्रद्धा के योग्य और असत्य को अग्राह्य तथा त्याज्य घोषित किया।"

*दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापतिः।*
*अश्रद्धामनृतेऽदधात् श्रद्धां सत्ये प्रजापतिः।।*
*(यजु० १.६६)*

व्याकरण शास्त्र के तपः पूत आचार्य महर्षि पतंजलि ने व्याकरण शास्त्र का मूल वेद को बताते हुए, ऋग्वेद का एक मन्त्र उद्धृत किया है और उसकी व्याकरणपरक व्याख्या भी की है। मन्त्र है -

*चत्वारि शृंगा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।*
*त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां आ विवेश।।*
*(ऋ० ५/५८/३)*

इसका अर्थ करते हुए पतंजलि मुनि कहते हैं - एक वृषभ अर्थात् एक बैल ऐसा है जिसके चार सींग, तीन पैर, दो सिर तथा सात हाथ हैं। वह वृषभ तीन स्थानों में बँधा हुआ वार-बार बोलता है। वह बैल जिसे वैदिक संस्कृत में वृषभ कहा गया है वह और कोई नहीं, शब्द ही वृषभ है। उसे वृषभ इसलिए कहा जाता है कि वह कामनाओं की वर्षा करने वाला है। इसी शब्दरूपी वृषभ के चार सींग-नाम अर्थात् संज्ञा, आख्यात अर्थात् क्रिया, उपसर्ग और निपात अर्थात् अव्यय हैं। तीन पैर वर्तमान काल, भूतकाल और भविष्यत् काल ये तीन काल हैं। दो शिर नित्य और उरस् (हृदय) कण्ठ और शिर (मूर्धा) में बँधा हुआ है। ऐसा शब्दरूपी महादेव, मनुष्यों में प्रविष्ट है। अथर्ववेद के प्रथम मन्त्र में ही व्याकरणशास्त्र का मूल ऋषियों को दृष्टिगोचर हुआ था -

*ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः।*
*वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे।।*
*(अथर्व० १.१.१)*

इस मन्त्र का देवता वाचस्पति है अर्थात् वाणी का पति वाचस्पति परमात्मा मेरे अन्दर त्रिषप्ताः ३x७=२१ शब्दरूपों जो सु औ जस् से लेकर ङि ओस् सुप् तक सातों विभक्तियों के एकवचन, द्विवचन और बहुवचन इन तीनों सुपों से गुणा करने पर २१ शब्दरूप बनते हैं। इसी प्रकार तिप्, तस्, झि आदि १८ तिङ् प्रत्यय और अत्, वस्, आन ये तीन धातुओं के आगे आकर २१ धातु रूप बनते हैं। इन सभी शब्दरूपों और क्रियारूपों को परमात्मा मेरे अन्दर धारण करावे। "त्रिषप्ताः" अनेकार्थ वाचक भी है। सायणाचार्य ने ऋग्वेद (१.१६१. १२) के एक मन्त्र में आये 'त्रिः सप्त' शब्द का 'विविध' अर्थ किया है। अतः शतशः और सहस्त्रशः जो शब्दरूप या धातुरूप बनते हैं उस सम्पूर्ण वाणी के विस्तार का आधान वाचस्पति परमेश्वर मुझमें करें यह भी मन्त्रार्थ सम्भव है। इसीलिए लाहौर के डी.ए.वी. कॉलेज में "व्याकरण परिषद्" का प्रार्थना मन्त्र इसी मन्त्र को १९२७ ई० में नियत किया गया था। इस मन्त्र में तीन और सात शब्द पृथक्-पृथक् करने पर तीन काल, तीन वचन, तीन लिङ्ग, उरस्, कण्ठ और शिर तीन उच्चारण स्थान, ७ विभक्तियों तथा ३ और ७ का योग करने पर १० संख्या १० लकारों का भी बोधक या द्योतक बन जाता है।

भाषा विज्ञान या भाषाशास्त्र का मूल (बीज) भी वेद में ही प्राप्त होता है। भाषा की उत्पत्ति का प्राचीनतम सिद्धान्त "दिव्योत्पत्तिवाद" (Divine Theory) है। "देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति।" (ऋ० ८.१००.११) वस्तुओं के नामधेयों

को धारण करने वाली भाषा को बृहस्पति ने सर्वप्रथम प्रेरित (प्रदान) किया "बृहस्पतेः प्रथमं वाचो अग्रं यत् प्रैरत नामधेयं दधानाः" (ऋ० १०.७१.१)। ऋग्वेद के "वागाम्भृणी सूक्त' (१०.१२५) में वाग्देवी कहती है -

*अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः।*
*यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम्।।*

अर्थात् वाक् तत्त्व या भाषा ही वह दिव्य ज्योति है जो मानव को ऋषि, देवता या विद्वान् बनाती है।

भाषा के संस्कार और परिष्कार के सम्बन्ध में ऋग्वेद का वचन है - जैसे चलनी से सत्तू को छानकर स्वच्छ किया जाता है उसी प्रकार विचारशील पुरुष अपने मन या प्रज्ञान की चलनी से वाणी को छानकर पावन बनाते हैं -

*सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत।*
*अत्रा सखायः सख्यानि जानते भद्रैयां लक्ष्मीर्निहिताऽधिवाचि।।*

वाणी की गूढ़ क्षमता के सम्बन्ध में ऋग्वेद का उद्घोष है - मूर्ख व्यक्ति वाणी को देखता हुआ भी नहीं देख पाता है और सुनता हुआ भी नहीं सुन पाता है किन्तु वही वाणी सरस्वती के समाराधक सुविज्ञ के सामने अपने रहस्य को उसी प्रकार प्रकट कर देती है, जिस प्रकार प्रेम में पत्नी अपने पति के समक्ष अपना अनावृत सौन्दर्य समर्पित करती है -

*उत त्वः पश्यन्न ददर्श वाचमुत त्वः शृण्वन्न शृणोत्येनाम्।*
*उतो त्वस्मै तन्वं विसस्रे जायेव पत्य उशती सुवासाः।।*

**काव्य-सौन्दर्य तथा ललित कलाओं का मूल वेद :-** प्रसिद्ध काव्यशास्त्री आचार्य मम्मट कहते हैं - "नवरसरुचिरां निर्मितिमादधती भारती कवेर्जयति" अर्थात् नवरसों के योग से मनोहारिणी काव्य सृष्टि की रचना करने वाली कवि की भारती अर्थात् वाणी की जय हो। विश्व की सैकड़ों भाषाओं में काव्य रचनाएँ होती हैं। इनके रचनाकार कविगण किस विश्वकवि के काव्य से प्रेरणा लेते हैं ? कवियों का कवि, आदिकवि कौन हैं ? इसका उत्तर भगवती श्रुति स्वयं देती है - "पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति" (अथर्व० १०.८.३२) अर्थात् प्रजापति कवि का अमर अजर काव्य देखो जो कभी जीर्ण नहीं होता और न कभी समाप्त होता है। परमात्मा का 'दृश्य काव्य' यह संसार है और 'श्रव्य काव्य' भगवान वेद हैं। श्रव्यकाव्य वेदों से प्रेरणा लेकर और 'दृश्य काव्य' इस जगत् के उपादानों को ही सामग्री बनाकर लौकिक कवि अपने काव्य का निर्माण करता है। वेद सभी सत्य विद्याओं का मूल है अतः काव्य शास्त्र और काव्य ग्रन्थों का मूल भी वेद है। ऋग्वेद की रचना शैली में उत्कृष्ट कवित्व का दर्शन होता है। उषा देवी से सम्बन्धित ऋचाएँ मनोरम कल्पना, श्रृंगार और सौन्दर्य का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं - "द्युलोक की कन्या उषा प्रकाश से जगमगाती हुई आ गई है। वह अन्धेरे को हटाती हुई अपने शुभ्र स्वरूप को इस प्रकार प्रकट कर रही है जैसे कोई सुन्दर रमणी सरोवर से स्नान करके बाहर निकली हो।"

*एषा शुभ्रा न तन्वो विदानोर्ध्वेव स्नाती दृशये नो अस्थात्।*
*अप द्वेषो बाधमाना तमांस्युषा दिवो दुहिता ज्योतिषागात्।।*
*(ऋ० ५/८०/५)*

ऋग्वेद के नदी सूक्त में भाषा का प्रवाह, बलशालिता, गत्यात्मकता और अर्थ सौन्दर्य सभी कुछ मनोरम है -

"ये उन्मुक्त होकर बहती नदियाँ, आनन्द से उच्छलित प्रमदाओं की भाँति, अठखेलियाँ करती हुई आगे बढ़ रही हैं। ये सरिताएँ क्या-क्या कर रही हैं, किन-किन पत्थरों को तोड़कर आगे बढ़ रही हैं, यह उन्हीं से पूछो।"

*एता अर्षन्त्यलला भवन्तीर्ऋतावरीरिव संक्रोशमानाः।*
*एता वि पृच्छ किमिदं भनन्ति कमापो अद्रिं परिधिं रुजन्ति।।*

(ऋ० ४/१८/६)

प्रो० राधावल्लभ त्रिपाठी के शब्दों में - "कहीं ओजस्वी और स्फुरित होती हुई पदावली तो कहीं अतिशय कोमल और मसृण शब्द विन्यास" - इस प्रकार सुकुमार और विचित्र दोनों काव्यमार्गों पर सहजगति से ऋग्वेद के कवि अग्रसर होते हैं। जीवन में माधुर्य की कामना करते हुए ऋषि अपनी वाणी में माधुर्य का अवतरण कर देते हैं -

*मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता।।*
*मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।।*
*मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।*

(ऋ० १/९०/७,६,८)

इस प्रकार वेदों में भाव सौन्दर्य, अर्थगाम्भीर्य, उच्च कल्पनाएँ, रस, छन्द, अलंकार आदि सभी तत्त्वों का सुन्दर और प्रचुर समावेश पाया जाता है। महामुनि भरत ने स्वीकार किया है कि चारों वेदों से नाट्य शास्त्र की उत्पत्ति हुई है -

*जग्राह पाठ्यमृग्वेदात् सामभ्यो गीतमेव च।*
*यजुर्वेदादभिनयान् रसान् आथर्वणादपि।।*

*-नाट्यशास्त्र १.१७*

*नाट्यवेदं ततश्चक्रे चतुर्वेदाङ्गसम्भवम्।। -नाट्यशास्त्र १.१६*

अर्थात् ऋग्वेद से पाठ्य = संवाद, कथोपकथन, यजुर्वेद से अभिनय, सामवेद से गीत-संगीत, तथा अथर्ववेद से रस के तत्वों को लेकर भरत मुनि ने नाट्य वेद या नाट्य शास्त्र की रचना की है।

ललित कलाओं का मूल भी वेद है। नृत्य गीत-संगीत और वाद्य के लिए आजकल ललित कला शब्द का प्रयोग होता है। ब्राह्मण ग्रन्थों के रचनाकाल में इसके लिए शिल्प का प्रयोग होता था -

*त्रिवृद् वै शिल्पं नृत्यं गीतं वादितमिति। -कौषीतकि ब्राह्मण २९.५*

यजुर्वेद में कहा गया है कि ऋग्वेद और सामवेद में शिल्प विद्या अर्थात् नृत्य, संगीत और वाद्य का भी वर्णन है। 'ऋक्सामयोः शिल्पे स्थः।' (यजुर्वेद ४.९) आंगिक आधार पर अर्थात् ताल और लय पर आश्रित अंग-संचालन 'नृत्त' है किन्तु नृत्य में भावाभिनय करना होता है।

*अन्यद् भावाश्रयं नृत्यं नृत्तं ताललयाश्रयम्। -दशरूपकम्*

नृत्त सामान्यकोटि के लोगों के लिए है किन्तु नृत्य में भावाभिनय होने के कारण विशेषज्ञता आवश्यक है। नृत्य के साथ संगीत और वाद्य की भी संगति होती है। नृत्य में विविध रूप धारण करने की तुलना, मोर, गन्धर्व और अप्सराओं से की गई है - "आनृत्यतः

शिखण्डिनो गन्धर्वस्याप्सरापतेः।" (अथर्व० ४.३७.७)। ऋग्वेद में यह वर्णन मिलता है कि- खुले मैदान में कृष्णमृगों का नृत्य हुआ और उसमें गरुड़ पक्षियों ने गीत गाया –

*सुपर्णा वाचमक्रतोप द्यवि आ खरे कृष्णा इषिरा अनर्तिषुः।*

*–ऋ० १०.६४.५*

सामवेद संगीत प्रधान है। गीत या गान को साम कहते हैं। "गीतिषु सामाख्या।" संगीत के सात स्वर सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सा, नि, ध, प, म, ग, रे, सा ये षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पञ्चम, धैवत और निषाद सात स्वरों के संक्षिप्त संकेत हैं। इन सातों स्वरों का उद्गम सामवेद है। तैत्तिरीय संहिता कहती है कि देवता ऋचाओं या यजुषों में नहीं अपितु सामन् अर्थात् संगीत में ही निवास करते हैं। संगीत ही उपासना काण्ड है, जो सामवेद का विषय है अर्थात् देवत्व की प्राप्ति के लिए संगीत सहित उपासना आवश्यक है।

वेदों में विभिन्न वाद्यों का भी वर्णन है जैसे 'वीणा' अर्थात् सितार, 'तूणव' मुरली या बाँसुरी को कहते हैं, शंख, तलव, आडम्बर, वाणीची, कर्करी, सूर्मि, गर्गर, गोधा, पिंगा, वेणु, नाड़ी, वाण, आघाट, आघाटी आदि विविध वाद्यों का वर्णन वेदों में है। ढोलक या तबला के लिए 'तलब' शब्द है। बड़े ढोल को 'आडम्बर', हारमोनियम के लिए 'सूर्मि' बीन को 'कर्करी', झाँझ को 'आघाट' और मजीरा को 'आघाटी' कहते हैं।

यजुर्वेद में मन्त्र है – "महसे वीणावादम् आनन्दाय तलवम्" (यजुर्वेद ३०.२०) 'शब्दाय आडम्बराघातम्'। ऋग्वेद के 'सूर्म्यं सुषिरामिव' (ऋ० ८.३६.१२) 'वदसि कर्करिर्यथा' (ऋ० २.४३.३) मन्त्रों में सूर्मि = हारमोनियम, कर्करी = बीन का उल्लेख है। महर्षि पाणिनि की अष्टाध्यायी में मृदंग बजाने वाले को 'मार्दङ्गिक', पणव या ढोल नगाड़ा बजाने वाले को 'पाणविक' तथा दर्दुर मिट्टी के घड़े को बजाने वाला 'दार्दुरिक' कहा गया है – 'द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्' (अष्टा० २।४।२) 'सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोकसेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच्' (अष्टा० ३.१.२५) तथा 'मड्डुकझर्झरादणन्यतरस्याम्' (अष्टा० ४.४.५६)।

इन शिल्प कलाओं अथवा ललित कलाओं का प्रयोजन आत्म संस्कृति अर्थात् चारित्रिक एवं नैतिक उत्थान है। ऐतरेय ब्राह्मण (६.२७) तथा गोपथ ब्राह्मण (२.६.७) का वचन प्रमाण है – "आत्मसंस्कृतिर्वाव शिल्पानि एतैर्यजमान आत्मानं संस्कुरुते।।"

**गणित शास्त्र का मूल वेद :-** यजुर्वेद में कहा गया है कि जल के विविध रूपों का लेखा-जोखा रखने के लिए 'गणक' की सहायता ली जानी चाहिए (यादसे शाबल्यां ग्रामण्यं गणकम् (यजुर्वेद ३०/२०) 'यादस्' शब्द जलवाचक है (मिघष्टु १/१२)। ऋग्वेद (३।३६।७) 'समुद्रेण सिन्धवो यादमानाः' में 'याद्' धातु का बहने अर्थ में प्रयोग प्राप्त है। 'गणकम्' शब्द से गणितशास्त्र में निष्णात विद्वानों की सूचना प्राप्त होती है। शास्त्र के रूप में 'गणित' का प्राचीन प्रयोग 'लगध' ऋषि के 'वेदाङ्गज्योतिष' नामक ग्रन्थ में पाया जाता है – "यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा। तद्वत् वेदाङ्गशास्त्राणां गणितं मूर्ध्नि वर्त्तते।।" यजुर्वेद में ही खगोलशास्त्र (ज्योतिष) के विद्वान लिए "नक्षत्रदर्श" का प्रयोग मिलता है – "प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्शम्" (यजुर्वेद ३०/१०)। छान्दोग्य उपनिषद (७।१।२) में गणित के लिए 'राशि विद्या' तथा ज्योतिष के लिए 'नक्षत्र विद्या' नाम का प्रयोग किया गया है। यजुर्वेद में वेदी में चुनी गई ईंटों की संख्या तथा उतनी ही गायों की प्रार्थित संख्या के लिए

१ से प्रारम्भ करके सबसे बड़ी परार्ध संख्या का प्रयोग किया गया है – एक, दश, शत, सहस्र, अयुत, नियुत, प्रयुत, अर्बुद, न्यर्बुद, समुद्र, मध्य, अन्त, परार्ध तक संख्या का प्रयोग यजुर्वेद (१७।२) में है। इन संख्याओं में अयुत, नियुत, प्रयुत अर्बुद, न्यर्बुद, समुद्र, मध्य, अन्त्य और परार्ध शब्द क्रमशः दस हजार (१००००), एक लाख (१०००००), एक करोड़ (१००००००), दस करोड़ (१०००००००), एक अरब (१००००००००००), दस अरब (१०००००००००००), एक खरब (१००००००००००००) और दस खरब (१०००००००००००००००) के वाचक हैं। बाद में बौद्ध ग्रन्थ 'ललित विस्तार' (ई० पू० १०० में विरचित) में एक लाख के लिए 'लक्ष' तथा बाल्मीकि रामायण में एक करोड़ के लिए 'कोटि' शब्द के प्रयोग के कारण महान् गणित आर्यभट ने 'अर्बुद' का अर्थ दस करोड़ किया। परवर्ती गणित के आचार्य श्रीधराचार्य ने 'नियुत' के स्थान पर 'लक्ष' का प्रयोग किया। गणित की संख्या-पदावली में लक्ष तथा कोटि का प्रयोग प्रारम्भ हुआ। प्राकृत में ये शब्द 'लाख' तथा 'करोड़' के रूप में प्रयुक्त किये जाने लगे तथा 'अर्बुद' से निःसृत अरब शब्द एक अरब का वाचक बन गया। English भाषा में प्रयुक्त Lac को 'लक्ष' से तथा Crore को 'कोटि' शब्द से निःसृत माना जाता है (द्रष्टव्य - Oxford English Dictionary में सम्बन्धित शब्द)। अंग्रेजी भाषा में हजार के लिए Thousand शब्द से आगे संख्या नहीं है। आगे की संख्या मिलियन विलियन्स आदि शब्दों से प्रकट की जाती है। वेद में शून्य (०) का प्रयोग उपलब्ध है। 'शून्यैषी निर्ऋते याजगन्धोत्तिष्ठराते प्रपतत मेह रंस्थाः।' (अथर्ववेद १४।२।१९)

'शून्यैष' का प्रतिरूप ग्रीक में केन्योस् (Kenyos) शब्द प्राप्त होता है। अरबी भाषा के 'सिफ्र' शब्द के द्वारा शून्य के 'खाली' अर्थ का अरबी अनुवाद किया गया है। इस 'सिफ्र' से इंग्लिश का Zero शब्द विकसित है। पूरण अर्थ में 'म' प्रत्यय प्रचलित है। संस्कृत के 'पंचम' 'अष्टम' 'नवम' का प्रयोग हिन्दी भाषा में भी होता है। वेदों में पूरण अर्थ को प्रकट करने के लिए 'म' प्रत्यय के साथ 'थ' प्रत्यय भी प्रचलित रहा है। ऋग्वेद में 'सप्तम्' शब्द से 'थ' प्रत्यय के द्वारा 'सत्पथः' का (सरस्वती सप्तथी सिन्धुमाता - ऋग्वेद-७।३६।६) तथा काठक संहिता में (९।३१) 'पञ्चथः' का प्रयोग है। अंग्रेजी भाषा में Fifth , Sixth, Seventh आदि के प्रयोग वैदिक प्रत्यय 'थ' का स्मरण कराते हैं। 'म' प्रत्ययान्त 'पञ्चम' तथा 'सप्तम' की तुलना पल्लवी Penjum तथा फारसी के Haptum से की जा सकती है। १० की संख्या के लिए 'दश' का प्रयोग वेदों में है। यास्क ने 'दश' का निर्वचन करते हुए लिखा है - 'दश दस्ता' (निरुक्त ३।१०) अर्थात् दस नाम इसलिए है, क्योंकि इस संख्या तक संख्या लेखन के लिए अंक परिपूर्ण हो जाते हैं। इसके पश्चात् किसी भी बड़ी से बड़ी संख्या-लेखन के लिए इन्हीं अंकों की पुनरावृत्ति की जाती है। (दशन् ten is traced to be दस् to be exhausted, so called because after ten the numbers are generally only the repetitions of the previous numbers - The Etymologies of Yaska, Page 24)

यजुर्वेद के एक मन्त्र में 'एकादश', 'त्रयोदश' आदि विषम संख्याओं का क्रमशः उल्लेख प्राप्त है (यजु० १८।२४)। संस्कृत की संख्या माला प्रायः इस पद्धति का अनुसरण करके बनाई गई है। अंग्रेजी में भी Fifteen, Sixteen आदि शब्द इसी रीति से बनाये गये हैं।

नव पूर्व संख्याओं के लिए दो प्रकार के प्रयोग वेदों में मिलते हैं। प्रथम प्रकार नवविंशति, नवाशीति नवनवती शब्द २९ (उनतीस), ८९ (नवासी), ९९ (निन्यानवे) के अर्थ में आते हैं। इनमें नवासी तथा निन्यानवे की रचना नवाशीति तथा नवनवती की रीति पर आधारित है। किन्तु अंग्रेजी में Twenty Nine, Eighty Nine, Ninty Nine के प्रयोग का आधार ऋग्वेद के 'जघान नवतीर्नव (ऋग्वेद १।१८४।१३) का प्रयोग है, जहाँ दशनवगुणित संख्या पहले तथा नव का प्रयोग बाद में किया गया है। किन्तु हिन्दी में उन्नीस और उनतीस आदि शब्दों के प्रयोग का आधार दूसरा है। इस प्रकार का प्रयोग 'ऊन' शब्द के द्वारा विकसित किया गया है। वेद में पूर्ण के विपरीत न्यून अर्थ में 'ऊन' का प्रयोग प्राप्त है। इसके आधार पर एकोनविंशति (एक कम (न्यून) बीस) जैसे प्रयोग भी वेद में वर्तमान है। इसका अनुसरण करते हुए हिन्दी में उन्नीस, उन्तीस, उनतालीस, उनचास, उनसठ जैसे शब्द प्रयोग विकसित हुए हैं। इस प्रकार गणित की संख्याओं को विश्व में सर्वत्र प्रसारित करने में वेद, वैदिक और संस्कृत भाषाएं तथा भारत का योगदान सर्वविदित है। अतः अरबी विद्वानों ने अंकों में 'हिन्दसाँ' नाम देकर इसे स्पष्ट रूप से स्वीकृत किया है।

**ज्योतिष शास्त्र का मूल वेद :-** आकाश में चमकने वाले सूर्य चन्द्रमादि ग्रह, नक्षत्रादि को ज्योतिष्पुंज कहते हैं। इनका ज्ञान जिससे हो उसे ज्योतिष शास्त्र कहते हैं। विश्व में इस विद्या के प्रवर्त्तक भगवान् वेद है। ज्योतिष शास्त्र से हम काल की गणना करते हैं, किन्तु काव्य अनन्त है उसकी गणना असम्भव है। लेकिन सूर्यादि ग्रहों के माध्यम से हम मध्य से ही गणना करते हैं। ऋग्वेद के अस्यवामीय सूक्त (१।१६४) का ग्यारहवाँ मन्त्र है -

*द्वादशारं न हि तज्जराय वर्वर्ति चक्रं परि द्यामृतस्य।*
*आ पुत्रा अग्ने मिथुनासो अत्र सप्त शतानि विंशतिश्च तस्थुः।।*

*(ऋग्वेद १।१६४।११)*

इस मन्त्र में सूर्य का चक्र, उसके १२ अरें, ७२० पुत्र बताये गये हैं। यह चक्र निरन्तर घूमता रहता है, न कभी जीर्ण (बूढ़ा) होता है न कभी मरता है। ३६० दिन और ३६० रात्रियाँ ये ही ७२० होकर सूर्य के पुत्र हैं। १२ अरे बारह मास हैं।

*वेदमासो धृतव्रतो द्वादश प्रजावतः। वेदा य उपजायते।।*

*(ऋ० १।२५।८)*

इस ऋङ्मन्त्र में वर्ष के बारह (१२) मासों तथा १३वाँ अधिमास या मलवास का वर्णन है। यजुर्वेद में १३वें मास को 'अहसंस्पति' (२२।३१) कहा गया है। इसी कारण आज भी लोग इसे मलमास कहते हैं। अरब के लोग अधिमास के लिए 'वज्रमास' शब्द का प्रयोग करते हैं। चन्द्रमास और सौरमास के आधार पर चन्द्रवर्ष और सौरवर्ष के अन्तर को पाटने के लिए अधिमास का प्रयोग किया जाता है, जिससे वर्ष में ऋतुओं का हिसाब ठीक रखा जा सके। अन्यथा आषाढ़ में जाड़ा तथा माघ में वृष्टि का अनुभव होता।

ऋग्वेद के 'द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि क उ तच्चिकेत। तस्मिन्त्साकं त्रिशता न शङ्क्वोऽर्पिताः षष्टिर्नचलाचलासः' (ऋ० १।१६४।४८)। इस मन्त्र में वर्षचक्र में १२ प्रधियाँ, १२ बारह मास हैं। ३ नाभि का उल्लेख है। १२ प्रधियाँ १२ बारह मास हैं। ३ नाभियाँ - मुख्य तीन ऋतुएँ - ग्रीष्म, वर्षा, और शरद् हैं। ३६० शंकु वर्ष के ३६० दिन हैं। ज्ञातव्य है कि वर्ष के ३६० दिन चन्द्रमास के आधार पर हैं। चन्द्रमा के ३६० दिन चन्द्रमास

के आधार पर हैं। चन्द्रमा के आधार पर मास का निर्धारण आज भी पचांगों में किया जाता है। तिथियों का निर्धारण चन्द्रमा के कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष को प्रतिपद् या प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, कृष्णपक्ष (बहल दिवस के संक्षेपण बदि) की अमावस्या और शुक्ल पक्ष (शुक्ल दिवस के संक्षेपण शुदि) की पूर्णिमा के आधार पर ही तय होती है। तिथियों का नामकरण का यह आधार वैज्ञानिक है। जनवरी-फरवरी आदि महीनों के तारीख का निर्धारण का वैज्ञानिक आधार नहीं है। जनवरी, मार्च, मई, जुलाई, अगस्त, अक्टूबर और दिसम्बर में ३१ दिन और अप्रैल, जून, सितम्बर तथा नवम्बर में ३० दिन तथा फरवरी में २८ दिन तथा ४ वर्षों बाद २९ दिन के फरवरी महीने का निर्धारण कल्पित है। पूर्व में चन्द्रमा के आधार पर मास या महीना का प्रचलन रहा है। इस्लाम मतानुयायी आज भी चन्द्रमा को देखकर ईद आदि त्योहार मनाते हैं। अंग्रेजी में मास के लिए Month नाम का आधार Moon (चन्द्रमा) है। ३६० शंकु जहाँ वर्ष के ३६० दिन हैं वहाँ इस मन्त्र में वर्ष के लिए चक्र शब्द का प्रयोग यह भी बताया है कि वृत्त चक्राकार होता है और एक वृत्त में ३६० शंकु ३६० अंश (Degrees) हैं। इस मन्त्र में १२ प्रधियों से १२ राशियों का अर्थ भी लिया गया है। १२ राशियाँ (signs of zodiac) ये हैं - (१) मेष, (२) वृष, (३) मिथुन, (४) कर्क, (५) सिंह, (६) कन्या, (७) तुला, (८) वृश्चिक, (९) धनुः, (१०) मकर, (११) कुम्भ और (१२) मीन/यूनानी ज्योतिषी 'एराइज' मेष, तौरुस, वृषभ, जेमिनी, मिथुन आदि इस प्रकार के नाम रखे हैं। जापानी ज्योतिषियों ने १२ (बारह) राशियों को चूहा, साँप, मुर्गा आदि नाम रखकर इन्हें मनुष्येतर माना है। वस्तुतः ये राशियाँ ताराओं के समूह हैं, जिनको जैसी आकृति मालूम हुई, उन्होंने वही नाम रख दिया।

वर्ष के १२ बारह मास की जानकारी वेदों के आधार पर वैदिक ऋषियों को प्रारम्भ से ही थी। यूरोपीय ज्योतिष शास्त्र के सम्बन्ध में पं० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने लिखा है -

"ध्यान देने की बात है कि प्राचीन रोमवासी आरम्भ में १० महीने और ३०४ दिन का वर्ष मानते थे। १२ महीने का संवत् वहाँ पहले पहल 'राजानुमा पोपिल्स' ने (६७५ ई० पूर्व) आदि में जनवरी, फरवरी मास जोड़कर चलाया था। लेकिन दिन तब भी ३५५ ही माने जाते थे। ५वीं शती ईसा के पूर्व वहाँ चान्द्र की जगह सौर वर्ष माना जाने लगा जो ३५५ दिन का ही होता था। इस सौर वर्ष और वास्तविक सौर वर्ष के अन्तर मिटाने के लिए वहाँ अनेक प्रयत्न किये गये। यूनानियों से अधिक दिन मानने की रीति ली गई। अन्त में ४६ ई० पूर्व में जुलियस सीजर ने वर्ष का दिन-मान ३६५ निश्चित किया। जुलियस और अगस्टस के नाम पर जुलाई और अगस्त नाम रखे गये (प्राचीन लिपि माला, पृ० १९४)। जनवरी, फरवरी पागान के देवताओं के नाम पर रखे गये। जनवरी द्विमुख जानुष के नाम पर है, उसका एक मुँह दिसम्बर की ओर बन्द और दूसरा फरवरी की ओर खुला हुआ है। जनवरी-फरवरी नामक दो मास प्रारम्भ में जोड़े गये, इसके पूर्व मार्च महीना वर्ष का आरम्भिक मास था। March para प्रारम्भन का सूचक है। इसीलिए सितम्बर, अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर ये क्रमशः सातवें, आठवें, नवें और दसवें महीने थे। लेकिन अब ये व्यवहार में क्रमशः नवें, दसवें, ग्यारहवें और बारहवें महीने माने जाते हैं। अभी तक व्यवहारानुकूल नामकरण में सुधार नहीं हुआ। किन्तु वैदिक ज्योतिष शास्त्र की पद्धति प्रारम्भ से ही पूर्ण वैज्ञानिक है। ★

# वेदों में विज्ञान एक चिन्तन

(मूर्धन्य वेद विज्ञान विद्वान आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय, दिल्ली)

(परिचय एवं संदर्भ :- अन्तर्राष्ट्रीय वेद विज्ञान प्रकाण्ड विद्वान आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी (दिल्ली) आर्य जगत के ही नहीं अपितु वेदों में जहाँ विज्ञान की चर्चा होती है, वहाँ प्रमाण स्वरूप मूर्धन्य विद्वानों में आपकी गणना है। अत्यन्त व्यस्त रहते हुए आर्य समाज बिहारीपुर के 11 से 13 मार्च 2013 को वार्षिकोत्सव एवं ऋषि बोधोत्सव के अवसर उपस्थित रहे थे। इसी के अन्तिम दिवस 13 मार्च को "वेद विज्ञान संगोष्ठी" रोटरी भवन, बरेली में रोटरी क्लब रुहेलखण्ड के सहयोग से आयोजित की गई थी। इस अवसर पर आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र स्मृति देववाणी शोध व विकास पीठ दिल्ली के द्वारा आपको "वेदरत्न" सम्मान से अलंकृत भी किया गया था। इसी अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में "वेदों में विज्ञान" विषय पर सारगर्भित, प्रमाणिक एवं आधुनिक विज्ञान के अध्ययन के परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत किये गये भाषण का आलेख प्रस्तुत है – सम्पादक)

वेदों में कितना विज्ञान व कला कौशल है, इस पर लिखने बैठें तो एक विशालकाय महाग्रन्थ लिखा जा सकता है। परन्तु इस लघु लेख में वेद के गुह्य वैज्ञानिक तत्त्वों की परिभाषा (Terminology) के अनुरूप मात्र प्रस्तुति ही कर रहे हैं। सबसे प्रथम हम वेदों से विश्वरचना (Cosmogoxy) के विज्ञान को सम्मुख रखते हैं। इसके अन्तर्गत प्राण क्या है तथा प्राण विश्व रचना में क्या महत्त्व रखता है, इसका वैज्ञानिक तथ्य का निरूपण किया जाता है।

प्राण एक ऋषि तत्व है जिससे सर्वप्रथम तमः प्रकृतिराख्य = गर्भ में गति (ऋषि गति) हुई। यह प्राण विद्युत स्वरूप था जो कि परमात्मा की स्वात्म शक्ति का सम्पूर्ण स्थूलकार्य जगत् विश्व के रूप को प्रलय समय में श्वावित् = सेही के समान निगलने वाली जन्मरहित प्रकृति में प्रथम चयन होता है। यह अतिसूक्ष्म अर्थात् कार्याख्य जगत् में उत्पन्न होने वाली निर्मथ्याग्नि विनाशी विद्युत से भिन्न सर्वथा विनाशरहित, अनुत्पन्न सूत्रात्मा नाम से अमर्त्य प्राण है। स्वयंभू ब्रह्म इसी स्वात्मशक्ति से परमाणुओं के संयोग और वियोग करता हुआ उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय तीन कर्मों को नित्य किया रहता है। प्रमाण स्वरूप मन्त्र प्रमाण इस प्रकार है-

*द्यौरासीत् पूर्वचित्तिरश्वरासीद् बृहद्वयः।*
*अविरासीत्पिलिप्पिला रात्रिरासीत्पिशङ्गिला।।*

*(यजु. २३।५४)*

अर्थात् जो अति सूक्ष्म विद्युत है सो प्रथम परिणाम, महत्त्वरूप द्वितीय परिणाम और प्रकृति सबका मूल परिणाम से रहित है और प्रलय सब स्थूल जगत् का विनाश रूप है।

वेदसृष्टि और यह स्थूल भौतिक संसार सृष्टि दोनों उस परमात्मा के अभीष्ट तप = ज्ञानमय सामर्थ्य = प्राणशक्ति से एक साथ प्रारम्भ हुई। वेद में इन दोनों वेद सृष्टि और

संसार सृष्टि के लिए (Technical Term) ऋत और सत्य प्रयोग हुए हैं।

*'ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत'*

ऋत अर्थात् सर्वविद्याधिकरण वेदशास्त्र और सत्य अर्थात् सत् जो प्रधान, अप्याकृत, ३० व्यक्त प्रकृति कहाती है उससे यह संसार अर्थात् सत्य पैदा हुआ। सर्वविद्याधिकरण वेद = रमन सृष्टि को मूल बीज निरतिशय सर्वज्ञ परमात्मा है और संसार का मूल बीजोपभा प्रवृत्ति है। वेद वृक्ष और संसार वृक्ष दोनों की उत्पत्ति हेतु यह प्राण ही है। अथर्ववेद के ११वें काण्ड का चतुर्थ सूक्त पूरा इसी प्राण की महिमा का वर्णन करता है। मात्र तीन ही मन्त्र प्रस्तुत किये जाते हैं -

*प्राणाय नमो यस्य सर्वमिदं वशे।*
*यो भूतः सर्वस्येश्वरो यस्मिन्त्सर्वं प्रतिष्ठिम्।।१।।*
*नमस्ते प्राण क्रन्दाय नमस्ते रत्तनयित्नवे।*
*नमस्ते प्राण विद्युते नमस्ते प्राण वर्षते।।२।।*
*प्राणो विराट् प्राणोदेष्ट्री प्राणं सर्वं उपासते।*
*प्राणोह सूर्यश्चन्द्रमाः प्राणमाहुः प्रजापतिम्।।३।।*

उस प्राण को नमन है जिसके वश में यह प्रत्यक्षाप्रत्यक्षात्मक, दृश्यदृश्यात्मक तथा चराचरात्मक जगत् है। जो सबका ईश्वर = ईक्षणकर्त्ता है। सब कुछ उसी में स्थित है, उसी के आश्रय ठहरा हुआ है। उसके रूपों का वर्णन मन्त्र इस प्रकार करता है - मन्त्र कहता है कि प्राण क्रन्द अर्थात् Flow यानि गति प्रवाह लगातार तरंगे जो अन्तरिक्षादि में समुद्र अर्णव के रूप में घूम रही है। क्रन्द का अर्थ ही सातव्य है अर्थात् सतत गति में होना प्राण का दूसरा रूप 'स्तनयित्नु अर्थात् शब्द के रूप परिवर्तित होना है अर्थात् रूपान्तरित होना यानी बदला जा सकता।

गम्भीरता से देखा जाए तो प्राण (Energy) शब्द में बदला हुआ रूप Sound ही है। यों भी कह सकते हैं शब्द प्राण ही का रूप है। तीसरा 'विद्युत्' अर्थात् प्रकाश। प्रकाश भी प्राण का ही रूप है (Light is energy)। प्राण का चौथा रूप अत्यन्त महत्त्व का है - वह है वर्षा का रूप। अन्यत्र भी वेद में प्राण ही वर्षता है - ऐसा कहा है। वर्षा एक Chemical Synthesis अर्थात् रसायनों का संघात हैं। पानी दो विभिन्न गैस ओषजन (Oxygen) तथा आद्रोजन (Hydrogen) विद्युतरूपी प्राणशक्ति द्वारा (Ionioc Form) संगठित वा इनकी सहति होने से बनता है। बिना विद्युत प्राण के इनमें संघात नहीं हो सकता। देखा जावे तो वेद ने संसार के सभी रासायनिक क्रियाओं तथा पदार्थों को वर्षा के रूप में एक ही वर्ग में इकट्ठा कर दिया है। या यूँ कह दें कि वर्षा जल संसार के सभी रासायनिक पदार्थों का प्रतिनिधिकरण करता है।

*मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च दिशादसम्। धियं धृताचीं साधत्ता।।*

*ऋ० म० ११ सूक्त २। मं० ७*

मन्त्र उस रीति या क्रम (धियं) का वर्णन करता है जिससे प्रसिद्ध द्रव अर्थात् जल दो

पदार्थों के संयोग से बनता है। साधन्त शब्द द्विवचन है जो इस बात का सूचक है कि दो मूल पदार्थ मिलकर ही जल बनाते हैं। इन दो पदार्थों का वर्णन करने के लिए मन्त्र में मित्र और वरुण का प्रयोग हुआ है। मित्र का पहला अर्थ है मापने वाला। मित्र शब्द 'मि' धातु से 'क्र' उणादि प्रत्यय 'अमिचिमिशसिभ्यः क्रः' सूत्र से होता है। 'मिनोति भान्यं करोति मित्रः' जो मापता है या दूसरे के मापने के लिए आदर्श का काम देता है। यह धनता या मूल्य का मापक है तथा मित्र का दूसरा अर्थ है सहकारी। अर्थात् मित्र वरुण का सहकारी है। वरुण वृ धातु स्वीकार करने अर्थ में है, उससे 'कृवृदारिभ्य उनन् ३।५३। इस सूत्र से उनन् लगाने से वरुण बना है, जिसका अर्थ है जो सबके लिए ग्रहणीय है या जो सबको चाहता है। अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि मित्र = हाइड्रोजन और वरुण आक्सीजन नाम से कैसे जाने जायें? इस विषय में बहुत स्पष्ट है कि वेद में अनेक स्थलों में मित्र और उदान तुल्यार्थवाचक हैं। उदान का विशेष गुण हल्कापन या ऊपर उठाने की शक्ति। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि मूल पदार्थों में Hydrogen न केवल सबसे हलका है, न केवल Monovalent ही है, प्रत्युत इसमें आक्सीजन के लिए प्रीति भी है। अतः वेद का मित्र और साइंस का Hydrogen एक ही पदार्थ है। दूसरा मूल पदार्थ वरुण है जो सबके लिए ग्रहणीय है। जिसकी प्रत्येक प्राणधारी को जीवित रहने के लिए आवश्यकता है। इसका प्रसिद्ध गुण मन्त्र में 'रिशाद' कहा है अर्थात् यह सब नीच धातुओं को खा जाता है या जंग लगा देता है, यह सब हड्डियों आदि को जलाता और शरीर शास्त्र की रीति से लहू को जलाकर इसे शुद्ध करता है। इस प्रकार शरीर को यह जीवित रखती है। यही गुण है जिनसे वरुण पहचाना जाता है। रिशाद धर्म से वर्णन करने पर कोई गलती नहीं कर सकता कि जिस पदार्थ को ऐसी स्पष्ट रीति से निरुपित किया गया है वह आक्सीजन तक ही है। मन्त्र में एक और शब्द 'पूतदक्षम्' आया है। पूत का अर्थ पवित्र अर्थात् मलिनताओं से रहित है। दक्ष कहते हैं शक्ति को। पूतदक्षम् का अर्थ - पवित्र और गमनशील शक्ति वाला पदार्थ हुआ। और कौन ऐसा व्यक्ति है जो गैसों के गतिविज्ञान सम्बन्धी नियमों को जानता हो और फिर 'पूतदक्षम्' में एक अतीव गर्म की हुई गैस के विशेष गुण न देख सके। सिद्ध हो गया दो पदार्थों के संयोग अर्थात् हाइड्रोजन और आक्सीजन रिशाद् धर्म वाली गैस से जल बनता है। सूक्त के १५वें मन्त्र में और विस्तार से बता दिया कि यह प्रकट विश्व (Manifest World) प्राण ही है। सूर्य चन्द्रादि दिव्य पदार्थ भी प्राण का ही रूप है। संसार में सब वस्तुएँ इस प्राण के साथ इकट्ठी (Cordinate) काम करती है। यह भी कह डाला कि जड़ जंगम का पालन-पोषण करने काला यह प्राण प्रजापति का दूसरा ही रूप है। आइनस्टाइन (Einstien's Theory of Relativity) का पारस्परिक गति सिद्धान्त कहता है कि सब घूम रहे हैं। कोई भी खड़ा नहीं है। (ऋग्वेद १०।६२।३) मन्त्र कहता है -

*य ऋतेन सूर्यमारोह्यन् दिव्यप्रथयन् पृथिवीं मातरं वि।*

अर्थात् ऋत के द्वारा = ऋत गति के आधार पर सूर्य = बीज का आरोहण हुआ और दिव्य शक्ति माता पृथिवी की ओर फैलाता है। यानि सूर्य की किरणें भी ऋत गति से पृथिवी तक आती है। अथर्व ५।१७।१ में 'सलिलो पृथम सलिक्त अर्थात् गति मती शक्ति (षल् गतौ) उत्पन्न हुई।

Force of Gravitation :- वेद कहता है कि -

'अजस्य नाभावध्येकमर्पितं यस्मिन्विश्वानि भुवनानि तस्युः' अज अर्थात् गति (अजगतौ) के नाभि (नह्यति वन्ध्राति इति नाभिः) बन्धन में ही सब कुछ आधारित है वा अर्जित है, उसी बन्धन में सारे भुवन स्थित हैं, अर्थात् चक्कर काट रहे हैं और अपनी परिधियों (orbits) से विचलित नहीं है।

वेद में एक अन्य सिद्धान्त एक मन्त्र में वर्णित है, यह मन्त्र ऋक् (१०।८१।३) तथा यजु० (१७।१९) दोनों स्थानों से विद्यमान है।

*'स बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्धावाभूमी जनयन् देव एकः।'*

वह महती शक्ति द्यावा और पृथिवी रूपी दो बाहुओं (बांधने के केन्द्रों) को रचकर अति गतिशील पत्रों (पत गतौ) अर्थात् अनेक प्रकार की किरणों तरंगों द्वारा (संधमति) संसार को परिपूर्ण तथा पोषण पहुँचाती हैं (धमतिप्रापयतिं)। अर्थात् पहले दो केन्द्र बनाए जिन्हें Poles कहते है। जैसे बैट्री के पोल-एक गर्म एक ठण्डा और महान् केन्द्र विश्व को बांधे हुए हैं। द्युलोक में सूर्यादि गर्म पोल है और पृथिवी आदि ठण्डे हैं। ये दोनों केन्द्र कई प्रकार की किरणों से बन्धे हुए कार्य कर रहे हैं। चुम्बक में भी North & South Poles होते हैं। वहाँ भी एक केन्द्र से किरणें निकलकर दूसरे केन्द्र व पोल में जाती हैं। यहाँ पर द्यावापृथिवी पारिभाषिक पद हैं। प्राणियों में पुरुष और स्त्री के रूप में यह दो पालन हैं। द्यौ पिता है और माता भूमि है। इनमें से पुरुष अग्न स्त्री जल या ठण्डी है। शतपथ में 'अग्निर्वे प्रमान् आपोवायेषा' स्पष्ट रूप से कहा है।

**वेदों में सूर्यरश्मि भौतिक विज्ञान :-** अथर्व ६।१०५।३ का मन्त्र है -

*यथा सूर्यस्य रश्मयः परापतन्त्याशुभत्।।*

सूर्य की अत्यन्त वेग वाली तथा व्यापक होने वाल किरणें बड़े वेग से चलती हैं। यहाँ आशुमत् तथा रश्मयः बड़े महत्त्व के शब्द हैं - आशुमत् तो अत्यन्त वेग को स्पष्ट करता है। आजकल के Physicists मानते हैं कि सूर्य की किरणों से अधिक वेगवान् कोई वस्तु नहीं। रश्मि शब्द से व्यापक होने का संकेत हैं। (अश्नुते व्याप्नोतीति रश्मिः)। सूर्य किरणें अत्यन्त व्यापक धर्मिता वाली हैं। रश्मि का दूसरा अर्थ भी कई २-३ फुट मोटे शीशे से भी गुजर जाती हैं।

इतना ही नहीं - अहश्रमस्य केतवो विरश्मयो जनो अनु। भ्राजत्तो अग्नयो यथा। मन्त्र में तो प्रकाश और ताप दोनों एक दूसरे के सनातन सहकारी हैं सूर्य रश्मियों में इनमें से प्रत्येक को एक-दूसरे के भीतर आविर्भूत करने की शक्ति, सार और तत्त्व विद्यमान है। दोनों ही गति हैं। दोनों ही थरथराहटें हैं पर उनके कम्पन वेग भिन्न-भिन्न हैं। कम्पन एक ही माध्यम में होते हैं। प्रकाश में प्रतिफलित होने की क्षमता है। यही बात ताप की है। प्रकाश में ध्रुवि भवन का सामर्थ है यही सामर्थ्य ताप में भी है ताप भाप का वायुमण्डल पैदा करता है। प्रकाश भाप के बने बादलों को वर्षा के रूप में मैदानों पर गिराता है। ताप और प्रकाश प्रकृति में सदा के लिए व्याहे हुए साथी हैं। ताप गरम हैं प्रकाश ठण्डा है - तरोताज़गी देता है, एक दूसरे के प्रणय और जीवन के रूप में Complements हैं। रंगों का समुज्ज्वल खेल

प्रकाश हमें दिखाता है तो ताप द्वारा उत्पन्न होने वाले आण्विक और रासायनिक परिवर्तन भी इससे कुछ कम अद्भुत नहीं। किसी वस्तु को गर्म करके उसे तापोज्ज्वल दशा में लाकर उसे जला सकते हो। इसी प्रकार समीचीन उपायों से तुम प्रकाश को पकड़कर उससे अपनी चीज गरम करा सकते हो और जला भी सकते हो। देखो ! दोनों साथी अपने साझे स्रोत सूर्य से कैसे निकलते हैं। वे जोड़ा-जोड़ा चलते हैं। सूर्य की गरमी = ताप देने वाली किरणों की 'भ्राजन्तो अग्न्यः' कहा है। प्रकाश निकालने वाली किरणों को 'रश्मयः केतवः' शब्द से वर्णन किया है। एक दूसरे का आलिंगन करती हुई ये गर्मी पहुँचाने वाली तथा वर्ण सम्बन्धी किरणें सूर्य से दौड़ती हैं अैर समुज्ज्वल अन्तरिक्ष से करोड़ों मील की यात्रा के बाद पृथिवी पर गिरकर जीवन को उष्ण और सोई हुई बुद्धि को उद्भासित करती है। सगर्व विज्ञानी किरणों के इन आपस में मिले हुए वैवाहिक प्रिय रूप में मिले गुए प्रगाढ़ आलिंगन को भले ही आयोडीन की सफियों (फिल्टरों) और फिटकरी के घोलों (Solutions) द्वारा छानकर अलग-अलग कर सकने की डींग मार पर उनका पूर्ण वियोग एक-दूसरे से सर्वथा पृथक् करना कभी सम्भव नहीं हो सकता।

यजु० (१३।८) में सूर्य रश्मियों सीधी तार के समान न चलने वाली बताकर सार्व गति में चलती हैं अर्थात् कुण्डल या बलखाती (coils) या दायें बायें या ऊपर नीचे होती हुई बड़ी गति से चलती है। यह किरणें वायुमण्डल से गुजरती है अतः अपने मार्ग में वक्री भवन को प्राप्त होती है।

पृथिवी पर पड़ने वाली किरणें पृथ्वी के स्तरों को गर्म करती हैं। फिर ये आगे अपनी समीपवर्ती वायु की तहों को गर्म करती हैं। इन गरम तहों के ऊपर चढ़ जाने से जो शून्य उत्पन्न होता है उसे भरने के लिए पवन की ठण्डी तहें वहाँ शीघ्रता से पहुँच जाती है। इस प्रकार इस क्रम में गर्मी का एक तेज दौर जारी होता है। इसी से वायु प्रवाह उत्पन्न होते हैं। बहने वाली सभी हवाएं ठीक इसी प्रकार बहती हैं। व्यापारी हवाएं कहलाने वाली उत्तर-पूर्वी और दक्षिण पूर्वी हवाएँ भी इस प्रकार उत्पन्न होती हैं।

सूर्य से अने वाली रश्मियाँ आकाश में बहुत ऊँचाई पर वायु के अत्यन्त सूक्ष्मीभूत स्तरों के साथ टकराता है। शून्य से वायु स्तरों में प्रवेश करते समय प्रकाश की किरणें मुड़ जाती हैं और वक्री भव के कारण एक मुड़े हुए मार्ग का अवलम्बन करती हैं। यदि वायु के निचले स्तर जिनमें से इन विरले को गुजरना पड़ता है एक जैसे ही गरम होते तो वायु में सीधी ही चलती परन्तु भिन्न-भिन्न तापों, भिन्न-भिन्न घटनाओं वाले युवा के स्तरों को मिलाने से यह यात्रा में पग-पग पर थोड़ा-थोड़ा टेढ़ी होती जाती है। यहाँ तक कि ये किरणें सब विचित्र मार्गों, सब प्रकार के अनन्त टेढ़े-मेढ़े पथों में से गुजरती हुई = क्रीड़ा करती हुईं ऐहिक पदार्थों तक और हमारे नेत्रों तक पहुँचकर वायु स्तरों का वर्णन दृष्टि को उत्तेजित करती है। इसी को वेद किरणों के मार्गों का 'उत्रेयश' कहा है, देखिए कैसे - जो तदा बालुकामय मरुस्थलों में पथिकों को प्रायः दिखाई देता है - जिसे मृगतृष्णा कहा जाता है उसका कारण भी वायु के तदा स्तरों के बने हुए असंख्य पृष्ठों पर प्रकाश का परावर्तन और वक्रीभवन है। वायुमण्डल वायु की तरंगें उत्पन्न करने के अतिरिक्त हमारी दृष्टि की दूरी को बढ़ाता और मृगमरीचिका सरीखे दृश्य चमत्कारों का कारण है। यही मन्त्र दर्शता पद का

अभिप्राय है।

वेद में तीन-तीन बार सात अर्थात् सात-सात के तीन वर्ग (Set) गुट किरणों के बताए हैं -

*त्रिरस्यै सप्त धेनवो -*

*अयं त्रिसप्त दुदुहान० - उ० प्र० ६ (२) १७*

*ते मन्वत् प्रथमं नाम गोनां त्रिसप्त परमं नाम जानन्। पू० प्र० ६ ।३*

इन मन्त्रों गो, धेनु आदि भिन्न-भिन्न प्रकार की किरणों का वर्णन है। इनमें तीन ही वर्गों में सूर्य किरणों को बांटा गया है। एक गुट वह है जो हमें दीखती हैं, दूसरे दो गुट हमें दिखाई नहीं देते - जैसे अल्फा, बीटा, गामा, एक्स, कास्मिक आदि किरणें। दिखनी वाली श्वेत किरण में रंगों के संयोग से बनती है। जब वह श्वेत किरण वर्षा में से निकलती है तो इन्द्र धनुष की रूप में सात रंगों में दिखाई देती है।

**विद्युत उत्पन्न कराने के तरीकों का वर्णन :-**

*'अग्निं नरो दीधितिमिरण्योर्हस्तच्युतं जनयत प्रशस्तिम्'*

इस मन्त्र में नर, अरणि और हस्त ये तीन शब्द अति पारिभाषिक हैं - नर का नृ नये ले जाने ढकेलने वाला (Driving Agent) दूसरा अरणि शब्द है - अर्थात् लट्टू के समान तीव्र गति से घूमने वाली जिससे कुछ प्राप्त हो (Dynamo या Turbines) तीसरा शब्द है - हस्त अर्थात् रगड़ देने वाले बन्धन (हिसि हिंसाभ्याम्)। सीधा अर्थ हुआ - कोई नर वा चलाने वाली शक्ति अच्छे प्रकार बंधी हुई तीव्र गति से भ्रमरी के समान घूमती हुई अरणि रगड़ देने वाले साधनों से चूती हुई, पूरे वश में की हुई उत्तम विद्युत शक्ति को उत्पन्न करो।

(आर्यसमाज विहारीपुर में बोलते आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय)

इस प्रकार हमने कला कौशल के विविध रूपों जैसे शिल्प-शिल्पी, अनेक प्रकार के रथ, युद्ध विद्या वा उसके उपकरण, Medical Science, Biology के अन्तर्गत Zoology एवं Botany तथा वास्तुविद्या) के साथ यज्ञ विद्या, देव विद्या, लोक विद्या, प्राण विद्या, छन्दोविद्या, अग्नि-सोम विद्या, प्रजापति विद्या, हृदय विद्या, त्रयी विद्या, अव्यय-अक्षर-क्षर पुरुष विद्या, पंचचिति विद्या, संवत्सर विद्या, मनुविद्या, विराज विद्या, सदसद् विद्या, अमृत-मृत्यु विद्या, पर्यङ्क विद्या, अश्वत्थ विद्या, निदान विद्या सप्तहोतृ विद्या, अग्नि विद्या, वायुविद्या, मित्रावरुण विद्या, गायत्री विद्याश्येनचिति सवर्णचिति आदि अनेक वेद विद्याओं का पारिमाणिक पदावलियों के आधार पर खोजपूर्ण विचार किया है। वेद एक महतोमहीयान् शास्त्र है। इसकी अपनी दुर्धर्ष सत्ता है। ज्ञान के मधुमान् महासमुद्र की एक बूँद ही मानव का कल्याण करने समर्थ है। ★

# वेद में विज्ञान के सूत्र

(डॉ० ओ० पी० अग्रवाल, वरिष्ठ हृदय रोग विशेषज्ञ एवं प्रधान, बरेली)

संदर्भ एवं परिचय :- अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सुप्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ० ओ० पी० अग्रवाल जी राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेकों शोध-पत्र प्रस्तुत कर चुके हैं। वेदों पर आधारित वैदिक जीवन शैली को आधार मान के अनेक देशों में आप प्रतिवर्ष व्याख्यानों से लाभान्वित करते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आपको अनेक बार सम्मानित किया जा चुका है। वर्तमान में आप आर्य समाज बिहारीपुर के माननीय प्रधान है। आर्य समाज बिहारीपुर, बरेली के द्वारा आयोजित वैदिक सिद्धान्तों का वैज्ञानिक चिन्तन व्याख्यान माला (३) २० जनवरी २०१३ को "वेद मंत्रों में विज्ञान के सूत्र" विषय पर दिये गये व्याख्यान का आलेख प्रस्तुत है – सम्पादक)

वेद में सब सत्य विद्यायें हैं।

"ऋचो अक्षरे परमे व्योमन० = ऋ० १.१६४.३६

वेद के मंत्रों के साक्षात् किए बिना हम वेद विज्ञान को समझने में समर्थ नहीं हो सकते। सच्चे ईश्वर भक्त ही परम पुरुष के रहस्यों को समझ सकते हैं। वेदाध्ययन से निम्न तथ्य सामने आते हैं -

विश्व शान्ति, विश्व बन्धुत्व, विश्व कल्याण, व्यक्ति, समाज और राष्ट्रहित, ज्ञान और विज्ञान के आधार, मानवीय व सामाजिक सब समस्याओं का समाधान, वेद में आर्थिक तथा शैक्षिक, राजनीतिक सम्बन्धी निर्देश, वेद में सुखी एवं समृद्ध गृहस्थ जीवन की शिक्षायें, वेद में स्वराज्य-स्वतंत्र राष्ट्र की पुष्ट कामना, मानव मात्र को वेदों की शिक्षा का प्राविधान, मनुष्य लक्ष्य का बोध, वेद में सत्य, पुरुषार्थ, सेवा, संयम और श्रम का महत्व निर्देश है।

वेदों में चिकित्सा के महत्वों पर भी प्रकाश है। निरोग रहकर शताधिक आयु प्राप्ति के साधन भी बताए गए हैं। वेद विद्या में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति के आदेश व साधन भी व्यक्त हैं।

अतः "न ह्येषु प्रत्यक्षम अस्ति अनृषेरतपसो वा" निरुक्त - इसका तात्पर्य है कि वेद विद्या को समझने के लिए कठोर साधना और सूक्ष्म दृष्टि चाहिए। वेदों भाषा विज्ञान पर सुन्दर रोचक सूक्त (ऋग्वेद १०,१२५, १ से ८ तक) में वाक् तत्व (speech) पर गूढ़ व्याख्या की गई है। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के भाषा विज्ञान के प्रो० सईस (Sayce) ने अपने ग्रन्थ (Science of Language) में इस सूक्त के विषय में कहा कि इन मंत्रों में जो वाक् तत्व की मीमांसा की गई है वह एक महान भाषा विज्ञान का महत्व प्रकट करती है।

भूगोल (पृथिवी) परिभ्रमण विषय में वेद में निम्नलिखित मंत्र कितना स्पष्ट है - "आयं गौः पृश्निर क्रमीद०" यह मंत्र चारों वेदों में प्राप्त है। तात्पर्य है कि पृथ्वी ही नहीं घूमती बल्कि सूर्य भी अपनी धुरी पर चक्कर लगाता है। चन्द्रमा सूर्य की किरण से प्रकाशित होता है -

"सुष्मणः सूर्यरश्मि चन्द्रमा गन्धर्वः" यजुर्वेद १८-४० पर देखो। अथर्ववेद का कथन है कि हाइड्रोज (Hydrogen) से सूर्य को ऊर्जा मिलती है - Hydrogen के लिए वेद में सोम शब्द का प्रयोग हुआ है। यथा - "सोमेन आदित्या वलिनः" अथर्व० १४.१.२

वेद में हीलियम (Helium) के लिए "अपां रसरु यो रसः" अर्थात् जल का सार भाग जो Hydrogen का भी सार भाग है अर्थात् उच्चतम रूप है। सूर्य में ये दोनों (Hydrogen and Helium) गैसें विद्यमान हैं। ऋग्वेद में एक मंत्र आता है जिसमें कहा गया है कि सूर्य के चारों ओर गैस फैली हुई है - इस मंत्र में विशाल गैस के लिए "शकमयं धूमम्" अर्थात् महाशक्ति युक्त धूम शब्द बड़ा प्रयोग है।

सूर्य की सतह का तापमान ६ हजार डिग्री सेन्टीग्रेड है और अन्दर का १ करोड़ ३० लाख डिग्री है। इस आन्तरिक तापमान से Hydrogen Helium में परिवर्तित हो जाता है - इसे Thermo-nuclear Reaction कहा जाता है।

अथर्ववेद में सूर्य की सात किरणों का वर्णन प्राप्त होता है "सप्तस्य सूर्य रश्मयः" अथर्व० ७/०७/३ ये किरणें तीन रूपों में - उच्च, मध्यम, निम्न रूपों को प्राप्त करके २१ प्रकार की हो जाती है - "ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वारूपाणि विभ्रतः" अथर्व० १. १.१" यजुर्वेद में सूर्य के लिए कहा गया है कि वह प्राण शक्ति अर्थात् ऑक्सीजन (Oxygen) देता है और अपान अर्थात् कार्बन डाई ऑक्साइड (Carbon dioxide) को समाप्त करता है।

सूर्य की आकर्षण शक्ति (Magnetism) का वर्णन करते हुए कहा गया है कि सूर्य ने अपनी आकर्षण शक्ति से पृथिवी को थामा हुआ है, ऋग्वेद के एक मंत्र में इस सिद्धान्त का संकेत मिलता है कि मैटर (Matter) अर्थात् द्रव्य को ऊर्जा (Energy) में परिवर्तित किया जा सकता है और ऊर्जा को द्रव्य रूप में। वेद में द्रव्य को अदिति-अक्षय-प्रकृति शब्द आया है और ऊर्जा के लिए दक्ष (चेतना-ऊर्जा) शब्द, वहाँ पर पृथिवी रूपी शिशु की रक्षा के लिए ओजोन की परत को महान स्थूल उल्ब (Ulba) कहा गया है।

वेदों बीज रूप से सारे विज्ञान के सूत्र मौजूद हैं। भौतिक, रसायन, जीव, विज्ञान के सूत्र भरे पड़े हैं।

वेद में गैस को मरुत शब्द से जाना गया है - कुछ गैसों के नाम, शुक्रज्योति, चित्रज्योति, सत्य ज्योति, ज्योतिष्मान, सत्यजित्, सेनजित्, सुषेण आदि।

"शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्मान।। यजु० १७-८० से ८५११

रसायन शास्त्र के विषय में भी कुछ तथ्य प्राप्त होते हैं जल के विषय में कहा गया है कि जल में अग्नि और सोम अर्थात् ऑक्सीजन और हाइड्रोजन दोनों तत्व विद्यमान है।

"अग्निषोमौ ब्रिभ्रति आप इत ताः।" - अग्नि को जल का पित बताया गया है कि अथवा ऋषि ने जल के मंथन से अग्नि अर्थात् विद्युत (Electricity) की उत्पत्ति होती है। "अग्नेपित्तं अपाम असि"। इस प्रकार विज्ञान के सारे सूत्र वेदों में प्राप्त हैं।

वनस्पति विज्ञान की दृष्टि से भी कुछ महत्वपूर्ण तथ्य प्राप्त होते हैं। अथर्ववेद में क्लोरोफिल (Chlorophyll) का वर्णन मिलता है। इसमें क्लोरोफिल के लिए अवि (रक्षक तत्व) शब्द आया है। इसकी विशेषता है कि इस तत्व से ही वनस्पति व वृक्षों में हरियाली रहती है। जैसे -

*"अविर्वैनाम देवता ऋते नास्ते परीवृत्ताः।*
*तस्या रूपेण - इमे वृक्षा हरिता हरितस्रजः।।" (अथर्व० १०.८.३१)*

प्रकृति स्रष्ट (ईश्वर) ने "अवि" (Chlorophyll) नाम का तत्व वनस्पति और वृक्षादि

की हरियाली के लिए बनायी है।

यान्त्रिकी (Engineering) की दृष्टि से भी वेदों में अनेक मंत्र प्राप्त होते हैं। ऋग्वेद में मंत्र आता है कि अश्विनी कुमारों का रथ (यान) मन के वेग के समान उड़ सकता था और उसमें सुरक्षा के सभी साधन प्राप्त थे। "स वां रथो मनोज वा इवर्ति तिरो-रज़ांस्याश्विनाशतोति।" (ऋ० ७.३८.३)

यह यान पृथिवी का आकाश में समान रूपेण गमन करने में सक्षम था। आयुर्वेद की दृष्टि से वेदों में अत्यन्त महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध होती है -

१. सूर्य किरण चिकित्सा, २. अग्नि चिकित्सा, ३. शल्य चिकित्सा, ४. विष चिकित्सा, ५. पशु चिकित्सा - इस प्रकार चिकित्सा सम्बन्धी प्रत्येक रोग एवं अंगों का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।

Chromopathy (सूर्य किरण चिकित्सा) का ऋग्वेद उत्तम विवरण मिलता है। "उद्यन् अद्य मित्रमह - आरोहन०" (ऋ० १.५०.११)

उदय होते हुए सूर्य की किरणों को सभी रोगों का इलाज माना गया है। इन प्राकृतिक पद्धतियों से मनुष्य दीर्घायु प्राप्त करके सुखद जीवन प्राप्त कर सकते थे। ☆

## वैदिक गीत

(डॉ० दामोदर शर्मा आचार्य, एस.वी.इं.कॉ., बरेली)

ज्ञान की ज्योति, भारत में फैलाई दयानन्द।
दिया है जिसने, वैदिक मार्ग स्वच्छन्द।।
लिख पुस्तक घर-घर पहुँचायी थी सत्यार्थ प्रकाश।
दिव्य ज्योति हमके दै दीन्हीं, होवै अविद्या नाश।।
वेद सार उसमें लिख दीन्हा, जो सबका हितकारी।
सत्य खोज में घर से निकले, छोड़ पिता महतारी।।
दै मार्ग हिन्दू जाति को, गौरव खूब बढ़ायो।
शक्ति दै गयो हिन्दु जाति को, वीर शिवा बनि आयो।
ज्ञान की ज्योति, भारत में फैलाई दयानन्द।
दिया है जिसने, वैदिक मार्ग स्वच्छन्द।।
सत्पथ पर चल लो हे भैया, सच्चा मार्ग बताया।
धन दौलत को जोड़-जोड़ के, अन्त साथ नहीं पाया।।
खुद को जो नर न पहचाना, तो पशु रूप कहायो।
बिना सत्य औ ज्ञान के वन्दे, जीवन व्यर्थ गँवायो।।
मुक्ति को भटका क्यों फिरता, मुक्ति कहीं नर नाहीं।
कर्म धर्म का पालन कर लो, ज्ञान की ज्योति जलाई।।
दामोदर कवि तुम्हें पुकारे, ओ वन्दे मतवारे।
ज्ञान ज्योति यदि नहीं जलाई, जग भटकोगे प्यारे।।
ज्ञान की ज्योति, भारत में फैलाई दयानन्द।
दिया है जिसने, वैदिक मार्ग स्वच्छन्द।।

# विज्ञान और वेद

(डॉ० वेदप्रकाश शर्मा, वरिष्ठ पैथोलॉजिस्ट, शील अस्पताल, बरेली)

(**संदर्भ एवं परिचय :-** वरिष्ठ पैथोलॉजिस्ट शील हास्पिटल बरेली डॉ० वेदप्रकाश शर्मा जी वैदिक विचारधारा में अटूट विश्वास रखने वाले अध्ययनशील एवं चिन्तक हैं। आपने वेदों में विज्ञान के स्वरूप को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में गम्भीरता से अध्ययन किया है। आप आर्यसमाज बिहारीपुर के माननीय प्रधान भी रह चुके हैं। आर्यसमाज बिहारीपुर बरेली द्वारा आयोजित वैदिक सिद्धान्तों का वैज्ञानिक चिन्तन व्याख्यान माला के प्रथम व्याख्यान कर्ता थे। आपने ६ जनवरी २०१३ को "वेदों में विज्ञान का महत्त्व" विषय पर प्रामाणिक व्याख्यान दिया था तथा १३ मार्च २०१३ को "वेद विज्ञान संगोष्ठी" में भी उपरोक्त विषय पर व्याख्यान दिया था। आपको आचार्य विशुद्धानन्द स्मृति देववाणी शोध व विकासपीठ दिल्ली के द्वारा आर्यरत्न सम्मान से सम्मानित किया गया था। उस व्याख्यान को आलेख के रूप में प्रस्तुत किया गया है - सम्पादक।)

**१. धार्मिक दृष्टि से वेदों का महत्त्व :-** वेदोऽखिलो धर्ममूलम्। वेदों को सभी धर्मों के मूल रूप में स्वीकार किया गया है।

**२. ज्ञान की दृष्टि से वेदों का महत्त्व :-**

*चातुर्वर्ण्य त्रयो लोकाश्चत्वारश्चाश्रमाः पृथक।*
*भूतं भव्यं भविष्यं च सर्व वेदात् प्रसिध्यति।।*

विद् ज्ञाने धातु से निष्पन्न 'वेद' शब्द का अर्थ ही 'ज्ञान' है, अतः वेद सब प्रकार के ज्ञान से युक्त है। हमारे जीवन का ऐसा कोई पक्ष नहीं है जिसका दर्शन हमें वेद में न होता हो। तीनों लोकों, चारों वर्ण, चारों आश्रम, यहाँ तक कि भूत, भवत (वर्तमान) और भविष्यत्, सभी का ज्ञान, वेदों के द्वारा सम्भव है। वेदों में सब सत्य विद्यायें विद्यमान हैं।

**३. साहित्यिक दृष्टि से वेदों का महत्त्व :-** वेद भारतीय काव्य-उपवन के प्रथम अंकुर हैं और वाद का सारा ही काव्य, उन्हीं का पल्लवन सा प्रतीत होता है।

**४. भाषा विज्ञान की दृष्टि से वेदों का महत्त्व :-** वैदिक भाषा, विश्व की प्राचीनतम भाषा है। अन्य भाषाओं का मूल स्रोत वेदभाषा ही है।

**५. सांस्कृतिक दृष्टि से वेदों का महत्त्व :-** परमेश्वर ने वेदों का ज्ञान किसी वर्ग, सम्प्रदाय या देश-विशेष के मनुष्यों के लिए नहीं, वरन् सम्पूर्ण संसार के सब मनुष्यों के लिए प्रदान किया है। वेद कहते हैं :-

*यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।*
*ब्रह्मराजन्याभ्याँ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय।*
*प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं।*
*मे कामः समृध्यतामुप मादौ नमतु।। (यजु० २६/२)*

हे मनुष्यों ! जिस प्रकार मैं इस सुख देने वाली वेदवाणी का सब मनुष्यों के लिए उपदेश

करता है, ब्राह्मणों के लिए, क्षत्रियों के लिए, शूद्रों के लिए, वैश्यों के लिए और अपनों के लिए और परायों के लिए भी उपदेश करता हूँ, उसी प्रकार आप भी उपदेश किया करे।

**६. धर्म को प्रत्यक्ष कराने और वेदोक्त धर्मानुष्ठान का फल :-** वेद ही धर्म का ज्ञान कराने में समर्थ है - यथा

*वेद स्मृति सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।*
*एतच्चतुर्विधंप्राहु साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।।*

वेद, स्मृति, सत्पुरुषों का आचार और अपनी आत्मा को प्रिय जो आचरण हैं, यह चार धर्म को प्रत्यक्ष कराने वाले हैं। वेदों का स्वाध्याय और वेदानुसार सत्कर्म करने वाला सदैव सुखी रहता है। सत्कर्म करने वाले मनुष्यों के लिए वेद ही परम प्रमाण हैं। अथर्ववेद कहता है कि सब मनुष्यों को वेदमार्ग पर इसलिए चलना चाहिए क्योंकि वेदमार्ग ही सबके लिए कल्याणकारी और सर्वोत्तम है। ईश्वर का वेदों के माध्यम से आदेश है -

*असो यः पन्था आदित्यो दिवि प्रवाच्यं कृतः।*
*न स दैवा अतिक्रमे तं मर्तासो न पश्यथ वित्तं मे अस्य रोदसी।।*

(ऋ० १।१०५।१६)

हे विद्वानों ! यह सूर्य के समान ज्ञान का प्रकाश करने वाला, जो वेद मार्ग है, वह सब सत्य विद्यायों के प्रकाश से युक्त, उत्तम रीति से कहने योग्य, मैंने (ईश्वर) ने बनाया है, वह उल्लंघन करने योग्य नहीं है। उस वेद ज्ञान को तुम जानो।

**७. विदेशी विद्वानों की वेद के प्रति सम्मति :-**

- जो वेदों में पाया जाता है, वह अन्यत्र कहीं नहीं है।
  What is found in the Vedas, exists nowhere else. (Lord Marky)
- Study of Vedic Literature is indispensable. (Max Muller)
- जिस प्रकार वेद दैदीप्यमान हैं, संसार का दूसरा कोई ग्रन्थ उस प्रकार प्रकाशित नहीं है। वेद सम्पूर्ण मानवता को अपना दिव्य प्रकाश प्रदानकर, उसे आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है। (प्रोफेसर हीरेन)

## अथर्ववेदीय मन्त्र विद्या और चिकित्सा शास्त्र

**अथर्ववेद एक परिचय :-** परमात्मा ने अथर्ववेद का ज्ञान "अंगिरा" ऋषि के आत्मा में प्रकट किया। इसमें ज्ञान, कर्म, उपासना, तीनों का वर्णन विद्यमान है। इसमें शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति के उपायों का विस्तृत वर्णन है, इसके अतिरिक्त अथर्ववेद में युद्ध और शान्ति का विशद वर्णन है, जो पूर्णतया वैज्ञानिक है। अथर्ववेद में २० काण्ड, ७३१ सूक्त (मन्त्रों का समूह) और ५९७७ मन्त्र हैं इसका उपवेद - "अर्थवेद" है। इसमें आर्युविज्ञान, प्रकृति विज्ञान, खगोल विज्ञान, वास्तु शास्त्र (Engineering), सैन्य व मनोविज्ञान, ज्योतिष विज्ञान का निरूपण है।

कतिपय पाश्चात्य और भारतीय विद्वजों की धारणा है कि अथर्ववेद जादू-टोने, गण्डा-तावीज, तन्त्र-मन्त्र इत्यादि हैं, जो सर्वथा निर्मूल है। प्रथम हम, इसकी पाँच शिक्षाओं का विवेचन करेंगे यह है -

१. संकल्प या आवेश (Self Hypnotism or Magnetism)

२. मार्जन और अभिमर्श (Mesmerism)
३. आदेश (Hypnotic Suggestions)
४. मणि बन्धन ५. कृत्या और अभिचार

**१. संकल्प और आवेश :-** संकल्प और आवेश क्या है ? "प्रबल एवं साधिकार इच्छा का नाम संकल्प है और उसका पुनः - पुनः आवर्तन आवेश कहलाता है। अथर्ववेद में संकल्प अर्थात् कामना, मनुष्य के आंतरिक जीवन की मूर्ति और बाह्य-जीवन की पूर्ति में सफल बनाती है। अथर्ववेद में दुर्गुणों के निराकरण और सद्गुणों के संकल्प और आवेश का प्रतिपादन अनेक स्थलों पर किया है, जो दर्शनीय है।

**(१) पाप को हटाने का संकल्प :-**

*परोपेहि मनस्पाप किमशस्तानि शंससि।*
*परेहि न त्वा कामये वृक्षां वनानि संचर गृहेषु गोषु मे मनः। (अथर्व. ६।४५।१)*

अर्थ - ओ मन के पाप, तू परे (दूर) चला जा, क्योंकि तू निन्दित बातों को पसन्द करता है। तू वनों और वृक्षों को प्राप्त हो और हमसे दूर चला जा। मैं मन को स्त्री, पुत्रादि, बन्धु बान्धवों में लगाकर, अपना कर्त्तव्य पूरा करूँगा। हम बार-बार संकल्प और आवेश से, पाप को हटाने में अवश्य सफल होंगे।

**(२) त्रुटि, दोष, न्यूनता दूर करने का संकल्प :-** अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण। (यजु० ३।१७) हे परमात्मा मेरे तन और मन में न्यूनता, त्रुटि, निर्बलता या कमी है, उसको दूर कीजिए।

**(३) शक्ति प्राप्ति के लिए संकल्प :-** तेजोऽसि तेजो महि धेहि। वीर्यमसि वीर्यमयिधेहि। बलंमसि बलं मयि धेहि मन्युरसि मन्युं मयि धेहि। सहोऽसि सहोमयि धेहि।। (यजु० १९।५-९)। हे प्रभु तुझे तेजमान, वीर्यवान, बलवान, कल्याणकारी और साहसवान बनाओ।

**(४) आशा, उत्साह और सफलता प्राप्ति का संकल्प :-**

*कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सत्य आहितः।*
*गोजिद भूयासमश्वजिद् धनज्जयो हिरण्यजित।। (अथर्व० ७।५२।८)*

अर्थ - कर्म मेरे दक्षिण (दाहिने) हाथ में और विजय या सफलता मेरे वाम हाथ में प्राप्त है। मैं इन्द्रियों, भूमि का विजेता, राष्ट्र का विजेता, धन, ऐश्वर्य और अभ्युदय का विजेता, सम्पत्ति, यश, शोभा का विजेता होऊँ, बनूँ।

अतः हम जानते हैं कि शुभ संकल्प से शरीर में उत्तम हारमोन - ऑक्सीटोसिन, डोपामिन इत्यादि स्रावित होते हैं जो उत्साह को बढ़ाते हैं और ध्येय की प्राप्ति में सहयोग प्रदान करते हैं।

**२. अभिमर्श और मार्जन :-** शरीर में सनसनाहट उत्पन्न कर देने वाले स्पर्श का नाम अभिमर्श है। पाश्चात्य चिकित्सा में इसे मेस्मरिज्म या टच थिरेपी कहते हैं।

*दक्षं त उग्रमा भारिषं परा यचमं सुवामसि। (अथर्व० ४।१३।५)*

अर्थ - हे रोगी, तू चिन्ता न कर, मैं अपने हाथों द्वारा, तेरे अन्दर के रोग को दूर

करता हूँ और तुझमें बल, स्वास्थ्य, सुख को भरता हूँ।

आजकल, अमेरिका में स्पर्श चिकित्सा में बहुत काम हो रहा है और रोगों को दूर करने में सफलता मिली है।

**मार्जन या पुरश्चरण :-** मार्जन के साधन, जल, वस्त्र और कूर्च (बाल Hair) है - जो चिकित्सा में सहायक हैं - यथा -

**जल से मार्जन :-** "पानीयं श्रमनाशनं क्लमहर मूर्च्छापिपासहम। (भावप्रकाश निघण्टु) जल में मूर्च्छा या बेहोशी, मस्तिष्क में चक्कर आने पर, जल के छींटे देने से लाभ होता है।

**वस्त्र से मार्जन :-** जल में भीगे मोटे वस्त्र का स्पर्श आँखों, सिरदर्द और ज्वर में लाभ पहुँचाता है।

**कूर्च से मार्जन :-** गौ, चमरमृग आदि के बालों के मार्जन से कई रोगों में सहायता मिलती है। चमरमृग के बालों के स्पर्श से पित्ति (Urticaria) दूर होती है।

**३. आदेश विद्या (संवशीकरण) :-** सबल और सफल आश्वासन या उपदेश का नाम, आदेश है। इसका पात्र पर काफी प्रभाव पड़ता है। आदेश विद्या द्वारा कई रोगों को दूर करने में सहायता मिलती है, जैसे मानसिक रोग उन्माद इत्यादि। 'आदेश-चिकित्सक' गम्भीर, सत्यवादी, संयमी और हित दृष्टिमान होगा, तो रोगों पर प्रभाव अधिक पड़ेगा।

आदेश द्वारा किसी रोगी के रोग को दूर करना, उसके अन्दर स्वास्थ्य को लाना, किसी दुर्व्यसनी या पापी के दोषों को हटाना और उसके अन्दर सद्गुणों को लाना, ओजबल और वीरता को प्रविष्ट कराना आदि होता है। अथर्ववेद में इन सब विधियों, प्रयोगस्थलों और परिणामों का वर्णन है।

आदेश का पात्र के ऊपर प्रभाव डालने के लिए, प्रथम उसके मन को अपनी ओर आकर्षित करना चाहिए - ऐसा पात्र के प्रति कहा गया है-

*यद्वो मनः परागतं यद् बद्धमिह वेह वा।*
*तद्व आवर्तयामसि मयि वो रमता मनः।। (अथर्व. ७।१३।४)*

अर्थ - हे प्यारे पात्र, जो तुम्हारा मन, कहीं दूर की सोच रहा हो या इधर-उधर वासना आदि में बँधा हुआ हो, उस तुम्हारे मन को मैं अपनी ओर लाता हूँ, तुम्हरा मन मेरे मन में रमण करे - मेरी ओर रहे कि मैं क्या करता हूँ। मेरी ओर ध्यान दो, ऐसी निर्देशित करना है।

जिस व्यक्ति पर प्रयोग करना हो, उसे अपने सम्मुख शान्ति, आराम से बैठाकर आश्वासन दे कि तुम अपने मन को इधर-उधर से हटाकर निश्चिन्त हो, मेरी ओर ध्यान रखो, मैं जो हितकर संकल्प अपने मन में लाऊँगा, उसका प्रभाव तुम्हारे मन-शरीर पर पड़ेगा। अब तुम्हारा मन मेरे ऊपर निर्भर करेगा। यथा -

*अहं गृभ्णामि मनसा मनांसि मम चित्तमनु चित्तेभिरेत।*
*मम वशेषु हृदयानि वः कृणोमि मम यातमनुवर्त्तमान एत।। (अथर्व० ३।८।६)*

अर्थ - हे पात्र, मैं अपने मन से तुम्हारे मन को अपनाता हूँ, मेरे चित्त के अनुकूल अपने चित्त से चलो मेरी विचारधारा के अधीन, अपनी विचारधारा करो। मैं अपने वश में तुम्हारे हृदय को करता हूँ, अब मेरे बताये मार्ग पर चलोगे। अब पात्र का मन, अपनी ओर करने के

बाद, विभिन्न दोषों को दूर करने के लिए आदेशित करोगे। यथा - मानसिक चिकित्सक कहता है -

**उन्माद के लिए आदेश :-**

*अग्निठटे निशमयतु यदि ते मन उद्युतम्।*
*कृणोमि विद्वान भेषजं यथानुन्मदितोससि। (अथर्व० ६।१११।२)*

अर्थ - हे प्यारे पात्र, यदि तेरा मन उचाट हो गया, उखड़ गया है अव्यवस्थित हो गया हो, तो अग्नि उसे बिल्कुल शान्त और ठीक कर देगा और तू उन्माद रहित हो जायेगा। ऐसे मरीज को अग्निहोत्र कराना चाहिए।

**वीरता के लिए आदेश :-**

*वृषा ह्यसि राधसे जज्ञिषे वृष्णि ते शवः।*
*स्वक्षत्रं ते धृषन्मनः सत्राहमिन्द्र पौंस्यम्।।*

हे वीर या हे राजन, तू सचमुच साण्ड के समान गर्जने वाला, आक्रमणकारी और प्रतापी है, समाज तथा राष्ट्र की समृद्धि के लिए तू जन्मा है, तेरा निज बल और सैन्य बल, वर्षा प्रपात के समान शस्त्रु पर प्रयत्नशील है तेरा मन क्षात्रबल का अभिमानी और घर्षणशील है और तेरा पौरुष साहस, शत्रुओं का हननकर्ता है।

निश्चय ही तू जयशील है - रणक्षेत्र में विजय पाना, तेरा अवश्य सम्भावी है।

**मृत्यु से उभरने और दीर्घ जीवन के लिए आदेश विद्या का प्रयोग :-**

*इह तेऽसुरिह प्राण इहायुरिह ते मनः।*
*उत् त्वा निर्कृत्या पशेभ्यो देव्या वाचा भरामसि।।*
*उद्यानं ते पुरुष नावयानं जीवातुं ते दक्षतातिं कृणोमि।*
*आहि रोहेमभमृत सुखं रथमथ जिर्विर्विदयथा वदासि।। (अथर्व. ८।१।३,६)*

अर्थ - हे प्यारे रोगी, तेरा श्वास-उच्छवास रूप प्राण इस देह में रहे, इस देह में प्राणशक्ति रहे, इस देह में पूर्ण आयु रहे, इस देह में मल रहे, तुझे जीवन की अरमणीयता के बन्धनों से जीवन निराशा के भावों से सत्यवाणी एवं प्रभावकारी आदेश से उभारते हैं, छुड़ाते हैं।

हे प्यारे रोगी, अब तू स्वस्थ हो रहा है, तेरे स्वास्थ्य का उदय-उत्थान है। तेरे अन्दर बल बढ़ाने का उपाय किया है और अब तेरे शरीर में कोई दोष न रहेगा और दीर्घायु हो जाएगा।

Scientific Basis :- It is part of psychotherapy & generates good hormones in the body, which increases longivity of life. जिजीविषा ही निरोगता की ओर ले जाती है।

**४. मणिबन्धन :-** मणियाँ कण्ठ, मस्तक, शिर, नाभि और हाथ में बाँधी जाती है और इससे शरीर में धनात्मक ऊर्जा उत्पन्न होती है। मणियाँ चार प्रकार की होती हैं -

१. खनिज - हीरा, पन्ना, स्फटिक, नीलम आदि

२. सामुद्रिक - मूँगा, मोती आदि

३. प्राणिज - हाथी दाँत, गजमुक्ता, कस्तूरी, बाघ का नख, मोहरा।

४. वानस्पत्य - मूल, कन्द, फल की रस क्रिया से बना योग।

मणियाँ धारण करने के प्रयोजन :- तीन प्रयोजन मुख्य हैं -

१. भूषा - अलंकार

२. मन में प्रसन्नता, शान्ति और वीरता का प्रभाव आना।

३. रोगों को दूर करना (Cure) और उनको रोकना (Prevention)।

**मणियों का रोगों में प्रयोग :-**

१. आज्जनमणि (सूरमा की गोली) - से कामला, पाण्डु, सन्धिपात, निद्राक्षय, हृदय रोग, यक्षमज्वर, कफ और सर्पविष दूर करने में प्रयोग करते हैं।

२. शङ्खमणि - मानसिक रोगों, बल और दीर्घायु प्राप्त करने के लिए प्रयुक्त होती है।

३. अस्वृत मणि - से वीरता, तेज और पराक्रम की वृद्धि होती है।

४. जंङ्गिडमणि - के धारण से विष नाश, ज्वर, नेत्र रोग, हृदय रोग दूर होते हैं और दीर्घायु प्राप्त होती है।

५. पर्णमाणि से - सांग्रामिक साहस की वृद्धि होती है और स्वास्थ्य, दीर्घायु और बुद्धि विकास की प्राप्ति होती है।

६. शतवार मणि से - गर्भ सम्बन्धी रोग और पुत्रोत्पत्ति की शक्ति प्राप्त होती है।

७. औदुम्बर मणि से - क्षुधा रोग, गौवंश वृद्धि, भस्मक रोग और पुत्रोत्पत्ति की शक्ति प्राप्त होती हैं।

८. अभीवर्तमणि - के द्वारा शत्रु सेना पर आक्रमण किया जाता है।

९. दर्भमणि - से दीर्घायु प्राप्त होती है।

१०. वरणमणि - के धारण के हृदय रोग दूर होते हैं और स्वप्न भय से बचा जा सकता है।

११. फालमणि - से ऐश्वर्य, विभूति प्राप्ति और अन्न, गौ, पशुओं की वृद्धि में सहायता करती है। फालमणि हरा-भरा खेत रूपी भूमि है जो ऐश्वर्य प्रदायक है।

औदुम्बर - अर्थवेद काण्ड १९, सूक्त ३१ में अै० दुम्बार मणिका वर्णन है। उदुम्बर गूलर वृक्ष को कहते हैं।

मणियों के तीन प्रयोजन जो पहले बता चुके हैं, उनका विवेचन निम्न है -

भूषा-शोभा के प्रसंग में मणियाँ न केवल शरीर की शोभा बढ़ाती है अपितु वातावरण की भी शोभा बढ़ाती हैं जैसे -

कुर्सी-मेज आदि की शोभा के लिए, शंख, काचमणि आदि पदार्थ रखे जाते हैं। मकान की भूषा - शोभा के लिए बारहसिंगे का सींग, हाथी दाँत, हीरा-पन्ना आदि मणियाँ भित्ति और छत पर लगाई जाती है। ग्राम की शोभा के लिए एवं सार्वजनिक और पशुओं के हित के लिए गूलर का वृक्ष ग्राम और सार्वजनिक स्थलों पर लगाना चाहिए।

गूलर के फल के लाभ :-

१. गूलर के फल को अङ्कोल - बीज के तेल में पकाकर खाने से एक मांस तक क्षुधा नहीं सताती। योग में लाभदायक है।

२. पशुओं के गूलर फल खाने से उसके वंश की वृद्धि होती है।

३. गूलर के वृक्षों के द्वारा पशुओं की पुष्टि और औषधियों में दूध, रस-अन्न की वृद्धि होती है।

४. उदुम्बर (गूलर) समूह - गहिपत्य अग्नि है और इसकी छाया का सेवन, फल और पर्ण खाने से, गर्भस्थान और सन्तति शक्ति प्रदान करता है।

अभीवर्त मणि - शत्रु पर जिस साधन के द्वारा आक्रमण किया जाये, उसका नाम अभीवर्त है - यह धनुर्विद्या का स्वरूप है। इसमें मणिरूप में - गोले के रूप में, गन्धक आदि खनिज और जंगम और स्थावर विष द्वारा, अग्नि के द्वारा धुँआ करना है (Tear Gas) अर्थात् ध्रुमवायु फैलाना है।

जङ्गिड मणि :- जङ्गिड मणि एक वानस्पत्य मणि है। जङ्गि का अर्थ सोम औषधि है और इसके प्रयोग से आयुवृद्धि, विद्याप्राप्ति होती है। यह मणि विषदोषनाशक, कृत्रिम विषक्रियाओं का नाशक, कफ रोग ज्वर, शरीर की शिथिलता, हृदय रोग, नेत्र रोग और असाध्य रोगों में उपयोग करते हैं।

वरणमणि :- यह एक वानस्पत्य मणि है, जो छाती पर धारण की जाती है यह बुरे स्वप्नों और हृदय रोगों से रक्षा करती है।

आञ्जनमणि :- से कामला, पाण्डु, सान्धिवात, निद्राक्षय, हृदयरोग, यक्ष्म ज्वर, कफ और सर्पविष को दूर करने में उपचार में लाते हैं।

मणि का वैज्ञानिक आधार :- स्पष्ट है कि मणिबन्धन मिथ्या कल्पित तान्त्रिक, मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र था गण्डा-तावीज जादू का विषय नहीं है अपितु वैज्ञानिक, आयुर्वेदिक, शस्त्रविद्या और कृषि विज्ञान से सम्बन्ध रखने वाला महत्वपूर्ण विषय है।

अतः हम पाते हैं कि वेद का मणिबन्धन मिथ्याकल्पित तान्त्रिक, मन्त्र, यन्त्र, तन्त्र नहीं है या नक्शा-तावीज-गण्डा-जादू का विषय नहीं है, किन्तु वैज्ञानिक, आयुर्वेदिक, धुनर्विद्या, शस्त्रास्त्र विद्या से सम्बन्ध रखने वाला विषय है।

**५. कृत्या-अभिचार :-** यह सैन्य विज्ञान का स्वरूप है -

कृत्या - यह वह हिंसक क्रिया है, जो शस्त्रु सेना पर घात के लिए प्रयोग होती है जैसे आजकल कि मिशायल या ड्रोन वायुयान एवं बम।

अभिचार - किसी को खान-पान आदि में विष देकर, हिंसा करने का नाम है।

कृत्या - घातक कृत्याएँ पुतलियों के रूप में बनाई जाती हैं बाहर से स्त्री आदि प्रतीत हो, परन्तु अन्दर तोड़-फोड़ मचाने वाले घातक पदार्थ हो और दूसरे लोग उसे ठीक तरह से न समझने के कारण, उन पर आक्रमण कर दें, तब वे स्वयं फटकर शत्रु दल, मण्डल और नगर आदि में तोड़-फोड़ और आग लगाकर नुकसान पहुँचाती हैं।

कृत्या का सामान्य स्वरूप :- कृत्या के सम्बन्ध में लोगों के अन्दर एक भ्रम फैला हुआ है। जनसाधारण कृत्या को मन्त्र अर्थात् मूठ, जादू टोना समझते हैं। यह भ्रम अर्वाचीन तान्त्रिक लोगों ने फैलाया हुआ है। परन्तु प्राचीन तन्त्र ग्रन्थों में यह बात नहीं है। यहाँ मन्त्र से अर्थ/तात्पर्य किसी गुप्त अस्त्र-शस्त्र से है, जो शस्त्रु सेना पर घात कर सके। जैसे नाराच एक अस्त्र है और इसे मन्त्र नाम से कहा गया है। मुण्डूक उपनिषद में साल

ज्वालाओं का वर्णन है और इन ज्वालाओं का प्रयोग शत्रु सेना के नाश के लिए किया जाता था - यथा -

*काली कराली च मनोजवा च सुलोहिता या च।*
*सुधूम्रवर्णा स्फुलिङ्गिनी विश्वरूपी च देवी लेलायमाना इति सान्त जिह्वा।।*
*(मुडको० १।२।४)*

शत्रु सेना नाश के कार्यों में इन सात ज्वालाओं को काम में लाते हैं। अग्नि की ज्वालाओं द्वारा क्रूर हिंसा की जा सकती है। मन्त्र देखें - एताः सप्त युज्ज्यन्ति क्रूरकर्मसु मन्त्रिणः। अथर्ववेद में - "पुरोहित पुरुष - वैज्ञानिक विद्वान", राजा को संग्राम के लिए कृत्या-अभिचार की सम्मति देता है। मन्त्र दर्शनीय है -

*त मे देवाः पुरोहिताः प्रतीचीः कृत्या प्रतिसरै रजन्तु।* अथर्व० ८।५।५

कृत्या पृथिवी के पदार्थों से बनी हुई, गुप्त रूप में अल्पाकार होती है, परन्तु प्रयोग द्वारा आकाश में फैलकर बड़ा रूप धारण कर लेती है, पुनः मनुष्यों का घाव करती है। इस वर्णन से कृत्या एक गैस रूप घातक प्रयोग है - मन्त्र देखें -

*असद् भूम्याः समभवत तद् द्यामेति महद् व्यचः।*
*तद् वै ततो विद्युपायत्र प्रत्यक कर्तारमृच्छतु।।* अथर्व० ४।१९।६

कृत्या के प्रकार - यह दो प्रकार की होती है।

**१. विस्फोटक पदार्थों वाली :-** जो गिर मकानों, स्थानों आदि की तोड़-फोड़ करे आजकल के बम और मिसाइल और ड्रोन, इसी प्रकार की कृत्या है। इन्हें अंगिरस कृत्या कहते हैं।

**२. विष की वस्तुओं से प्राणी पर घात करने वाली कृत्या :-** इन्हें आसुरी कृत्या कहते हैं। आजकल के Biological Warfare इसी प्रकार की कृत्याहै। आजकल यह जैविकी बम *Clostridium botulinum, Bacillus arthracis* आदि जीवाणुओं से बनाते हैं।

**कृत्यायें कैसे प्रयोग की जाती हैं -**

**१. कच्चे निर्बल पात्र का प्रयोग :-** निकट स्थान पर या शीघ्र की जाने वाली कृत्यायें, कच्चे पात्र में विषयुक्त पदार्थों को भरकर की जाती हैं। यथा आजकल के पेट्रोल या सूतली बम।

**२. पक्के पात्रों का प्रयोग :-** कुछ दूर स्थान पर, किसी के द्वारा भेजने वाली या ऊँचे विमान से छोड़ी जाने कृत्यायें, पक्के पात्रों में प्रयोग की जाती हैं। यथा आजकल के एटम और हाइड्रोजन बम इत्यादि ब्रह्मास्त्र यही यंत्र है।

**३. माँस कृत्यायें :-** अधिक दूर स्थान पर, देर में परिणाम लाने वाली कृत्यायें, माँस में भेजी जाती है। माँस और जीवित कोशिकायें कीटाणु-दूध, जीवाणु, विषाणु के सम्वर्द्धन में सहायता करता है यथा - बाटलाईनम टॉक्सि (Botulinum Toxin) की एक किलोग्राम की मात्रा सारे संसार को नष्ट करने में सक्षम है। अतः माँस कृत्यायें, आजकल के जैविकीयुद्ध की द्योतक है। इससे अपार जन हानि होती है।

कृत्यायों का अथर्ववेद में उदाहरण -

*यां ते चक्रुरामे पात्रे यां चक्रुर्नीललोहिते।*
*आमे मांसे कृत्यां या कृत्याकृतो जहि।। (अथर्व० ४।१७।४)*

अर्थ - निर्बल पात्र में (चक्रुः) तेरे लिये जिस कृत्या को (आमे पात्रे) कच्चे पात्र में प्रयोग करते हैं, जिसको (नीललोहिते) नीले, लाल रंग के पात्र में, जिस घातक प्रयोग को (आमे मांसे) कच्चे मांस में करते हैं, उसी घातक क्रिया से, कृत्या करने वाले को मार।

सुश्रुत में शत्रुओं के घात के लिए 'विषकन्या' तैयार करने का वर्णन है।

कृत्या के प्रयोग स्थान -

*यदासन्द्यामुपधाने यद् वोपवासने कृतम्।*
*विवाहे कृत्यां यां चक्रुरास्नाने तां निदहमसि।। (अथर्व० १४।२।६५)*

अर्थ - (यत्) जो कि (आसन्द्याम्) कुर्सी में (उपधाने) सिरहाने में (यत = वा) और जो कि (उपवासने) उपवस्त्र चादर आदि ने (कृतम) किया है (विवाहे) विशेष वाहन-पालकी (आजकल ड्रोन जहाज) आदि सवारी में (आस्नाने) स्नान करने वाले जलाशय में (Pollution in Water) जिस कृत्य को करते हैं, उसे निराकृत करते हैं। कृत्यायों को अन्न के खेतों, पशुओं - गाओ और पुरुषों में भी विष क्रिया करने का वर्णन है यथा -

*अनयाहमोषध्या सर्वाः कृत्या अद्दुषम्।*
*यां क्षेत्रे चक्रर्षां गोषु यां वा ते पुरुषेषु।। (अथर्व० ४।१८।५)*

अर्थ - जिस कृत्या का घातक विष क्रिया को अन्न के खेत में, जिसको गौओं आदि पशुओं में और पुरुषों में, उन सब कृत्यायों को इस विष औषधि से दूषित करता हूँ।

कृत्या का लौटाना - अथर्ववेद में कृत्यायों के लौटाने का जो वर्णन है - वह दो प्रकार से हो सकता है -

(१) कृत्या के विषप्रभाव या घातक प्रभाव का शमन रूप।

(२) प्रत्याक्रमवरूप - अर्थात् शत्रु पर वैसा ही प्रयोग करना।

शमन रूप प्रतिकार औषधियों के द्वारा होता है। यथा - विषनाशक औषधियाँ।

प्रत्याक्रमण रूप अर्थात् शत्रु पर वैसा ही प्रयोग करना - यह अग्नि, विद्युत, सूर्य किरणों आदि के द्वारा की जाती है। यथा - प्रतिसरमणि - यह फेंकने वाला अस्त्र है जैसे आजकल का मशीनगन या टैंक। 'प्रतीची कृत्या प्रतिसरैरजतु' भावार्थ कृत्यायों को अनेक मणियों - गोलियों-गोलों से पीछे हटावे।

वैज्ञानिक आधार आधुनिक युग में, एन्टी मिसाइल टैक्नोलॉजी इसी आधारित है। आने वाला लेसर युक्त शास्त्र इसी पर आधारित होगी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अथर्ववेद में शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने की विद्या पूर्णतया उपलब्ध है और आधुनिक बम, विमान, मिसाइल, मशीन गन और टैंक की तरह ही है। अतः यह विद्या अथर्ववेद से ही निकली है। निष्कर्ष में ब्रह्मास्त्र, आग्नेयास्त्र, वैद्युतास्त्र, सौमास्त्र का अथर्ववेदीय वर्णन, कृत्यायों को लौटाने की विधि बतलाता है।

अभिचार :- किसी व्यक्ति के घात के लिए खान-पान में विष प्रयोग का नाम अभिचार है। यह बात अथर्ववेद के निम्न मन्त्र से स्पष्ट होती है।

*परित्वा पातु समानेभ्योभिचारात्सबन्धुभ्यः।*
*अमभ्रिर्भवामृतोतिजीवो मा ते हासि षुरसवः शरीरम्।। (अथर्व० ८.२.२६)*

अर्थ - समानाधिकार - समान पद वाले तथा बन्धु-बान्धवों से हुए अभिचार से खान-पान में विष प्रयोग से तेरी भेषज (चिकित्सक) औषध से रक्षा करें। उस अभिचार रूप विष प्रयोग से नमसे वाला, मरणरहित-स्वस्थ, दीर्घ जीवन वाला हो, प्राण तेरे शरीर को मल त्यागें।

अभिचार दूर करने का उपाय :- भी अथर्ववेद में बताया गया है -

*यत् त्वाभिचेरु पुरुष स्वो यदरणोजनः।*
*उन्मोचन प्रमोचने उभेवाचा वदामि ते।। (अथर्व० ५।३०।२)*

हे प्रिय, तेरे प्रति जो अपना मनुष्य और अन्य दुष्टजन अभिचार करते हैं - उसके उपचार के लिए अपनी वाणी से उन्मोचन या विष को बाहर निकालने के लिए और प्रमोचन अर्थात् शमन करने के लिए इन दो उपायों को बताता हूँ - यह दो उपाय है -

१. पेट में विष चले जाने पर उस विष पदार्थ को ऐसी औषधियों जिससे वमन (vomiting) तथा विरेचन (दस्त) किया जावे (उन्मोचन)।

२. दूसरा उपाय - उस विष पदार्थ के विषत्व (Toxic Effect) को अन्दर ही अन्दर शान्त करना इसके लिए मधु, घृत और संजीवनी औषधियों का प्रयोग करे इसे प्रमोचन या विष के प्रभाव को शान्त करना कहते हैं।

**अथर्ववेद में प्राकृतिक चिकित्सा :-** अथर्ववेद में आठ वसु या आठ वस्तुएं प्राकृतिक चिकित्सा के पदार्थ है -

**१. पृथिवी** - पृथिवी में विष मुख्यतः सर्वविष चूसने का गुण है। सर्प के काटे जाने पर, रोगी को भूमि में (शिर और गर्दन को छोड़कर) गद्दा खोदकर, श्वांस लेने के भाग को छोड़ कर गाड़ देने से सर्प विष दूर हो जाता है, पर इसकी वैज्ञानिकता की परीक्षा सिद्ध नहीं हुई है। सौराष्ट्रमृत्तिका वालों का काला, लम्बा और दृढ़ बनाता है। मिट्टी की पट्टी कई रोगों में प्रयोग की जाती है।

**२. जल :-** यह जले अंग पर तुरन्त शीतल जल डालने से अत्यन्त लाभ होता है। यह निद्राक्षय, नेत्र रोग, हृदय और मूत्र रोग में प्रयोग किया जाता है। निर्ज़लीकरण में शिकंजी रूप में लेने से Dehydration दूर हो जाता है।

**३. पावक (अग्नि) :-** यह शीत रोग और गर्म पट्टी से रुका हुआ मूत्र और प्रसव में सहायता करता है।

**४. वायु :-** यह स्वास्थ्यप्रद है और प्राणायाम द्वारा कई रोगों को दूर करता है। रक्तवाहिनी थ्रो के आंकुचन और संकुचन से वायु विकार दूर होते हैं।

**५. मेघ बादल :-** यह विष विनाशक है।

**६. चन्द्रमा :-** यह शान्ति प्रदान करता है और रुके हुए मूत्र के उत्सर्जन में सहायता करता है।

**७. विद्युत :-** इसके द्वारा कई रोग ठीक किये जाते हैं मुख्यतः Cardiac arrest

& Cancer radiotherapy & phototherapy for skin diseases (Photo dynamic treatment)

**८. सूर्य :-** इससे बच्चों की पीलिया, हृदय रोग, अपच, विटामिन डी की कमी, शिरो रोग और कृमिनाशक है। सूर्य की किरणें, तालाब, नदी और पोखरों के जल को परावैंगनी तरंगों द्वार Sterilize करती है।

**आयुर्वेद में औषधि चिकित्सा :-** प्रकृति की कई वनस्पतियाँ और औषधियाँ रोग निवारण में प्रयुक्त होती है जैसे चित्रक, अजश्रृंगी, अपामार्ग, आक, अर्जुन, शतावर, अश्वगन्धा, सर्पगन्धा, असिन्की (नीलनी), आसुरी (गौर सरसों), इन्द्रायण, अष्टवर्ग और पंचगव्य (गाय का दूध, घृत, मूत्र, दही, क्षाच) आदि-आदि विभिन्न रोगों में प्रयोग की जाती है। आयुर्वैदिक औषधियाँ काफी वृहद विषय है, अतः यहाँ विस्तार न करेंगे। अस्तु अथर्ववेद में वैज्ञानिकता कूट-कूट कर भरी हुई है, बस एक गहन चिन्तन और जीवन में धारण करने की आवश्यकता है। अतः वेदमन्त्रों का नित्य पठन-पाठन एवं मनन करें और अपने जीवन को उन्नति की ओर अग्रसर करें।

**वेदों में विद्यमान विद्या :-** शौनक सूत्र में विमानों का विस्तृत वर्णन है। तीन प्रकार के विमानों का वर्णन दर्शनीय है।

१. यान्त्रिक विमान (Mechanically Controlled Planes)
२. तान्त्रिक विमान (Electrically Controlled Planes)
३. मान्त्रिक विमान (Remotely Controlled Planes)

पच्चीस विमानों के नाम वर्णित है -

१. पुष्पक, २. अजमुख, ३. भ्राज, ४. यशामुख, ५. पंचवासा, ६. मयूर, ७. शंकर, ८. त्रियुक, ९. वसुहार, १०. पंचानन, ११. अम्बरीश, १२. त्रिशोत्र, १३. मेरुदण्ड, १४. स्वज्योतिमुख, १५. कौशिक, १६. भीष्म, १७. रेता, १८. वज्रांग, १९. दैवत, २०. ज्वल, २१. कोहाहल, २२. अर्चि, २३. भूषण, २४. सोमांक, २५. पंच वर्ण।

**जप विज्ञान :-** नाद ही ब्रह्म है। महाभाष्य में वाणी के चार भेद बताये गये हैं - परा, पश्यन्ति, मध्यमा, वैखरी।

**ध्यानावस्था में :-** "यदि ओ३म् का जप, उच्चारण करके किया जाता है - तो वह वैखरी वाणी जप कहलाता है, यदि जप को ओठों से उच्चारण न करके, कंठ से ध्वनि करते हैं, जो सुनी नहीं जा सकती, उसे मंध्यमा वाणी जप और यदि मानसिक ध्यान, मन द्वारा, ओ३म् के ध्यान में सब कुछ भूल जाना, पश्यन्ती जप और तन्मय अवस्था (ध्यात, ध्यान, ध्येय तीनों में पार कर लेना) में जप-परा वाणी जप कहलाता है।

**जप का वैज्ञानिक मूल :-** जप के कम्पन से, जीवित कोशिकायें अंग, प्रत्यंग ऊर्जावान (Enerzise) हो जाते हैं, और शारीरिक एवं मानसिक विकारों को दूर भगाते हैं।

**यज्ञ विद्या विज्ञान :-** सृष्टि का मूल तत्व अग्नि है। अग्नि के अन्दर Aerodynamic Power होती है, यज्ञ में आहूत, पदार्थों का वातावरण में बहुत दूर (८ से १५ मील) तक प्रसारण कर देती है जिससे हवन (अग्निहोम) में प्रयोग किये चारों तरह के पदार्थ -

सुगन्धित, पुष्टिकारक, मिष्ट और रोगनाशक पदार्थ, वातावरण में वितरित होकर, जीवाणु, विषाणु और कीटाणुओं को नष्ट कर देते हैं और यह वैज्ञानिकों ने पुष्टि भी प्रदान कर दी है। अतः अग्निहोत्र से वातावरण सुगन्धित और आरोग्यदायक हो जाता है।

**वेदों में सृष्टि विज्ञान :-** सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण के सामूहिक नामक को प्रकृति कहते हैं। यह प्रकृति दो प्रकार की है, क्षर एवं अक्षर। प्रलयावस्था में प्रकृति अक्षर रूप में होती है और सृष्टि उत्पत्ति में यह क्षर अवस्था में होती है। प्रलयावस्था में सत, रज, तम साम्यावस्था में रहते हैं। सृष्टि उत्पत्ति में, इन कणों में संघात पैदा हो जाता है, जो परमात्मा के तप और इच्छा से होता है। परमात्मा जड़ परमाणु, अणु त्रेसरणु को द्रव्यता और गति प्रदान करता है। सत-प्रकृति में ऋत-गति की क्रिया, जब ईश्वर अपने तेज शक्ति से उत्पन्न कर देता है, तब महत्त्व (विराट) की उत्पत्ति हुई, फिर उसी विराट् के सतोमय भाग से द्युलोक (सूर्य जैसे तेज वाले लोक) उत्पन्न हुए, मध्य के रजो भाग से आकाश एवं निस्तेज वाले चन्द्रलोक आदि उत्पन्न हुए और निम्न भाग के तमोमय भाग से पृथिवी उत्पन्न हुई। पृथ्वी पर फिर समुद्र, वनस्पतियाँ, संवत्सर (क्षण, मुहुर्त, प्रहर, मास, वर्ष आदि काल की रचना हुई फिर दिन और रात्रि के विभागों (पल, क्षण, घड़ी) की रचना हुई। तत्पश्चात् प्राणियों और मानव जाति उत्पन्न हुई। मानव अपने अच्छे और बुरे कर्मों से विभिन्न योनियों में जन्म होता है। एक सृष्टि की अवधि चार अरब साल होती है, इसे ब्रह्म की एक रात्रि कहते हैं।

**वेदों में चिकित्सा (स्वास्थ्यवृत्त) विज्ञान :-** स्वास्थ्य के तीन आधार है - १. आहार, २. निद्रा, ३. ब्रह्मचर्य।

**आहार :-** छान्दोग्य उपनिषद में कहा गया है -

*आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः सत्त्वशुद्धौ ध्रुवास्मृतिः।।*

शुद्ध आहार से अन्तः करण की शुद्धि, बल, पुरुषार्थ, आरोग्य और बुद्धि की प्राप्ति होती है एवं शुद्ध अन्तःकरण से स्मृति दृढ़ होती है। अथर्ववेद में चिकित्सा विज्ञान निहित है।

प्रकृति के नियमों के अनुसार चलना और मौसम के अनुसार आहार लेना, स्वास्थ्य के मुख्य सिद्धान्त है, जो निम्नवत् उदाहरणों से पुष्टि करते हैं -

१. मुस्कराते रहिये। प्रसन्नता से शरीर में एण्डॉफिन आक्सीटोसिन एवं डोपामीन उचित मात्रा में प्रवाहित होते हैं और स्वास्थ्य को दृढ़ रखते हैं।

२. ऊषापान एवं ब्रह्ममुहूर्त जागरण :- प्रातः उठकर २-३ गिलास जल पीने से Dehydration (निर्जलीकरण) कम होता है, खून की प्लेटलेट्स कणिकाओं का Aggregation कम हो जाता है जो हार्टअटैक से रक्षा करता है। प्रातःकाल उठने से निम्न लाभ हैं :-

- प्रातःकाल में सोने से Lipid Levels बढ़ जाते हैं, जो हार्ट अटैक कर सकते हैं। प्रातः उठने से हार्ट अटैक की सम्भावना काफी कम हो जाती है।
- प्रातः कम से कम चालीस मिनट भ्रमण करने से रक्तचाप कम होता है और दिल की

रक्तवाहिनियों में Collateral Blood Vessels बन जाते हैं, जो हार्ट अटैक को रोकते है।

भ्रमण से मधुमेह के रोगियों में Insulin receptors बढ़ जाते हैं जो शुगर नियंत्रण में सहायता करते हैं।

३. क्रोध न करें। मा क्रुधाः। क्रोध करने से Renin-Angeotension Aldosterone System Activate हो जाता है और रक्तचाप बढ़ा देता है।

४. फेफड़ों में प्राण ऊर्जा का प्रातःकाल में सर्वाधिक प्रवाह होता है। अतः प्रातः प्राणायाम् से शरीर स्वस्थ रहता है।

५. प्रातःकाल बड़ी आँत अत्यधिक क्रियाशील होती है अतः मल त्याग आसानी से होता है और कब्ज नहीं होती।

६. प्रातःकाल ध्यान से positive thinking सुदृढ़ हो जाती है।

उचित समय तक निद्रा का प्रयोग और वीर्य रक्षण से दीर्घायु प्राप्त करने में सहायता मिलती है। अतः वेदों की ओर लौटे और जीवन को सुखमय बनायें।

☆

## हम वेदों को रोज पढ़ें

(गीतकार : इंद्रदेव त्रिवेदी, बरेली)

दयानंद जी ने हमको, सच्ची बात बताई है।
सही राह पर चलने की, हमको राह दिखाई है।।

हम वेदों को रोज पढ़ें, स्वामी जी का था कहना।
सब वेदों की ओर बढ़ें, उनका था सबसे कहना।।
मानव का हित जिसमें है, ऐसी राह सुझाई है।।
दयानंद जी ने हमको.....

यज्ञकर्म हम रोज करें, स्वामी जी ने बतलाया।
शुद्ध रखें अंबर-धरती, हमको सबको सिखलाया।।
तम को दूर भगाने को, जीवन ज्योति जलाई है।।
दयानंद जी ने हमको.....

यज्ञ और इन वेदों की, रक्षा आवश्यक जग में।
जैसे भारत की रक्षा, अत्यावश्यक है जग में।।
आर्य जगत ने जीवन की, अभिनव कला सिखाई है।।
दयानंद जी ने हमको.....

(संदर्भ :- गीतकार इंद्रदेव त्रिवेदी जी ने आर्यसमाज बिहारीपुर के द्वारा आयोजित वैदिक सिद्धांतों का वैज्ञानिक चिंतन व्याख्यान माला ५ रविवार ३ फरवरी २०१३ को "वेदों में चिकित्सा विज्ञान का वैज्ञानिक व दार्शनिक चिंतन" विषय में के संदर्भ में यह स्वरचित काव्य प्रस्तुत किया था - संपादक)

# Animal Husbandry and Veterinary Science in Vedas and Vedic Period

**(A.K. Garg,** Principal Scientist, Animal Nutrition Division,
Indian Veterinary Research Institute, Izatnagar-243 122, U.P. India.)

Dr. Anil Kumar Garg belongs to a religious Arya Samaj family. During his illustrious career of 35 years as Scientist, Dr. Garg has done extensive research work and published/ presented more than 300 research papers. He has served various scientific bodies of India in different capacities like General Secretary, Treasurer etc. He has guided more than 25 Students for their Research work. Dr. Garg has been conferred with many Awards including *Go Seva Samman*, ANA Fellowship, and Leading Scientist of the World etc. He has also served as Member, Governing Body of Veterinary University, Mathura; Board of Studies, Allahabad Agriculture Deemed University, Allahabad and many other important bodies related to academics. He is also involved in large number of social activities. *- Editor*

Keeping and rearing of animals in our country is as old as our civilization. Archaeological evidences indicate that a high level of Animal Husbandry Science existed in the *Vedic* period. Information on the animal husbandry practices in the *Vedic* period can be traced in the *Vedas*, the oldest scriptures of the world. These *Vedas* also contain a good amount of information about various kinds of domestic animals kept by the Aryans. In the present article an effort has been made to compile some of the information available on Animal Husbandry and Veterinary Science aspects in Vedas and Vedic Period.

**Common Domestic Animals during *Vedic* Period**

*Vedic* literature shows that Aryans kept many domesticated species of animals such as cows, sheep, goat, camel, dogs etc. Beside *Vedas, Upanishads*, which are considered as pinnacle of *Vedic* thought, have detailed information about different aspects of the animals. In one of the *Upnishad 'Brahmana'*, the importance of animals and animal husbandry practices during *Vedic* era has been described in great details.

**Importance and Uses of Animals during *Vedic* Period**

The importance of the animals as wealth has been described in *the hymns of the Vedas. One such hymn of Atharveda* says "*May these auspicious ploughs bring us wealth in cows, sheep, chariots and well nourished and strong women*" (*Atharveda*, 88.1.7). Animals were used for different useful purposes like ploughing, irrigation, milk, ghee etc.

**Ploughing practices:**

There are at least 21 references related to ploughing in the *Rig Veda*,

most of which are in Books I and X. Ploughs were drawn by teams of 2 to 8 bullocks. When there were 8 bullocks, ploughing was done whole day. If bullocks number was 6, then ploughing would not be done for more then ¾th of the day; if number was 4, then not more than ½ day and if number was 2, then ploughing was done only for ¼th of the day.

**Irrigation**

Beside farm transport, bullocks were used for the purpose of irrigation too. There is a reference "*Tie the ropes tight to the waterpots, let us draw water from this unfailing well. Set up the cattle trough; bind the straps to it; let us pour out the water from the well, which is not easily exhausted*". These *kuccha* wells were probably a source of danger for unwary cattle and man. For this there is a prayer "*Let not, our cattle (Pashun) perish, let them not be injured, let them not be hurt by felling into a well*" (R., VI. 5.5.7).

**Food**

Milk formed a considerable part of the food, being taken in its natural state or mixed with grains. Ghee was much used for frying of food and for *Yagna*.

**Importance and Uses of Cows during *Vedic* Period**

In *Rigveda*, the oldest among *Vedas*, cow has been called '*aghanya*' i.e. not to be killed. In *Yajurveda*, the cow has been given the status of mother as it says that "*Go Matra Na Vidyati*" i.e. mother cow is beyond comparison. The importance of cows as an asset has also been cited in *Atharveda* in the words '*Dhenuh Sadanam Rayinam*' i.e. cow is the mine of wealth. There are a number of hymns in the *Vedas* indicating the economic importance of cows. Some of them are:

"*May we escape poverty by means of* ***cattle***" (R., X. 4.2.10).

"*Grant to us Indra wealth of barley and* ***cattle***" (R., X.3.13.7).

"*Shedder or rain, set open these clouds, set open the* ***cow*** *pastures, send us kine liberally*" (R., I.3.3.7, 8).

"*Givers of horses,* ***cows*** *and garments*" (R., V.3.10, 8).

"*Lord of wealth (Indra) visit us as of old to give us* ***cows****, horses and chariots*" (R., VIII. 6.4.10).

The 6th *Anuvaka* of the 8th *Mandala* of the *Rig-Veda* indicate the use of cows, mares, camels and horses as gifts; one of which is "*I have received sixty thousand horses and tens of thousands- a score of hundreds of camels, a thousand brown mares, and ten times ten thousand cows with red patches*". There are mentions that the singers were rewarded with cows.

The cows were milked thrice a day. Cows which gave abundant milk and which could be milked with ease are prayed for, thus: "*These white kine giving milk like wells*" (R., VIII. 7.10.3). "*I invoke the milch cow that is easily milked, that the handy milker may milk her*" (R. I. 22.8.26).

There is reference of some cows, which let down their milk merely on the sight of their calf; "*As a cow having a copious stream of milk yields, it coming into the presence of the calf*" (R., IX. 4.2.1).

Vocabulary of herd was very strong and scientific. There were specific and separate words for 'a cow with a strange calf' 'a cow barren after calving' 'a three year old ox' and so on. Cows with different colours like red, black, dappled and light coloured has been mentioned. Cows were usually identified by distinctive cuts in the ears. Castration of males was practiced and bullocks were used for farm transport.

**Eminent Animal Husbandry Experts, Veterinarians & Veterinary literature of the *Vedic* period**

The first Veterinarian was probably *Indra*, who treated a cow for dystokia. Later this knowledge was passed on to the Physician *Asvins*. The other eminent Veterinarians of *Vedic* period are *Salihotra*, *Palkapya*, *Nal*, *Krishna*, *Nakul*, *Sahdev* etc.

***Salihotra***

The first authentic work on veterinary science appears to be that of *Salihotra*. He was greatest Veterinarian of the ancient times and is called as 'Father of Veterinary Sciences'. He was an equine expert and equine medicine was his favorite subject. He had composed three books namely, *Haya-Ayurveda*, *Asva-prashasana* and *Asva-lakshansastrum*. These books were written in *Sanskrit*. Amongst these three works, *Haya-Ayurveda*, also known as *Turgarnasastra* or *Salihotra Samhita*, is the most famous. *It* has 12000 verses divided into 8 parts. Each part deals with different aspects of equine husbandry and medicine in detail. The works of *Salihotra* has been translated in many other languages like *Persean*, *Arabic*, *Tibetan* and English.

***Palkapya*:**

Rishi *Palkapya* belongs to the period of king *Dashratha*. He was an expert on elephants. He has compiled a voluminous work known as *Hasti Ayurveda* or *Gaj-Ayurveda* or *Palkapya Samhita*. This book too was written in *Devbhasha Sanskrit*. It has 4 parts, 152 chapters and about 10,000 verses, containing detailed information on anatomy, physiology, management, diets, diseases and surgical and medicinal treatments of elephants.

***Nal***

King *Nal* was ancestor of *Pandavas*. He is also known as *Asvateet*, i.e. who knows every thing about horses. According to some scholars King *Nal* wrote a book on equine medicines and its manuscript is said to be available in one of the library of Bombay Presidency.

***Krishna***

*Krishna* is also called '*Gopal*' i.e. Keeper of cows. *Gokul* and *Govardhana* were the work places of *Krishna*. Large herds of cows were

kept at these places for different specific purposes. *Krishna* was also a horse expert as he treated and cured the horses of *Arjun* during the war.

***Nakul* and *Sahdeva***

During *Mahabharata* period we had two great veterinarians *Nakul* and *Sehdev*. *Nakul* was a horse expert and *Sehdev* was expert in cattle. It is believed that *Aswini* brothers trained *Nakul and Sehdeva*. *Nakul* has summarized his experiences on horses in a book known as *Asva-chikitsa*. This book too is in *Sanskrit*. The book contains detailed information on equine husbandry and therapeutics. There is another book, *Nakul Samhita*, where works of *Nakul* on various Animal Husbandry practices have been compiled.

**Classification of aliments and their Treatment in the Vedic Literature**

Like *Ayurvedic* literature, the *Hasti-Ayurveda* classifies the ailments of elephants in to two broad classes i.e physical (*Adhyatmika*) and accidental/ incidental (A*gantuka*).

According to *Atharveda*, there are two systems of medicine, the first magico religious medicines and second was the system of drugs. Several hymns in *Atharveda* indicate that *Aryans* have knowledge of using certain herbs as medicine for the treatment of their animals. For instance use of *Aparmarga* (*Achyrantes aspera*) for digestive disorder and *Kushte* (*Costus specious arabicus*) for fever has been mentioned. *Munja* grass was prescribed in dysenteric ailments. Plant *Arundhati* has been referred to have wound healing properties.

*Hasti-Ayurveda* mentions application of three different types of medicines depending upon their sources for the treatment of different kind of diseases in the elephants i.e. (i) herbal (ii) animal and (iii) earthy.

The herbal medicines consists of roots, stalks, shoots, pith, barks, leaves, flowers, fruits, thorns, juices, exudation, oils, ashes etc. of the trees and creepers. Among the plants and creepers used as medicines are *pippall, vilva, sriparni, vetasa, trikatuka, brimhah, tila, sali, mahanpanchamula, tribut, amartaka, adhaki, satvan, prishiparni, chitrak, tulsi, ashoka, neem* etc. The animal origin medicines includes marrow, fat, milk, urine, blood and skin of animals like fish, pig, hog, buffalo, goat, dog, cow, river dolphin, turtle, snakes, horse, camel, parrot, deer, tiger, sheep, scorpion etc. The earthy types of medicine include various salts, minerals, soil, mud and water.

These medicines were administered to the elephants in at least eight different forms (i) ointment (*Varti*) (ii) decoction (*Kasva*) (iii) paste (*Kalka*) (iv) ghee (*Ghrita*) (v) oil (*Tails*) (vi) juice (*Rasa*) (vii) powder (*Churana*) (viii) incensa (*Dhupa*).

The principal methods of application of medicines were (i) *Sastrakarman*-applied with the help of surgical instrument, (ii) K*sarkarman*-used as caustics and (iii) *Agnikarman*-applied as cauterization.

★

# यज्ञ का वैज्ञानिक दार्शनिक चिन्तन

(आचार्य रामदेव शास्त्री, प्रख्यात आर्य विद्वान, बरेली)

(संदर्भ एवं परिचय :- आचार्य रामदेव शास्त्री जी संस्कृत एवं वेद उपनिषद आदि आर्षग्रन्थों के प्रख्यात दार्शनिक विद्वान है। संस्कृत विद्यालय में प्राध्यापक के रूप में कार्यरत है। आर्यसमाज बिहारीपुर के द्वारा आयोजित वैदिक सिद्धान्तों का वैज्ञानिक चिन्तन व्याख्यान माला चतुर्थ रविवार २७ जनवरी २०१३ को "यज्ञ का वैज्ञानिक दार्शनिक चिन्तन" विषय पर सारगर्भित प्रामाणिक व्याख्यान प्रस्तुत किया जिसको आलेख के रूप मे प्रस्तुत किया जा रहा है - सम्पादक)

विश्व की सम्पूर्ण रचना, उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय का चक्र यथा पूर्वम जिस व्यवस्था से चला आ रहा है। आगे चलता रहेगा, पीछे चलता चला आया है। उसको वेद के शब्दों में यज्ञ कहते हैं। इस प्रकार संसार में एक विशाल यज्ञ चल रहा है।

सृष्टि की इच्छा से परमेश्वर ने सत्, रज, तम को साम्यावस्था में लाकर अग्नि से जब सृष्टि यज्ञ का शुभारम्भ किया तो वही यज्ञ उत्पत्ति का कारण सृष्टि यज्ञ कहलाया। भूमि पर वृक्षों, वनस्पतियों, औषधियों, नदियों, पशु पक्षियों ने अन्तरिक्ष में इन्द्र वायु के सहयोग से मेघों ने द्यू लोक में सूर्य, चन्द्र, नक्षत्रादिकों ने शीत और प्रकाश देकर यज्ञ का शुभारम्भ किया। वही अग्नि स्वरूप परमात्मा ने अग्नि ऋषि के अन्तःकरण में अग्नि शब्द से वेद ज्ञान का शुभारम्भ किया।

*अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् होतारं रत्नधातमम्।*

अग्नि अग्रणी सर्वोत्तमः सर्वेषु यज्ञेषु यास्क ने स्थौलाष्ठीवि ऋषि के मत से अग्नि शब्द का अग्रणी सबसे उत्तम अर्थ किया है। अर्थात् जिसका सब यज्ञों में पहले प्रतिपादन होता है। इसलिए अग्नि सर्वोत्तम है। यह अग्नि वृषो अग्नि अश्वो ह वा एष भूत्वा देवेभ्यो यज्ञं वहति। वृषवद्यानानां वोढत्वाद्वृषोऽग्नि सतपथ के इस प्रमाण से यह अग्नि बैल के समान सब देश देशान्तरों में पहुँचाने वाला होने के कारण वृष और अश्व भी कहाता है। यही अग्नि यज्ञ के हव्य को अंतरिक्ष तक पहुँचाता है। इसीलिए यह अग्नि ही सब यज्ञों में सर्वोत्तम और पूज्य है। संसार में मानव ने जब सर्वप्रथम आंख खोली तो प्रकाश का दर्शन हुआ। ब्रह्मा आदि ऋषियों ने चिन्तन किया यह चर-अचर सम्पूर्ण संसार कैसे सुखी रहे। इस सुख के लिए कौन-सा ऐसा छोटा-सा उपाय सम्भव हो सकता है ? तो समझ में आया कि अग्नि ही अग्रणी और सर्वोत्तम है। यह समस्त जगत अग्नि से ही गतिमान है। बिना अग्नि के प्रकाश असम्भव है। इसीलिए ऋषियों ने प्रत्यक्ष दर्शन का प्रयास अर्थात् खोज की। अग्नि की खोज से प्रथम जल, थल, वायु, आकाश, प्रत्यक्ष वर्तमान था। परन्तु अग्नि परमेश्वर वत् प्रत्यक्ष होते हुए अप्रत्यक्ष था। अग्नि के प्रत्यक्ष होते ही यज्ञेन यज्ञमय जन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ऋषियों ने परमेश्वर की आज्ञा अनुसार यज्ञेन अर्थात् यज्ञ से यज्ञ किया तो वही यज्ञ आर्यो का प्रथम धर्म अर्थात् कर्त्तव्य बन गया। वेदों का सम्पूर्ण ज्ञान यज्ञ में सन्निहित है जिस कारण स्वर्ग कामो यजेत् की इच्छा से ऋषियों ने मुनियों ने देवों ने दैत्यों ने राक्षसों से रंक से राजा तक सब ने अपनी कामनाओं के साथ-साथ लोक

कल्याण की इच्छा से यज्ञ का शुभारम्भ कर दिया। सतयुग में राजा हरिश्चन्द्र ने यज्ञ में सब कुछ समर्पण कर अमर हो गये। पश्चात् राजा सगर के जब ९९ अश्वमेध यज्ञ पूर्ण हो गये। तो १००वें अश्वमेध की इच्छा से अर्थात् अश्वम् वै राष्ट्र अर्थात् चक्रवर्ती सम्राट बनने की इच्छा से युद्ध की घोषणा की। इस घोषणा से इन्द्र चिन्तित हो गये। अरे राजा सगर के १०० अश्वमेध यज्ञ पूर्ण हो गये। तो मेरा इन्द्र का पद राजा सगर के पास चला जायेगा राजा सगर इन्द्र हो जायेंगे। उस समय भी राजनीति चलती थी। राजा सगर का १००वाँ अश्वमेध अपूर्ण रह गया। सगर इन्द्र नहीं बन सके। इस इच्छा की पूर्ति हेतु सगर के अंशुमान, अंशुमान के असमंजस, असमंजस के भगीरथ, भगीरथ के दिलीप, दिलीप के रघु, रघु के अज, अज के दशरथ, दशरथ के राम, इन सबने अनेक बार अश्वमेध यज्ञ कर सम्पूर्ण संसार को जीतकर चक्रवर्ती आर्य सम्राट बने। राम के घोड़े को रोकने के लिए अर्थात् राम की दिग्विजय सैनिक यात्रा को रोककर लव ने अपने बल का कीर्तिमान स्थापित किया था। राजा रघु का साम्राज्य जगत प्रसिद्ध है। जब राजा रघु ने सर्वमेध यज्ञ किया था। उस समय वरतन्तु ऋषि के आश्रम में कौत्स नामक ब्रह्मचारी विद्या अध्ययन कर रहा था। १४ विद्यायें पूर्ण होने पर अपने गुरू से विद्या के बदले कुछ गुरु दक्षिणा लेने को कहा। गुरू के बार-बार मना करने पर जब कौत्स नहीं माना तो वरतन्तु ने कहा - बेटा मैंने तुझे १४ विद्यायें दी हैं। इन १४ विद्याओं के बदले मुझे १४ करोड़ स्वर्ण मुद्रायें दे दो। यह सुनकर कौत्स हैरान हो गया। वो राजा रघु के पास चला गया। राजा रघु सर्वमेध यज्ञ में सबकुछ अपने राष्ट्र को समर्पित कर चुके थे। अब उनके पास मिट्टी के पात्र और तिनकों की चटाई मात्र शेष रह गयी थी। फिर भी कौत्स के आने का आशय समझकर आदर पूर्वक कौत्स को आसन और स्थान दिया। राजा रघु ने विचार किया। यदि मेरे दरवाजे से कोई याचक रिक्त हस्त वापस चला जायेगा। तो मेरे होने का कोई अर्थ नहीं है। अर्थात् मेरा यज्ञ अपूर्ण रह जायेगा। कुछ ही क्षणों में याचक को १०० करोड़ स्वर्ण मुद्रायें देकर अपने यज्ञ को पूर्ण किया। यश ही जिनका धन था। ऐसे राजा रघु ने यज्ञ से स्वयं वा राष्ट्र की कामनायें पूर्ण कीं। हम आज भी ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। कामनायें पूर्ण होवें। दशरथ का पुत्रेष्टि यज्ञ जगत प्रसिद्ध है। एक बार राजा दशरथ ने अपने गुरू वशिष्ठ से कहा - प्रभु मेरा यह सम्पूर्ण राज्य, धन, दौलत, खजाना, घोड़े, हाथी सन्तान के बिना सब कुछ व्यर्थ है। अब जीवन की कोई इच्छा नहीं है। प्रभु यदि हो सके तो कोई उपाय बताओ। वशिष्ठ ने कहा - राजन् इसमें चिन्तित होने की क्या बात है एक लम्बे समय के बाद जिस समय की तुम्हें तलाश थी वो समय अब आ गया है। आपके राज्य में श्रृंगी नामक ऋषि निवास करते हैं। वह वाणी के धनी हैं। उनके द्वारा किया गया पुत्र कामेष्टि यज्ञ निःसन्देह पूर्ण होगा। जाओ उन्हें सम्मानपूर्वक लेकर तो आओ। राजा दशरथ क्षण भर में धनुष बाण हाथ में लेकर जैसे ही चलने को उद्यत हुए वैसे ही वशिष्ठ ने कहा - राजन ठहरो। विद्वान सो हि देवाः। विद्वानों को लाने के लिए राजा बनकर नहीं याचक बनकर जाना होगा। दशरथ नंगे पैर दौड़ पड़े श्रृंगी ऋषि की ओर। श्रृंगी ऋषि के आश्रम में राजा दशरथ जैसे ही पहुँचते हैं। राजा दशरथ के खून से लथपथ पैर और कंटकों से फटे वस्त्रों को देखकर श्रृंगी राजन के व्यथित भावों को पहचान जाते हैं। समय से दिव्य औषधियों द्वारा पुत्र कामेष्टि यज्ञ कर राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न को समय से यज्ञ शेष के रूप में प्राप्त कर यज्ञ की शाश्वत् परम्परा को सार्थक किया। एक बार राजा दशरथ से पूछा - राजन् आपके राज्य में

कभी अतिवृष्टि नहीं होती। अनावृष्टि भी कभी नहीं होती। उल्कापात भी कभी नहीं होता। कभी कोई दैवी आपदा नहीं आती। असमय में कभी किसी की मृत्यु नहीं होती। स्त्रियाँ कभी विधवा नहीं होती। जंगलों में पशुपक्षी कभी रुदन नहीं करते। सर्वत्र सुख और शान्ति है। इसका क्या कारण है? राजा दशरथ ने कहा - मेरे राज्य में सर्वत्र सुख और शान्ति का एक ही कारण हैं। कि मेरे राज्य के प्रत्येक घर में नित्य यज्ञ होते हैं। भगवान श्रीकृष्ण से अर्जुन ने पूछा - प्रभु संसार में प्राणियों के जीवन का आधार क्या है ? कृष्ण ने उत्तर दिया - अन्नाद् भवन्ति भूतानि, संसार मे प्राणियों के जीवन का आधार अन्न है। अर्जुन ने पुनः प्रश्न किया ? अन्न का आधार क्या है ? भगवान कृष्ण ने कहा - पर्जन्य अन्न सम्भवः बादलों से अन्न उत्पन्न होता है। अर्जुन ने फिर प्रश्न किया ? बादलों का कारण क्या है ? भगवान कृष्ण ने कहा - यज्ञात् भवन्ति पर्जन्यः। यज्ञ से बादल उत्पन्न होते हैं और बादलों से वर्षा होती है। वर्षा से अन्न उत्पन्न होता है। इसलिए हे अर्जुन यज्ञ में ही सब कुछ प्रतिष्ठित है यदि तुम साम्राज्य के स्वामी बनना चाहते हो। और सुखी साम्राज्य देखना चाहते हो तो यज्ञ करो। महाभारत काल के बाद वेद विद्या के लुप्त हो जाने से यज्ञों की परम्परा टूट गयी और भारत देश में घोर अंधेरा छा गया। ऐसे कठोर काल में स्वामी दयानन्द का आविर्भाव हुआ। ऋषियों की परम्परा को पुनः प्रचारित करने और यज्ञ और वेदों पर श्रद्धा उत्पन्न करने के लिए चारों वेदों की २०४१४ ऋचाओं का अवलोकन किया। पाणिनी व्याकरण से शब्दों के अर्थों का सम्बन्ध स्थापित किया। ऋषि ने सोचा यज्ञ के माध्यम से वेदों की शिक्षा को घर-घर पहुँचाया जाये। इसके लिए शुद्ध भाषा की अति आवश्यकता समझी कि क्योंकि अशुद्ध मन्त्र उच्चारण से वेदों की सार्थकता सिद्ध नहीं होगी। और यज्ञ से पूर्ण होने वाली कामनायें निष्फल हो जायेंगी। ऋषि ने यज्ञ को यज्ञ और होम को घोम कहते सुनकर वर्णोच्चारण नामक पुस्तक की रचना की और उसमें ग्रस्तं-निरस्तम् व्याकरण महाभाष्य का उदाहरण देकर विस्तार से दोष रहित स्वर वर्णों की शिक्षा अंकित कर दी थी।

ऋषि दयानन्द ने यज्ञ की वैज्ञानिक व्याख्या करके बताया कि यज्ञ यज धातु से बना है। जिसका अर्थ देव पूजा, संगति करण और दान है। जो बड़े अर्थात् देव तुल्य विद्वान है वो पूजनीय है जो समान आयु वाले है। वह मैत्री के योग्य है और जो छोटे है वे विद्या आदि दान के योग्य है। इस प्रकार सामाजिक व्यवस्था का सम्यक् चित्रण किया है। इस सामाजिक व्यवस्था को और सुदृढ़ बनाने के लिए पंच सत कर्म अर्थात् पंच यज्ञों की व्यवस्था बताई। पंच महायज्ञों में ब्रह्म यज्ञ, देव यज्ञ, पितृ यज्ञ, अतिथि यज्ञ, बलवैश्व देव यज्ञ है।

ब्रह्म यज्ञ का दूसरा नाम संध्या और तीसरा स्वाध्याय है। इन सबका नाम ब्रह्म यज्ञ है। संध्या में यज्ञ की वेदी पर प्राणों की समिधा से ज्ञान की अग्नि के द्वारा मन की चंचलता का होम किया जाता है। तब मन एकाग्र होकर समाधिस्थ होता है। फिर अंतर प्रार्थनाओं से अंतर में छिपा परमात्मा अंतर में ही प्रकट हो जाता है। जो इस जीवन का उद्देश्य है। दूसरा यज्ञ देव यज्ञ के नाम से जाना जाता है। जिसे अग्नि होत्र भी कहते हैं। जिससे सबको आरोग्य सुख की प्राप्ति होती है। इसलिए इसे भैषज्य यज्ञ कहते हैं। गोपथ ब्राह्मण के अनुसार हर ऋतु सन्धि पर नाना प्रकार के रोगों की उत्पत्ति होती है। उन रोगों को शान्त करने के लिए ऋतु के अनुकूल काष्ठादि औषधियों के द्वारा यज्ञ करके ज्वर, अतिसार, देह, पीड़ा, चेचक, हैजा, प्लेग को दूर किया जाता है। ऐसे ही चरक और बृहन्निघण्टु के अनुसार, लोवान, किशमिश, खाड, सोमलता, चिरायता आदि औषधियों को अग्नि से भस्म करने से राज यक्ष्मा जैसे भयंकर रोग नष्ट होते हैं। ऋषि दयानन्द ने जातकर्म संस्कार में

नील रोग जैसे असाध्य रोगों को नष्ट करने हेतु जन्म के समय सरसों और चावल से होम करने की वैज्ञानिक व्यवस्था दी है। सहस्त्र गुना अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए विधिपूर्वक वैदिक मन्त्र उच्चारण सहित यज्ञाग्नि में औषधि रूप आहुति दी जाती है। जिससे रोगी के हृदय पर शब्द का प्रभाव होकर आरोग्यता हो जाती है। अग्नि में भस्मसात औषधियों की गन्ध वायुकोष से प्राणवायु फिर रक्तकोष में प्रविष्ट होकर रक्त को शुद्ध करती है। यज्ञानुष्ठान से रक्तशोधन की इस सहज प्रक्रिया से प्राणवायु की अभिवृद्धि होती है। यज्ञ में बोले जाने वाले शब्द वायुर्वा अग्नि वायु और अग्नि के संयोग से वायुर्देवेभ्यो हव्यं वहति वायु सर्व शब्द व्यवहारं श्रावयति अर्थात् वायु और अग्नि के सहयोग से शब्द और हव्य पृथ्वी से द्यू लोक तक जाता है। जिससे वायु और ध्वनि प्रदूषण दूर होकर चर प्राणि मात्र के जीवन की रक्षा होती है। इसलिए यज्ञ को संसार का श्रेष्ठतम् कर्म कहा है। यदि ऋषि दयानन्द की माने तो यज्ञः कर्तव्यः इतीयमप्याज्ञा तेनैव दत्तास्ति, तामपि यः उल्लङ्घयति सोऽपि पापीयान् सन् क्लेशवांश्च भवति। ईश्वर ने मनुष्यों को यज्ञ करने की आज्ञा दी है। इसको जो नहीं करता अर्थात् जो यज्ञ नहीं करता वह पापी होकर दुख का भागी होता है और यज्ञ करने से समस्त जगत का अत्यन्त उपकार होता है। जैसे दाल और शाक आदि में सुगन्धद्रव्य और घी इन दोनों को चमचे में अग्नि पर तपा के उनमें छोंक देने से वे सुगन्धि हो जाते हैं क्योंकि उस सुगन्ध द्रव्य और घी के अणु दाल आदि पदार्थों को औषधि रूप में बदल देते हैं जिससे वह पुष्टि कारक हो जाते हैं। वैसे ही यज्ञ से जो भाप उठता है, वह भी वायु और वृष्टि के जल को निर्दोष और सुगन्धित करके सब जगत को सुखी करता है। इससे यज्ञ ही परोपकार के लिए सर्वोत्तम होता है। एक अग्निहोत्र के बिना समस्त संसार अधर्म, पाप और अन्याय दुख भोग रहा है। इसलिए मन, आत्मा और शरीर की पवित्रता के साथ-साथ सकल ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए अन्तःकरण से अति श्रद्धा के साथ नित्य अग्नि होत्र करना मानव का परम धर्म है। इससे अतिथि क रूप अग्नि को नित्य प्रकाशमान करके सबका उपकार करो। ★

(आर्यसमाज बिहारीपुर के द्वारा आयोजित शारदीया संगोष्ठी में काव्य पाठ करते आचार्य रामदेव शास्त्री)

# ईश्वर की सर्वव्यापकता का दार्शनिक चिन्तन

(आचार्य अवनीन्द्र शास्त्री, बरेली)

(प्रसंग एवं परिचय :- आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान आचार्य अवनीन्द्र शास्त्री जी मूलता बरेली के निवासी है, बाल्यावस्था से वैदिक विचारों से ओत-प्रोत व सिद्धान्तों का गहन अध्ययन किया है। आर्यसमाज बिहारीपुर, बरेली द्वारा आयोजित वैदिक सिद्धान्तों का वैज्ञानिक चिन्तन व्याख्यान माला (२) में रविवार १३ मार्च २०१३ को "ईश्वर की सर्वव्यापकता का वैज्ञानिक दार्शनिक चिन्तन" विषय पर सारगर्भित व्याख्यान प्रदान किया था जिसको सार रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। - सम्पादक)

वेदों को अलग करके हम ईश्वर की सर्वव्यापक सिद्ध नहीं कर सकते हैं क्योंकि वेद परमात्मा की वाणी है। मनु महाराज ने कहा भी है कि "धर्मतत्व जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुति" धर्मतत्व के जिज्ञासुओं के लिए वेद परम प्रमाण है। तो आइए आयुर्वेद के चालीसवें अध्याय की प्रथम ऋचा के माध्यम से परमात्मा की सर्वव्यापकता का विचार करते हैं -

*ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत।*
*तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।।*

भावार्थ - जो कुछ इस नाशवान संसार में खण्ड या अखण्ड पदार्थ है वे सब ईश्वर से प्राप्त या ईश्वर से ढके हुए हैं अर्थात् परमात्मा हर वस्तु में विराजमान है। पर्वत की कोई ऐसी गहरी से गहरी गुफा नहीं जिसमें भगवान विद्यमान न हो, समुद्र का कोई गहरे से गहरा तल ऐसा नहीं जहाँ परमात्मा न हो। पर्वतों का कोई शिखर ऐसा नहीं जो परमात्मा से अलग हो। सूर्य, चन्द्र, तारागण आदि जितने लोक हैं सब जगह परमात्मा विद्यमान है। मनुष्य परमात्मा से कहीं भी छिप नहीं सकता है।

जो लोग ईश्वर की आज्ञा के चलते हैं अर्थात् ईश्वर का त्याग कर देते हैं वे जन्म-मरण के दुःखों को भोगते हैं। प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि परमात्मा को सब स्थानों पर विद्यमान मानकर और उसका उल्टा मानने का दुःखों का मूल समझकर पाप करने के लिए कभी तैयार न हो और किसी का धन लेने की इच्छा न करें। परमात्मा का नियम है कि हर एक मनुष्य को उसके कर्मों के अनुसार भोग मिलता है और कोई मनुष्य उसके विरुद्ध यत्न करने से भोग पा नहीं सकता। दूसरों का धन लेने की इच्छा से पाप तो अवश्य होगा किन्तु भोग में भेद न होगा। इसी को कहते हैं "भक्षि तेपि लशुने न शान्तो व्याधिः" (लहसुन खाकर भी रोग न हटा)

किसी वादी ने प्रश्न किया - इस मन्त्र में परमात्मा से सर्वत्र विद्यमान होना या सर्वव्यापक होना बताया गया है। परन्तु हमें परमात्मा दिखाई नहीं देता। हम तुम्हारे इस को माने या अपनी आँखों से देखे हुए पदार्थों को माने - इस प्रश्न का उत्तर तत्काल ऋषि ने समाधान करते हुए पूछा - हे प्रत्यक्षवादिन परोक्षद्विषन् ! सुनो और बताओ "यानि हि इन्द्रियाणि प्रत्यक्ष साधनानि, तानि हि नो प्रत्यक्षाणि" जो इन्द्रियाँ प्रत्यक्ष का साधन है वे स्वयं ही प्रत्यक्ष नहीं है। क्या तुमने कभी आँख को जो सब रूपवान और रूपों को दिखाती है उसे

देखा है।

अरे भाई जिनको तुम देख रहे हो वह तो इन्द्रियों के गोलक हैं। इन्द्रियों के रहने का ठिकाना है, इन्द्रियाँ नहीं। तुम्हारे प्रत्यक्ष को कैसे प्रमाण माना जाये। बहुत से पदार्थ सूक्ष्मता या हरी आदि के कारण इन्द्रियों से नहीं जाने जाते हैं, किन्तु उनका सत्ता स्वीकार करते हैं, जैसे - बुद्धि, सुख, दुःख आदि। इससे सिद्ध होता है संसार में कुछ ऐसे भी पदार्थ हैं जिनको इन इन्द्रियों से नहीं जान सकते। उनमें से एक ईश्वर है और यह जो प्रश्न है परमात्मा कहाँ है सर्वथा अनुचित है। क्योंकि कहाँ शब्द सीमित परिमित के लिए आता है। मन्त्र ने परमात्मा असीमित अपरिछिन्न बतलाया है। कोई पूछे दूध में घी या मिश्री में मिठास कहाँ है? उत्तर होगा सर्वत्र इससे सिद्ध होता है। कहाँ का आक्षेप एक देशी पदार्थों पर होता है सर्वव्यापक पर नहीं।

इसी बात की पुष्टि में हम महर्षि पतंजलि महाराज के योगदर्शन के सूत्र को देखें - "पूर्वेषामयि गुरुः कालेनानव च छेदात" जैसे ब्रह्मादि देवता तथा अङ्गिरादि ऋषि सृष्टि तथा प्रलय से उत्पत्ति नाश होने से काल परिच्छिन्न हैं वैसे परमात्मा नहीं है क्योंकि वह सदा विद्यमान रहने से काल परिच्छेद रहित है। अतः ब्रह्मादि देवों को अङ्गिरादि, ऋषियों को उत्पन्न करके उनके हृदय में प्रकाश करने से परमेश्वर उन सबका गुरू है। इसी बात को श्वेताश्वेतर उपनिषद प्रमाण देखें -

(आर्यसमाज बिहारीपुर द्वारा आयोजित वैदिक सिद्धान्तों का वैज्ञानिक चिंतन व्याख्यानमाला में बोलते आचार्य अवनीन्द्र शास्त्री)

*यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै।*
*तं ह देनमात्मबुद्धि प्रकाशं मुमुक्षुर्वै शरणमहं प्रपद्ये।।*

जो परमात्मा सृष्टि के आदि में ब्रह्मा को उत्पन्न करता है और उनके हृदय में वेद से ज्ञान का प्रकाश करता है। उस आत्म बुद्धि के प्रकाशक देव की शरण को मैं मुमुक्षु प्राप्त होता हूँ।

*जपाजि यादो जवनोग्रहीता पश्यत्यचक्षुः स श्रृणोत्यकर्णः।*
*स वेत्ति विश्वं न च तस्यास्ति वेत्ता तमाहुरग्रयं पुरुषं पुराणम्।।*

यह उपनिषद वचन है - परमात्मा के हाथ नहीं परन्तु अपनी शक्तिरूप हाथ से सबका सृजन ग्रहण करना, पग नहीं परन्तु व्यापक होने से सबसे अधिक वेगवान, चक्षु का गोलक नहीं परन्तु सबको देखता है, श्रोत्र नहीं तथापि सबकी बातें सुनना, अन्तःकरण नहीं परन्तु सबको जानता है और उसको अवधि सहित जानने वाला कोई भी नहीं। उसी को सनातन सर्वश्रेष्ठ सबमें पूर्ण होने से पुरुष कहते हैं। इन्द्रियों और अन्तःकरण के बिना सब काम अपने अनन्त सामर्थ्य से करता है। ★

# वेदोक्त सृष्टि विज्ञान

(ओमु आर्य, एम.ए., शास्त्री)

(परिचय :- आर्यसमाज के कर्मठ व्यक्तित्व एवं सिद्धान्तवेत्ता ओम आर्य जी गहन अध्ययनशील, लेखक एवं वैदिक विचारधारा में अटूट निष्ठावान हैं। आर्यसमाज बिहारीपुर के वर्षों कोषाध्यक्ष के पद पर रह चुके हैं तथा रेलवे में गार्ड के पद से अवकाशप्राप्त हैं। सृष्टि विज्ञान पर आपकी पुस्तक घूड़मल प्रहलाद कुमार आर्य प्रकाशन, हिण्डौन सिटी के द्वारा प्रकाशित हुई है - सम्पादक)

**रचना पूर्व की अवस्था :-** इस विषय का वैज्ञानिक वर्णन ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में निम्नवत् प्रकार है -

*नासदा सीन्नो सदासीत् तदानीं नासीद्रजो तो व्योमा परोयत्,*
*किमावरीवः कुछ कस्य शर्मन्नम्भः किमासीद् गहनं गभीरम्।*
*न मृत्युरासीदभृतं न तर्हि न रात्र्या अहन् आसीत् प्रकेतः,*
*आसीद्वातं स्वध्या तदेकं तस्माद् धान्यन्न परः किं चलासः।।*

*-ऋ० १०.१२९.१,२*

अर्थात् सृष्टि के आदि में जगत् रचना से पहले जो दूर तक अन्तरिक्ष में कुछ भी अमूर्त नहीं था, ना ही मूर्त था। छोटे-छोटे लोक अर्थात् नक्षत्र भी नहीं थे, आकाश भी नहीं था। क्या था चारों ओर घेरे हुए ? कहाँ किसका आश्रय था ? क्या था यह गहन और गम्भीर ? तब न टूट-फूट हो रही थी और न कुछ स्थिर था। न रात और न दिन का चिन्ह था। तब अगतिशील वायु रूप एक परमात्मा और दूसरा जीवात्माओं का समूह था, वहाँ एक और वस्तु थी अपने आप स्थिर रहने वाली अर्थात् प्रकृति इनसे अधिक सूक्ष्म और कुछ न था।

ऋग्वेद के उपर्युक्त मन्त्रों का तात्पर्य यह है कि सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व सृष्टि का निमित्त कारण परमात्मा, साधारण कारण जीवात्माओं का समूह और उपादान कारण अव्यक्त प्रकृति विद्यमान थी, ये तीनों अनादि और अनन्त हैं अर्थात् इनका कभी नाश नहीं होता, ये तीनों सदैव वर्तमान रहते हैं।

**रचना का आरम्भ :-**

*तम आसीत् तमसा गूढ़मग्रेऽप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम्।*
*तुच्छयेनाम्वपि हितं यदासीत् तपसस्तन्महिनाजायतैकम्।।*

*-ऋ० १०.१२९.३*

अर्थात् अन्धकार से घिरा हुआ था रचना से पूर्व न जानने योग्य द्रव्यमान जो सर्वत्र था अति सूक्ष्मता से चारों ओर से ढका हुआ जो था वह महान तप की सामर्थ्य से एक उत्पन्न हुआ।

इसका अभिप्राय यह है कि सृष्टि की रचना के समय परमात्मा में सर्वप्रथम कामना = इच्छा = ईक्षण उत्पन्न हुई, उससे अव्यक्त प्रकृति व्यक्त होने लगी।

**ईक्षण क्या और क्यों ? :-** यह सृष्टि के रचयिता परमात्मा की इच्छा की एक 'वैद्युतिक शक्ति' (Electric Power) होती है जो सृष्टि उत्पत्ति का निश्चित समय होने पर प्रकट

होती है, इसकी आवश्यकता को निम्नलिखित प्रकार से समझ सकते हैं -

ब्रिटिश वैज्ञानिक सर आइजक न्यूटन (२५.१२.१६४२ - २०.३.१७२७) का गतिकी सिद्धान्त है-'जड़ पदार्थ अपनी गतिशील अथवा निष्क्रिय अवस्था में तब तक परिवर्तन नहीं कर पाते हैं जब तक कि कोई बाह्य बल उन्हें उनकी उस अवस्था से विचलित न कर दें।'

इसे ही महर्षि वेदव्यास ने 'वेदान्तदर्शन में निम्नवत् बताया है -

*'व्यतिरेकान वास्थितेश्च अनपेक्षत्वात्'* (वेदान्त० २.२.४)

ऐसे में जड़त्व रूप प्रकृति के वे जड़ पदार्थ निज-निज पारस्परिक क्रिया-प्रतिक्रिया पूर्वक पूर्णरूपेण संतुलित होकर भौतिकी सिद्ध 'सिंगुलैरिटी' नामक 'बिगक्रंच' (महाप्रलय) रूपी महानिष्क्रियता को प्राप्त होकर जब पूर्णरूपेण निश्चल हो जाते हैं तो उसके बाद उपर्युक्त न्यूटन सिद्धान्त के आलोक में किसी बाह्यबल से 'ईक्षण' नामक उत्प्रेरणा पाये बिना वे स्वतः ही सृष्टिकारी महाविस्फोट के रूप में पुनः कभी स्वतः चलायमान नहीं हो सकते।

अतः निष्कर्ष है कि प्राकृतिक जड़ पदार्थ किसी अनन्य बाह्य बल से विचलन पाकर ही अपनी भौतिकी सिद्ध प्रलयावस्थागत निष्क्रियता से महाविस्फोटपूर्वक पुनः स्वचलनशीलता को प्राप्त हो पाते हैं....इस अनन्य अतिरिक्त बाह्य बल को ही मूलतः वैदिक साहित्य में परमात्मा की 'ईक्षणशक्ति' कहा गया है -

**सृष्टि शब्द का अर्थ :-** सृष्टि शब्द का अर्थ है 'जिसका सृजन हुआ, जिसे बनाया गया, जिसका निर्माण हुआ, जिसकी रचना हुई, जिसकी उत्पत्ति हुई इत्यादि'। इस परिभाषा के आधार पर हमें सृष्टि दो प्रकार की प्रतीत होती है - (१) अचेतन या जड़ सृष्टि, (२) चेतन सृष्टि, इनमें से पहले अचेतन और बाद में चेतन सृष्टि की उत्पत्ति होती है, लेकिन प्रलय के समय पहले चेतन और बाद में अचेतन सृष्टि की प्रलय होती है।

**अचेतन या जड़ सृष्टि :-** इसके अन्तर्गत इस ब्रह्माण्ड की विभिन्न आकाशगंगाएं, निहारिकाएं, नक्षत्र, सौर मण्डल, ग्रह, उपग्रह, पर्वत, नदियाँ, समुद्र और झीलें इत्यादि हैं।

**चेतन सृष्टि :-** यह चार प्रकार की होती है -

(१) उद्भिज, (२) स्वेदज, (३) अंडज, (४) योनिज

(१) उद्भिज :- सीधे भूमि से उत्पन्न होने वाले पौधे, लता अैर वृक्ष इत्यादि।

(२) स्वेदज :- पसीने और वर्षा से उत्पन्न होने वाली जूँ और गिजाई इत्यादि।

(३) अंडज :- अण्डों से उत्पन्न होने वाले जल चर, थल चर और नभ चर।

(४) योनिज :- सीधे योनि से उत्पन्न होने वाले रीढ़ वाले पशु और मनुष्य।

**सृष्टि की उत्पत्ति :-** ऋग्वेद के अनुसार '...ऽ सतः सदजायत्...' (ऋ० १०.७२.१)

अर्थात् 'असत् से सत् उत्पन्न हुआ' इसका यह तात्पर्य बिल्कुल नहीं है कि जड़ से चेतन की उत्पत्ति हुई वरन इसका तात्पर्य केवल इतना ही है कि 'कारण' रूप में स्थित प्रकृति 'कार्य' रूप में प्रकट हुई। सारांश यह है कि सृष्टि उत्पत्ति का निश्चित समय होने पर ईश्वर अपनी स्वाभाविक ज्ञान, बल, क्रिया और इच्छा (ईक्षण) शक्ति से अव्यक्त प्रकृति को गति प्रदान कर व्यक्त करते हैं जिससे यह स्थूल जगत् बनता है।

महर्षि कपिल ने अचेतन और चेतन दोनों प्रकार की दृष्टि की रचना का वर्णन इस प्रकार किया है -

*सत्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृतिः प्रकृतेर्महान् महतोऽहंकारोऽहंकारात् पञ्चतन्मात्राण्युभयमिन्द्रियं तन्मात्रेभ्यः स्थूलभूतानि पुरुष इति पञ्चविंशतिर्गणः।*
*(सांख्य १.६१)*

**पदच्छेद :-** सत्वरजस्तमसां, साम्यावस्था, प्रकृतिः, प्रकृतेः, महान्, महतः, अहंकारः, अहंकारात्, पंचतन्मात्राणि, उभयम्, इन्द्रियम्, तन्मात्रेभ्यः, स्थूलभूतानि, पुरुष, इति, पञ्चविंशतिः, गणः।

अर्थात् - सत्व, रजस्, तमस् की साम्यावस्था = NEUTRAL = सन्तुलित अवस्था प्रकृति है। ये तीनों पदार्थ भी हैं और गुण भी हैं। इनकी साम्यावस्था भंग होने पर गुण न्यूनाधिक नहीं हुए, वरन पहले यह गुण अंतर्मुखी थे। बाद में परमात्मा के तेज (ईक्षण) के प्रभाव से बहिर्मुखी हो गये और अपने गुणों से पास के परमाणुओं को आकर्षित-विकर्षित करने लगे।

(अव्यक्त) प्रकृति (में विकृति होने) से (सर्वप्रथम) महत् = महत्तत्व = COSMIC DUST बना। महत् से अहंकार = Electrons, Protons, Neutrons बने।

अहंकार के से पंच महाभूत = क्रमशः आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी = Ethereal Substance, Radio Active, Gassy, Liquids, Solids बने।

तैत्तिरीयोपनिषद् के अनुसार '.....आकाशाद् वायुः वायोरग्निः अग्नेरापः अद्भ्या पृथिविः....' (तैत्तिरीय० २.१.१) अर्थात् आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल और जल से पृथ्वी उत्पन्न हुई (वास्तव में आकाश की उत्पत्ति नहीं होती क्योंकि बिना आकाश के प्रकृति और परमाणु कहाँ ठहर सकें ? स० प्र० समु० ८)। आकाश का केवल अप्रकट दशा से प्रकटीकरण ही होता है।

फिर अहंकार से ही पांच सूक्ष्म भूत या पांच तन्मात्राएं अर्थात् पांच महाभूतों के पांच सूक्ष्म विषय या पांच गुण प्रकट हुए। ये थे - शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध। इनमें आकाश की तन्मात्रा या गुण शब्द, वायु का स्पर्श, अग्नि का रूप, जल का रस और पृथ्वी का गन्ध है।

बिना परमाणुओं के कम्पन के ध्वनि = 'शब्द' = आकाश के गुण की उत्पत्ति नहीं हो सकती तथा बिना रिक्त स्थान के परमाणु कम्पन नहीं कर सकते। इसीलिए सर्वप्रथम आकाश और परमाणु प्रकट हुए 'वायु' में ध्वनि का गुण आकाश तत्व के संयोग से होता है। वायु से 'अग्नि' तत्व और प्रकाश की उत्पत्ति होती है। अग्नि और प्रकाश का स्वाभाविक गुण 'रूप है, क्योंकि प्रकाश के बिना किसी वस्तु के रूप का ज्ञान नहीं हो सकता। अग्नि से 'जल' तत्व की उत्पत्ति होती है। जल तत्व का स्वाभाविक गुण 'रस' है। समस्त गन्धरहित पदार्थ जल तत्व के अन्तर्गत आते हैं। फिर जल से 'पृथ्वी' तत्व और पृथ्वी से गन्ध युक्त पदार्थों का निर्माण होता है। पृथ्वी का स्वाभाविक गुण 'गन्ध' है।

आधुनिक विज्ञान के अनुसार भी अहंकार के परमाणुओं Electrons, Protons, Neutrons को स्थूल रूप में बांधकर रखने वाली कुछ शक्तियाँ हैं, जो इस प्रकार हैं -

(१) Inter Atomic Energy - इस ऊर्जा से Atoms में बंधे हुए Protons और Neutrons के चारों ओर Electrons चक्कर लगाते हैं।

(२) Chemical Affinity :- इस ऊर्जा से Atoms संयुक्त अणु (Molecules) और

अणु-अणु संयुक्त होकर Complex बनते हैं।

(३) Moleculer Dynamics :- इस ऊर्जा से Atoms या Molecules जो एक पिण्ड (Lump) में दूर या समीप स्थित हैं, उनके परस्पर पदार्थों के तीन रूप (थ्री स्टेजेज आफ मैटर) बनते हैं। इसे अणुओं की समीप अथवा दूर-दूर होकर भी परस्पर सम्बद्ध रहने की सामर्थ्य को कहते हैं।

(४) Gravity :- जिस शक्ति से एक पदार्थ का पिण्ड (Lump of a subtances) दूसरे पदार्थ के पिण्ड को अपनी ओर आकर्षित करता है, उसे वैज्ञानिक भाषा में गुरुत्वाकर्षण (Gravity) कहते हैं।

(५) Magnetic Force :- चुम्बक जिस शक्ति से लोहे को अपनी ओर खींचता है, उसे चुम्बकीय शक्ति या Magnetic Force कहते हैं।

पंच तन्मात्राओं के बाद दोनों प्रकार की इन्द्रियां = पांच ज्ञानेन्द्रियां (नेत्र, श्रोत्र, नासिका, जिव्हा और त्वचा) एवं पांच कर्मेन्द्रियां (वाणी, हाथ, उपस्थ, गुदा और पांव) बनती है। (इनके साथ) पुरुष = सृष्टि का निमित्त कारण परमात्मा और साधारण कारण जीवात्मा है। यह पच्चीस (का) गण (समूह) है।

**अचेतन सृष्टि की उत्पत्ति के मूल तत्त्व :-** निमित्त कारण = परमात्मा = उपादान कारण = प्रकृति = महत् = अहंकार = इलेक्ट्रान्स, प्रोटान्स और न्यूट्रान्स = पंच महाभूत = आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी = ५, पाँच तन्मात्राएँ = ५ = कुल १४ मूल तत्त्व।

**चेतन सृष्टि की उत्पत्ति के मूल तत्त्व :-** अचेतन सृष्टि के उपर्युक्त १४ तत्व+दोनों प्रकार की इन्द्रियां = पांच ज्ञानेन्द्रियां (नेत्र, श्रोत्र, नासिका, जिव्हा और त्वचा)+५ कर्मेन्द्रियां (वाणी, हाथ, उपस्थ, गुदा और पांव) + सामान्य कारण = जीवात्मा = कुल २५ तत्व।

**सृष्टि रचना का क्रम :-** वेद के अनुसार 'ऋतं च सत्यं च....चान्तरिक्षमथो स्वः' -(ऋ० १०.१९०.१-३)

अर्थात् परमात्मा ने अपने ज्ञानमय अनन्त सामर्थ्य से सत्, रज, तम गुण युक्त कार्यरूप प्रकृति को पूर्व कल्प के समान उत्पन्न किया। फिर महाप्रलयरूपी रात्रि उत्पन्न हुई। उसके पश्चात् पुनः नवीन सृष्टि की रचना आरम्भ हुई। फिर अन्तरिक्ष में मेघ और नीचे समुद्र उत्पन्न हुआ। अन्तरिक्ष में मेघ और नीचे समुद्र की रचना के बाद संवत्सर अर्थात् वर्ष, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, दिन, रात, प्रहर, पल और क्षण आदि बने। फिर द्युलोक, अन्तरिक्ष, सौर मण्डल, विभिन्न ग्रह-उपग्रह, सूर्य, पृथ्वी, चन्द्रमा आदि पूर्व कल्प के समान ही इस कल्प में भी बने।

**सृष्टि की आयु :-** अथर्ववेद के अनुसार -

*कियता स्कम्भ प्रविवेश भूतं कियद भविष्यदन्वाशयेस्य*
*एकं यदङ्गमकृणोत्सहस्रधाकियातास्कम्भः प्रविवेशतत्र।*
*(अथर्व० १०.७.९)*

अर्थात् 'भूत भविष्य मय समय रूपी घर एक सहस्र स्तम्भों पर खड़ा किया गया है'। इस मन्त्र में स्तम्भों के अलंकारों से एक कल्प की एक सहस्र चतुर्युगियों का वर्णन है।

अथर्ववेद में सृष्टि के एक कल्प के वर्षों की संख्या बताते हुए कहा गया है -

***शतं ते अयुतं हायमान्द्धे युगे त्रीणि चत्वारि कृण्भः।*** *(अथर्व० ८.२.२१)*

अर्थात् एक सौ अयुत वर्षों के आगे दो, तीन और चार की संख्या लिखने से एक कल्प के वर्षों की संख्या निकलती है। चूँकि एक अयुत = दस सहस्त्र अतः एक सौ अयुत = दस लाख हुए, दस लाख के सात शून्य लिखकर उसके पहले 'अंकानां वामतो गतिः' के अनुसार क्रमशः दो, तीन और चार लिखने से चार अरब बत्तीस करोड़ (४,३२,००,००,०००) वर्ष होते हैं। यह संख्या एक सहस्त्र चतुर्युगी = एक ब्राह्म दिन = एक ब्राह्म रात्रि = एक कल्प के वर्षों की है।

इस मन्त्र का दूसरा अर्थ स्व० इन्द्रदेव यति भूतपूर्व कुलपति गुरुकुल शाही पीलीभीत के अनुसार -

'युगे = सृष्टि और प्रलय में शतम् X अयुतम् X द्वा X त्रीणि X चत्वारि = १०० X१०० X २ X ३ X ४ = २४०००००० दिव्य वर्ष X ३६० = आठ अरब चौंसठ करोड़ (८६४००००००) सौर वर्ष = सृष्टि + प्रलय की आयु = चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष एक सृष्टि की आयु + चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष एक प्रलय की आयु होती है – (वैदिक इतिहास पृष्ठ ३)

**सृष्टि का उत्पत्ति काल :-** उस निमित्त कारण परमात्मा और उपादान कारण प्रकृति से सर्वप्रथम आकाश प्रकट हुआ। उससे वायु, वायु से अग्नि और अग्नि से जल की उत्पत्ति हुई। जल की उत्पत्ति तक एक संधिकाल = एक कृत युग = एक सतयुग = १७२८००० वर्ष का समय व्यतीत हो गया। यह वर्तमान कल्प के प्रथम संधि काल का प्रथम जल प्लावन था। इसकी अवधि सृष्टि संवत् एक (१) से सृ० सं० १७२८००० तक थी। कल्प की इस प्रथम अवधि को 'कृत युग' इसलिए कहा जाता है क्योंकि प्रत्येक कृत युग में नया निर्माण होता है।

**पृथ्वी का उत्पत्ति काल :-** यजुर्वेद के अनुसार -

'..अद्म्यः सम्मृत पृथिवीः' - (यजु०), '....पश्चाद् भूमिमथोपुर' - (यजु०) अर्थात् प्रथम संधि काल के पश्चात् पृथ्वी का निर्माण आरम्भ हुआ। दहकती हुई पृथ्वी को शीतल करके वनस्पति उगने योग्य बनाने के लिए इस पर लाखों वर्षों तक घनघोर वर्षा होती रही। इस प्रकार पृथ्वी निर्माण में एक कृत युग के १७२८००० वर्ष = सृ० सं० १७२८००१ से सृ० सं० ३४५६००० तक का समय लग गया।

**वनस्पति उत्पत्ति काल :-** पृथ्वी के निर्माण के बाद इस पर औषधियां, वनस्पतियाँ उत्पन्न हुईं - (यजु० ३१.६) वनस्पतियाँ आने योग्य भूमि बनने में आधे त्रेतायुग के बराबर के ६४८००० वर्ष लग गये - (ऋ० १०.९७.१), (यजु० १२.७५) अर्थात् सृ० सं० ३४५६००१ से मृ० सं० ४१०४००० तक का समय वनस्पति उगने योग्य भूमि बनने में अर्थात् उद्भिज सृष्टि आरम्भ होने में लगा।

**पशु-पक्षी उत्पत्ति काल :-** उद्भिज सृष्टि की उत्पत्ति होने के बाद पृथ्वी पर 'स्वेदज सृष्टि' का आरम्भ हुआ अर्थात् पसीने और वर्षा से उत्पन्न होने वाली जूँ और गिजाई आदि उत्पन्न हुईं।

वेद के अनुसार -

'पशूस्तान चक्रे वायव्यान आरण्या ग्राम्याश्च ये' - (यजु० ३१.६)

अर्थात् उसके पश्चात् बिना रीढ़ वाले, प्राणी = वायव्य = वायु में उड़ने वाले पक्षी आदि, फिर रीढ़ वाले = आरण्य ग्राम्याश्च = वनों और ग्रामों में चरने वाले पशुओं की

उत्पत्ति हुई। इस पशु उत्पत्ति की अवधि में तीन चतुर्युगी = ४३२०००० X ३ = १२९६०००० वर्ष = सृ० सं० ४१०४००१ से सृ० सं० १७०६४००० तक का समय लग गया।

**मानव उत्पत्ति काल :-** पशुओं की उत्पत्ति के बाद (सूर्य सिद्धान्त १.२४) सृ० सं० १७०६४००१ से पृथ्वी पर मानव उत्पत्ति का आरम्भ हुआ।

**मानव उत्पत्ति का आदि स्थान :-** वेदों के अनुसार -

उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनां धियाविप्रो अजायत् - (ऋ० ८.६.२८, यजु० २६.१५) अर्थात् पर्वतों की कन्दराओं, गुफाओं और घाटियों में तथा नदियों के संगमों पर बुद्धिमान लोग उत्पन्न हुए।

'लेकिन सर्वप्रथम मानव सृष्टि पहले तिब्बत में हुई और बाद में अन्यत्र' - (स० प्र० समु० ८)

**आदि सृष्टि की मनुष्य संख्या :-** आदि सृष्टि में अनेक मनुष्य उत्पन्न हुए....अर्थात् सैकड़ों, सहस्त्रों - (स० प्र० समु० ८)

**आदि सृष्टि अमैथुनी :-** आदि सृष्टि में अमैथुनी सृष्टि के मनुष्य आदि की युवावस्था में उत्पत्ति हुई थी क्योंकि जो बालक उत्पन्न होते तो उनके पालने के लिए दूसरे मनुष्य आवश्यक होते और जो वृद्ध उत्पन्न होते तो आगे मैथुनी सृष्टि आरम्भ न होती, इसीलिए युवावस्था में सृष्टि हुई जो अमैथुनी थी - (स० प्र० समु० ८ के आधार पर)

## यज्ञ

**(गीतकार : इंद्रदेव त्रिवेदी, बरेली)**

यज्ञ करें हम यज्ञ करें, यज्ञ देव को नमन करें।
यज्ञ करें बस यज्ञ करें, यज्ञ पुरुष को नमन करें।।
जो जन यज्ञ किया करते, उनके कष्ट सदा मिटते।
सोच सही उनकी बनती, तन-मन शुद्ध हुआ करते।।
स्वच्छ करें भूमि सारी, और स्वच्छ वो गगन करें।।
यज्ञ करें.....

शुद्ध अगर मन होते हैं, तभी शुद्ध तन होते हैं।
तन-मन शुद्ध अगर होते; पावन जीवन होते हैं।।
कलुषित मन पावन करने, मिलकर आओ शमन करें।।
यज्ञ करें.....

आर्यसमाज यही करता, वेद विहित इन यज्ञों को।
प्रतिदिन मन से यज्ञ करें, वेद लिखित इन यज्ञों को।।
आर्यवीर यदि हम हैं तो, आज प्रमाणित कथन करें।।
यज्ञ करें.....

(संदर्भ एवं परिचय :- गीतकार इंद्रदेव त्रिवेदी जी ने आर्यसमाज बिहारीपुर द्वारा आयोजित वैदिक सिद्धांतों का वैज्ञानिक चिंतन व्याख्यान माला ४ रविवार २७ जनवरी २०१३ को यज्ञ का वैज्ञानिक दार्शनिक चिंतन विषय के संदर्भ में स्वरचित गीत प्रस्तुत किया था - संपादक) ★

# ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना मन्त्रों का दार्शनिक वैज्ञानिक चिन्तन

(डॉ० वी० के० शर्मा, बरेली)

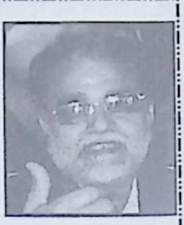

(संदर्भ एवं परिचय :- प्रख्यात आयुर्वेदाचार्य एवं वेद वेदांगों के अध्ययनशील डॉ० वी० के० शर्मा जी आयुर्वेद विषय के मर्मज्ञ है। राजकीय चिकित्सा उ० प्र० में चिकित्साधिकारी से अवकाश प्राप्त है। बाल्यावस्था से वैदिक सिद्धान्तों के अनुयायी एवं गाम्भीर्य चिन्तक है। ऋषि दयानन्द के विचारों में अटूट निष्ठावान है। आपके पिता-पितामह आर्य समाज के समर्थक व अनुयायी थे, वेदों का आपने अनेक बार अध्ययन किया है। आर्य समाज बिहारीपुर द्वारा आयोजित वैदिक सिद्धान्तों का वैज्ञानिक चिन्तन व्याख्यान माला के छः, सात, आठ के संदर्भ में "ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना मंत्रों का वैज्ञानिक दार्शनिक चिन्तन" विषय पर १० फरवरी, १७ फरवरी, २७ फरवरी को प्रामाणिक सारगर्भित व्याख्यान प्रदान किया था - सम्पादक)

वैदिक प्रार्थना और वेद प्राचीन काल से अद्यावधि जनजीवन का अंग रहे हैं। वेद ऐसा ज्ञान का भण्डार हैं जिसमें दयावान ईश्वर ने कृपा कर ज्ञान का आविर्भाव किया। वेद अनादि और अपौरुषेय है। वेद नित्य हैं जिसे ईश्वर नें सृष्टि चलाते, बनाते समय प्रकट किया। जिस प्रकार परमपिता परमेश्वर अनादि, अनन्त, अविनाशी है उसी प्रकार वेद भी अनादि, अनन्त, अनीश्वर हैं। सृष्टि के प्रारम्भ में ये ज्ञान ऋषियों के हृदय में प्रकाशित होता है तथा प्रलय काल में ईश्वर में निहित होता है।

ऋषि दयानन्द ने सप्रमाण अकाट्य युक्ति द्वारा तार्किक दृष्टिकोण से विचार किया। जिसके अनुसार वेद ईश्वरीय कृति है, अपौरुषेय है जिसका ज्ञान सृष्टि के आरम्भ में मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए सार्वभौम सन्देश दे, प्रकाशित किया। सृष्टि की रचना कल्प का आरम्भ १९७२४९२१४ वर्ष सृष्टि के आरम्भ से १९५५८८५३१४ वर्ष वि० सं० २०७० तक हुए ईश्वरीय ज्ञान से वेद भी इतने प्राचीन है। अतः इनमें इतिहास या ऐतिहासिक गाथायें बिल्कुल नहीं हो सकती हैं अतः वेद नित्य अपौरुषेय ईश्वरकृत प्रतिपादन है क्योंकि स्वयं वेदों में ऋग्वेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद में स्पष्ट रूप से वेदों को ईश्वर उत्पन्न कहा गया है।

*तस्माधज्ञात्सबहुत....ऋत सामानि जज्ञिरे।* -ऋ० १०।९०।९ यजु० ३१।७

आर्यों का दार्शनिक चिन्तन ऋग्वेद से प्रारम्भ होता है। आत्मा-परमात्मा, सृष्टि उत्पत्ति, मृत्यु पुर्नजन्म विवाह सामाजिक व्यवस्था, राजकीय परिपाटी, पशुपालन, उद्योग युद्ध सभा, समिति, कृषि, वृक्ष वनस्पति, खनिज भूगोल खगोल व्यापार चिकित्सा, ज्योतिष नौका विमान। अमेरिका विद्वान लेखिका ह्वीलर विल्लावस ने 'सब्लिमिटी ऑफ दी वेदाज' में लिखा है कि वैदिक विद्वान ऋषि विद्युत, रेडियो, इलैक्ट्रीसिटी विमान आदि से परिचित थे।

वेदों के सम्बन्ध में बहुत सी भ्रान्तियाँ वेद-मन्त्रों के अर्थ का अनर्गल आशय, वेदों में इतिहास व ऐतिहासिक कथायें आदि-आदि महर्षि दयानन्द सरस्वती के समय तक प्रचलित

थी और वैदिक ग्रन्थों का प्रवचन, भाष्य कर्मकाण्ड यज्ञ तक ही सीमित हो गया था। इसी के परिणाम स्वरूप भारतवर्ष तथा शेष जगत अविद्या असत्य के अन्धकार से आवृत हो गया था। मानव जाति असत्य के सहस्त्रों मतान्तरों में विभक्त हो गयी। सामाजिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई। भारत की अपार सम्पत्ति का विदेशी धन लोलुप आक्रमणकारियों ने अपहरण किया। पुस्तकालयों में भयानक आग से ज्ञान भस्म हो चुका था। हमारी यह स्थिति वेद विद्या के लोप होने पर दयनीय, हो गई। वेदों के तथाकथित स्वरूप को वेद का वास्तविक स्वरूप मान वेद विरोधियों ने तरह-तरह के आक्षेप किये।

भारतीय परम्परागत वैदिक विद्वान लगभग ५ हजार वर्षों से वेदों का प्रयोजन भौतिक यज्ञ के अनुष्ठान तक ही सीमित रह गया था। यज्ञानुष्ठान ब्राह्मण ग्रन्थों के विधि विधान के बिना नहीं हो सकते अतः ब्राह्मण ग्रन्थों को वेदांगों को भी वेद माना गया। परन्तु महर्षि ने सभी विषयों - सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, आध्यात्मिक पर सत्य स्वरूप वेदों का उद्‌बोधन दिया जिसके परिणाम यथेष्ट सकारात्मक हुए।

प्रस्तुत लेख में संस्कार विधि के प्रारम्भ में अथेश्वरस्तुति उपासना विषय मन्त्रों का वैज्ञानिक, दार्शनिक, आध्यात्मिक चिन्तन-मनन है।

इन आठ मन्त्रों में प्रार्थना के विषय को ईश्वर के सम्बन्ध प्रश्नोत्तरवाचक शैली में भी रूपित किया है -

१. कौन है ईश्वर ?
२. क्या कर्ता है ईश्वर ?
३. कहाँ रहता ईश्वर ?
४. कैसे है उपास्य ?
५. किस प्रकार सृष्टि निर्माता ?
६. एकेश्वरवाद, निराकार सर्वव्यापक, सृष्टिकर्ता के भावों का ?
७. किस प्रकार सृष्टि टिकी है ?
८. उपासना करे तो क्या मिलता है, कैसे मिलता है ?

**कौन है ईश्वर :-** 'विश्वानि देव.....सुव।। ऋ० ५।८२।३ यजु० ३०।३११ में ईश्वर सकल जगत का उत्पत्तिकर्ता शुद्ध स्वरूप तथा एकवचन 'भद्र' में कल्याणकारक कहा है - अतः हमारा कल्याणकर्ता वही है वही एक 'भद्र' है।

**कथा (कर्ता) करता है :-** "हिरण्यगर्भ....विधेम। ऋग्वचेद १०।१२१।१।। यजु० अध्या १३।४ में ईश्वर इस पृथिवी का निर्माणकर्ता धारणकर्ता है जो भूत भविष्य वर्तमान में एक मात्र चेतनस्वरूप है।

स दाधार वही सूर्यादि सृष्टि को धारण करता है।

**कहाँ रहता है - और क्यों उपासना करें ? :-**

य आत्मदा.....विधेम। ऋग्वेद १०।१२१।२ यजु० २५।१३ अर्थात् वह परमेश्वर सर्वव्यापक है कहीं सातवें आठवें आसमान क्षीरसागर आदि में नहीं रहता है वह आत्म ज्ञान का दाता है, शरीर आत्मा, समाज को बल देने वाला है - सब विद्वान लोग उपासना करते हैं कि दैहिक आत्मिक मानसिक दुखों से मुक्त हों।

**५. किस प्रकार सृष्टि निर्माण करता है :-** यः प्राणतो.....विधेम। ऋ० १०।१२१।३

यजु० २३।५ अर्थात् वह ईश्वर अपनी अनन्त महिमा से, प्राण वालों का, अप्राणिस्वरूप नदी पर्वत समुद्र आदि का निर्माण करता है और इस संसार का एक ही राजा है।

**६. किस प्रकार सृष्टि टिकी है और किस पर है :-** येन धौरुग्रा.....विधेम। ऋ० १०।१२१।५।। यजु० ३२।६ अर्थात् इस मन्त्रार्थ में परमात्मा ने अन्तरिक्ष, पृथ्वी, विमान लोकान्तरों को अपनी आकर्षण शक्ति से स्तम्भित कर रखा है।

**७. एकेश्वरवाद, निराकार, सर्वशक्तिमान....सृष्टिकारक** प्रजापते नः....पतयो रणीयाम। अर्थात् हे प्रजापति सर्वसृष्टि के स्वामी परमात्मा आपसे भिन्न कोई दूसरा नहीं। इस भूगोल आदि सम्पूर्ण को बनाने वाला और अपनी निराकार, सर्वशक्तिमान, सृष्टिकारक है - आपकी उपासना से वह कामना हमारी सिद्ध होवे जिससे हम लोग धन ऐश्वर्यों के स्वामी हो।

**८. क्यों करे ईश्वर की उपासना :-** सातवें मन्त्र में 'स नो बन्धुर्जनिता..... धामन्नध्यैरयन्त। यजु० अ० ३२। मं० १० अर्थात् वह हमारा परमेश्वर भ्राता (भाई) के समान सुखदायक है। वह (विधाता) हमारे सम्पूर्ण कार्यों के पूर्ण करने हारा (वाला) है। अतः जो हमारे सारे समस्त कार्य पूर्ण करने वाला हो और हम इस संसार में बिना रुके हमारे समस्त कार्य पूर्ण होते जायें म.द.स. कहते हैं। अतः वही परमात्मा अपना गुरु आचार्य राजा और न्यायाधीश है और सब मिलकर उसकी भक्ति किया करे।

(व्याख्यान देते हुए डॉ० बी० के० शर्मा)

**उपासना करना हमारा कर्तव्य है :-** आठवें मन्त्र में अग्ने नम.....नमउक्ति विधेम।। ऋ० १।१८९।१।। यजु० ४०।१६ उपर्युक्त ईश्वर विषयक शंकाओं का समाधान करते हुए बताया है यह सम्पूर्ण जगत के कष्ट या व्यक्तिगत कष्टों से निकलने का मार्ग एक मात्र महर्षि दयानन्द सरस्वती के शब्दों में है स्व प्रकाश ज्ञान स्वरूप सब जगत के प्रकाश करने हारे, सकल सुखदाता परमेश्वर ! आप जिससे विद्यायुक्त हों। कृपा करके हम लोगों को विज्ञान व राज्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए अच्छे धर्मयुक्त आप लोगों के मार्ग से सम्पूर्ण प्रज्ञान कर्म प्राप्त कराइये और हमसे कुटिलतायुक्त पाप कर्म को दूर कीजिए। इस कारण हम लोग आपकी बहुत प्रकार की स्तुति रूप नम्रतापूर्वक प्रशंसा सदा किया करें और सर्वदा आनन्द में रहें।

सार रूप में यहाँ महर्षि का आशय है कि

१. परमात्मा ज्ञान स्वरूप है सकल सुखदाता है अतः ज्ञान और सुख प्राप्ति के इन मन्त्रों का मनन-चिन्तन करें।

२. ईश्वर विद्यावान है अतः विद्या, विज्ञान, राज्य आदि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए इन आठ मन्त्रों का निरन्तर प्रातः पाठ करें। क्योंकि जो विद्यावान है वही विद्या दे सकता है।

३. परमेश्वर सम्पूर्ण प्रज्ञान कर्म का प्रेरक है।

४. कुटिलतायुक्त पाप कर्म को दूर कीजिए - महर्षि दयानन्द सरस्वती का आदेश है।

५. ईश्वर की स्तुति रूप नम्रतापूर्वक प्रशंसा सदा किया करें और सर्वदा आनन्द में रहें।

महर्षि वेद मन्त्र के इस भाष्य के अनुरूप ईश्वर स्तुति उपासना के मन्त्रों की साधना के लिए २० व्यक्तियों का मेरे द्वारा चयन किया गया। उनकी तनाव, चिन्ता का परीक्षण स्टैण्डर्ड मनोवैज्ञानिक परीक्षणों द्वारा किया गया इसमें पहले परीक्षण प्रयोगात्मक समूह ने अपनी २० दिवसीय मन्त्रों का सामूहिक पाठ नित्य प्रातः सायं सोने से पूर्व कराया गया। उच्चारण शुद्ध किया गया। मार्गदर्शन बीच-बीच मिलकर फोन द्वारा किया गया। सभी व्यक्ति (१८ पु० + २ महिला) अपने दैनिक क्रियाकलाप अध्ययन-अध्यापन नौकरी व्यापार करते हुए १५ मिनट ३ बार लगभग ४५ मिनट नित्य करते रहें। भोजन में रस्या स्निग्धा सात्विक आहार दिया गंया। बाकी क्रियाकलाप शेष दिनों की भाँति पूर्ववत रहे।

२० दिनों के पश्चात् प्रश्नोत्तर एवं मनोवैज्ञानिक परीक्षण किया गया। प्राप्त आँकड़ों का सांख्यिकी आंकलन कर देखा कि -

उपर्युक्त आठ मन्त्रों के जप-पाठ-साधना से प्रत्येक जन की चिन्ता व तनाव में भारी कमी आती है। ज्यादा विस्तार में न जाकर Calculations के आधार पर यही Details मिलते हैं कि 100 में 99 जनों को फायदा या 100 में 99 का चिन्ता तनाव में फायदा हुअ। कुछ परीक्षार्थी विचलित होकर छोड़ देते हैं, उनको नहीं लिया गया। ५ लोग बीच में चले गये ४ ने २ दिन एवं १ ने १० दिन बाद सम्पर्क तोड़ लिया उनको भी शामिल नहीं किया गया है। परन्तु कुछ भी वैज्ञानिक दृष्टि से यह निष्कर्ष महर्षि दयानन्द सरस्वती के अकाट्य सिद्धान्तों के ही अनुकूल है। ये परिणाम कांफी प्रभावशाली हैं। मन्त्रों के जाप से ही महान आध्यात्मिक विभूतियाँ जीवन में प्रगट होती हैं।

निष्कर्ष :- मूर्धन्य वेद विद्वानों के मत में यह मन्त्र समूह महर्षि दयानन्द ने दिव्य ज्ञान से संस्कार विधि में ईश्वर स्तुति-प्रार्थना उपासना के नाम से अनुपम अद्भुत संचयन किया है। पूज्या वेदाचार्या श्रीमती सवित्री देवी शर्मा इन मन्त्र समूह को वेदामृत तथा कल्पवृक्ष के सदृश स्वीकृत किया है तथा कई प्रकरणों में इससे मनोकामनाओं की पूर्ति व लाभदायक है। आचार्य विश्वश्रवा जी ने इसको मानव के लिए उपयोगी तथा प्रेरणाप्रद कहा है।

मेरा मत है कई प्रकरणों में कष्टों से मुक्ति दिलवाने वाली ये प्रार्थना मन्त्रों का समूह है। आधुनिक आर्यजन इससे लाभ ले तथा अपने अनुभव से अवगत करायें एवं आर्य समाजों को इस पर अनुसन्धान भी कराना चाहिए ताकि समाज को सही दिशा मिले और ऐसे ही महत्वपूर्ण कार्यों मन्त्रों का सदुपयोग सिद्ध हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

१. संस्कार विधि म.ढ.स.
२. सत्यार्थ प्रकाश म.ढ.स.
३. शत पथ ब्राह्मण के प्रतीक श्रीमती सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या
४. ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका म.ढ.स.
५. ऋग्वेद संहिता - चौखम्भणा प्रकाशन
६. यजुर्वेद संहिता - चौखम्भणा प्रकाशन
७. स्वामी दयानन्द एवं उनके कार्य - पं० युधिष्ठिर भीमा आदि अनेक ग्रन्थ, लेख तथा पूज्य आर्य मुनियों के उपदेश आदि से प्रेरित।

★

# वेदों में चिकित्सा विज्ञान

(डॉ० डी० के० द्विवेदी, बरेली)

(**संदर्भ एवं परिचय :-** राजकीय आयुर्वेदिक कॉलेज, बरेली में प्रभारी चिकित्सालय एवं सर्जन डॉ० डी० के० द्विवेदी जी आयुर्वेद के प्रकाण्ड विद्वानों में आपकी गणना होती है, आयुर्वेद में सर्जरी में आप एम.डी. है तथा देश में राष्ट्रीय अर्न्तराष्ट्रीय संगोष्ठियों में अपने अनेक व्याख्यान प्रदान किये हैं। वेदों में चिकित्सा विज्ञान से सम्बन्धित आपका गहन अध्ययन है। आर्य समाज बिहारीपुर द्वारा आयोजित "वैदिक सिद्धान्तों का वैज्ञानिक चिन्तन व्याख्यान माला-५ रविवार, ३ फरवरी २०१३ तथा १३ मार्च २०१३ को वेद विज्ञान संगोष्ठी को 'वेदों में चिकित्सा विज्ञान का वैज्ञानिक दार्शनिक चिन्तन" विषय पर प्रामाणिक सारगर्भित व्याख्यान प्रदान किया है। इस अवसर पर आचार्य विशुद्धानन्द स्मृति देववाणी शोध एवं विकासपीठ दिल्ली के द्वारा आपको आयुर्वेद रत्न सम्मान से सम्मानित किया गया था। उसी व्याख्यान को लेख के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है - सम्पादक)

वेद सदैव से हमारे ज्ञान के मूल स्रोत रहे हैं। जहाँ वेदों में प्रकृति के सभी तत्वों आकाश, वरुण, वायु, अग्नि आदि के महत्व को देवत्व की उपाधि देकर स्थापित किया गया। वहीं समस्त ब्रह्माण्ड की चर-अचर सृष्टि के पालन-पोषण आदि की समीचीन व्याख्या आध्यात्मिक व वैज्ञानिक चिन्तन के प्रतिमानों द्वारा प्रतिपादित की गई।

चतुर्विध पुरुषार्थ को प्राप्त करने में आरोग्य पहली आवश्यकता है इसीलिए वेदों में रुद्र, अग्नि, वरुण, इन्द्र, मरुत आदि को दैव भिषक कहा गया तथा इस शास्त्र को आयुर्विद्या नाम दिया गया। जहाँ आधुनिक विज्ञान में पारंगत या विशेषज्ञ की कल्पना है वहाँ आयुर्वेद में भी आयुर्विद्या ज्ञान के पारंगत अश्वनी कुमारों का वर्णन विस्तार से प्राप्त है।

**शरीर रचना एवं क्रिया सम्बन्धी ज्ञान :-** रोगों के अधिष्ठान के रूप में, अक्षि, नासिका, शीषन, ग्रीवा, जिव्हा, उष्णिहा, हृदय, क्लोम आदि समस्त अंग-प्रत्यंगों का पर्याप्त वर्णन उपलब्ध है।

*अमूर्या यन्ति योषितो हिरा लोहित वाससः।*
*शतस्य धमनीनां सहस्त्रस्य हिराणां। १।१७।१-३*

सौ धमनियां तथा सहस्त्र शिरायें जिनमें रक्त संचरण होता है। ऐसे ही हृदय की तुलना कमल से करते हुए उसकी रचना एवं क्रिया का स्पष्ट उल्लेख भी मिलता है।

**मूत्र निर्माण प्रक्रिया :-** इसी क्रम में मूत्र निर्माण की प्रक्रिया एवं सम्बन्धित अंगों का विवरण भी उपलब्ध है -

*यदान्त्रेषु गवीन्योर्यद् वस्तावधि संश्रुतम्।*
*एवा ते मूत्रं मुच्यतां बहिर्वालिति सर्वकम्।। १-३-६*

**आयुर्वेद के मौलिक सिद्धान्त :-** आयुर्वेद सम्बन्धी ज्ञान प्रायः अथर्ववेद में प्रचुरता से प्राप्त होता है। भारतवर्ष में आयुर्वेद विज्ञान के विकास में भले ही सांख्य, वैशेषिक, यत्र तत्र बौद्ध, बाद में पुराणों आदि का प्रभाव दिखाई देता हो किन्तु मूल में आयुर्वेद के समस्त

सिद्धान्त वेदों की ही मौलिक अवधारणा से प्रेरित लगते हैं। इतना ही नहीं यहाँ यह भी कहना सर्वथा अनुचित नहीं होगा कि कालान्तर में यही चिकित्सा सम्बन्धी सिद्धान्त अलग-अलग चिकित्सा पद्धतियों की मौलिक अवधारणा में कारण अथवा उनके विकास में सहायक हुए।

त्रिदोष, त्रिधातु, ओज आदि के सिद्धान्त यथा -

"य एकमोजसत्रेधाविचक्रमे" तथा "इन्द्रं त्रिधातु शरणं त्रिवरुथं स्वास्तिमत" इत्यादि के द्वारा इसकी पुष्टि होती है।

आयुर्वेद के मौलिक ग्रन्थों जैसे चरक व सुश्रुत संहिता में अग्नि को अत्यन्त महत्व दिया गया है तथा सम्पूर्ण पाचन व धातुगत व्यापार इसके द्वारा ही सम्पन्न होता है, ऐसा कहा गया है। यहाँ तक कि "शान्तेऽग्नौम्रीयते चिरं जीवत्लामया" द्वारा जीवन का अस्तित्व ही अग्नि में निहित है कहा गया है। सम्भवतः यह सिद्धान्त पूर्णतः वैदिक है यथा "अग्निरेवा पुरुषेषु....." "पचनरक्षत्वा"। यहाँ सप्त धातुओं "सुदेवो असि वरुण यस्य ते सप्त सिन्धवः" का विचार भी दृष्टव्य है।

**रोगों की अवधारणा :-** वेदों में जो चिकित्सा विज्ञान सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त होता है उसे देखकर तत्कालीन चिकित्सा विज्ञान की उत्कृष्टता का बोध सहज ही हो जाता है। न केवल रोगों के नामों का उल्लेख प्राप्त होता है वरन् इनका वर्गीकरण जो कारणों पर आधारित है, भी स्पष्ट रूप से मिलता है। रोगों के २ भेद 'शपथ्य' अर्थात् आहार विहार से उत्पन्न तथा 'वरुण्य' अर्थात् शापादिजनित के साथ ही "रोग" तथा "आस्राव" का भी वर्णन प्राप्त है। रोगों में प्रमुखतः कास, हृद्योत, राजयक्ष्मा, क्लैब्य, अश्मरी, जवर, कुष्ठ, किलास हृदयामय, पर्वभेद, अर्बुद आदि के साथ ही 'तक्मन' ज्वर जो क्षेत्र विशेष में पाये जाते हैं तथा ऋतु के अनुसार सन्तत, तृतीयक, ग्रैष्मिक, वार्षिक, शारद आदि रोगों का नामोल्लेख है।

वेदों में रोगोत्पत्ति के कारणों में कृमियों का स्पष्ट उल्लेख है और इतना ही नहीं कृमि भी २ प्रकार के कहे गये हैं जो दृष्ट अर्थात् सामान्य आंखों से दिखायी देने वाले तथा 'अदृष्ट' अर्थात् सूक्ष्मजीव जैसे बैक्टीरिया, वाइरस आदि। "कुमारस्य कृमीन धनपते जहि"।

यहीं पर सूर्य व अग्नि के द्वारा कृमियों के नाश (Sterlization) तथा कृमिनाशक औषधियों यथा अजश्रंगी, गुग्गुलु, पीला, नलद, अश्वत्थ तथा महावृक्ष आदि का भी उल्लेख है। सूतिका रोगों के संदर्भ में भी "स्त्रीणां श्रोणि प्रतोदिनी इन्द्रं रक्षांसि नाशय" कहा गया है।

**चिकित्सा विधि/उपक्रम :-** अंग-प्रत्यंग, चिकित्सा के मूल सिद्धान्त, रोग, कृमि आदि के वर्णन के साथ चिकित्सा की विभिन्न उपक्रम अथवा विधियों का पर्याप्त उल्लेख यह प्रमाणित करता है कि उस समय भी चिकित्सा सौन्दर्य को विज्ञान का स्वरूप व आदर प्राप्त था।

वात रोगों में घृत का नस्य, हृदय रोग व कामला में हरिद्रौदन (हल्दी का भात), श्वेत कुष्ठ में भ्रंगराज आदि औषधियों का लेप, क्षतज रक्तस्राव में लाक्षोदक, जलौकावचारण (जोंक लगाना), मूत्रावरोध में शलाका (Bladder Sound) द्वारा मूत्र निकालना के साथ ही जल, वायु व सूर्य चिकित्सा के उद्धरण देखे जा सकते हैं

आधुनिक काल में चिकित्सा के समतुल्य मानी जाने वाली एवं प्रभावी विद्या Councilling का 'सांत्वना' के रूप में उल्लेख है – "सोऽरिष्ट न मरिष्यषि न मरिष्यषि मा विभे।"

**विषनाशक :-** विषशमन हेतु विषघ्न औषधियों के साथ ही विषनाशक उपाय व यंत्रों का

भी वर्णन प्राप्त है।

**चर्मरोग चिकित्सा :-** इन्द्र के द्वारा अपाला के चर्म रोग की चिकित्सा का उल्लेख है तथा रोगों में कुष्ठं अर्थात् शरीर को कुरूप करने वाले रोग व चिकित्सा के प्रमाण भी दृष्टव्य हैं।

**रसायन चिकित्सा :-** स्वस्थ एवं दीर्घजीवी रहते हुए चतुर्विध पुरुषार्थ-धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति आदिकाल से ही मानव का लक्ष्य रही है। किन्तु एतदर्थ शरीर की दृढ़ता आवश्यक है जिसकी प्राप्ति रसायन सेवन से ही संभव है। वृद्ध च्यवन ऋषि का च्यवन प्राश सेवन द्वारा तरुण होना तो विख्यात ही है। जीवन्ती, सहमाना, दर्भ, शतावर आदि रसायन औषधियों द्वारा शरीर को दृढ़ करने के संकेत प्राप्त होते हैं यथा - "प्रत्यक सेवस्व भैषजं जरदृष्टिं कृणोमि त्वा।"

**प्रसूति चिकित्सा :-** प्रसूता के सुख प्रसव की कल्पना के साथ ही प्रसव व तदोपरान्त संक्रमण से रक्षा हेतु उपायों का वर्णन मिलता है। कष्ट प्रसव के समय योनि भेदन जो वर्तमान में Episiotony के रूप में प्रचलित है का भी उल्लेख है। इतना ही नहीं प्रसव में आजकल आधुनिक चिकित्सा शास्त्र द्वारा सिजेरियन ऑपरेशन अत्यंत सामान्य प्रक्रिया मानी जाती है जिसका उल्लेख भी वेदों में प्राप्त होता है - यथा "वि ने भिनद्भि, मेहनं वियोनिं विगवीनिके, विभातरं च पुत्रं च विकुमारं जरायुणां अवजरायुपद्यताम्।।"

**शल्य चिकित्सा :-** जनमानस शल्य चिकित्सा को आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की देन के रूप में स्वीकार करता है। किन्तु वेदों में वर्णित शल्य/शस्त्र चिकित्सा संबंधी प्रकरण अथवा उद्धरण हमें यह सोचने पर विवश करते हैं कि संभवतः वह काल शल्य चिकित्सा का उत्कृष्ट समय प्रतीत होता है। शल्य चिकित्सा से सम्बन्धित कई उल्लेख प्रकीर्ण रूप से मिलते हैं उनमें से कुछ की ही उदाहरण के रूप में यहाँ गणना की जा रही है -

- प्रसूति चिकित्सा में - योनि भेदन, गर्भाशय भेदन
- अपची रोग में वेधन
- रक्त मोक्षण
- रक्त स्तम्भन हेतु सिरावंधन (Ligation of Artery)
- व्रण व विद्राधे चिकित्सा
- वृषण प्रत्यारोपण "वृष्णे ते हरी वृषणा युनाज्मि"
- संधान कर्म "यथा नकुलो विच्छिन्नौ संदाध्य हि पुनः"
- परावृक ऋषि को दृष्टिदान
- खेल राजा की पत्नी विस्पला के अयस (Metallic) की जंघा का प्रत्यारोपण
- टूटे अंगों को जोड़ना आदि जैसे शतशः उदाहरण तत्कालीन शल्य कर्म की उत्कृष्टता की पुष्टि करते हैं।

आधुनिक विद्वान की Transplantation & Reconstructive Surgery का कक्ष्य विद्या के रूप में उल्लेख प्राप्त है तथा मृत प्रायः को जीवित करने का उपक्रम "मधुविद्या" के रूप में प्रचलित था तथा ऋषि दधीचि इसके विशेषज्ञ कहे गये हैं जिन्होंने शिर का भी संधान किया था।

वर्तमान में संतति नियमन उपायों में वंध्याकरण हेतु Vasectomy अर्थात पुरुष की

शुक्रनाड़ी का छेदन किया जाता है। इसका भी उल्लेख वेदों में प्राप्त होता है यथा -

*'ये ते नाड्यो देवकृते ययोतिष्ठति वृषणम्।*
*ते ते भिनद्मि शम्यामुष्या अधि मुष्कयौ।।'*

**औषधि द्रव्यगुण विज्ञान :-** ऋग्वेद में तो औषधि सूक्त का पृथक से ही वर्णन है अनन्यथा प्रकीर्ण रूप से चिकित्सा में उपयोग वनस्पति द्रव्यों का उल्लेख यत्र तत्र किन्तु प्रचुर मात्रा में प्राप्त होता है। ज्योतिष्मती, त्रिवृत्त विश्वभेषज, अश्वत्थ, शतावरी आदि-आदि औषधि द्रव्यों का ६७ ऋग्वेद में, ८२ यजुर्वेद में, २८६ अथर्ववेद में तथा ब्राह्मण ग्रन्थों व उपनिषदों में क्रमशः १२६ व ३१ वनस्पति का उल्लेख है।

सृष्टि में मानव अपनी बुद्धि एवं मानसिक बल के आधार पर सदैव अग्रगण्य रहा है किन्तु वेदों में सृष्टि के समस्त घटकों का चिन्तन किया गया। सम्भवतः इसीलिए चिकित्सा के संदर्भ में मनुष्य के अतिरिक्त वृक्ष, पशु तथा पक्षियों की चिकित्सा सम्बन्धी प्रमाण भी हमारी इस थाती में देखे जा सकते हैं।

वेदों के सम्बन्ध में यही कहा जा सकता है कि ये ग्रन्थ न मात्र हमारी संस्कृति एवं अध्यात्म के कोष है अपितु आज की समस्त वैज्ञानिक अवधारणाओं के मूल स्रोत भी हैं। चिकित्सा विज्ञान के कितने ही सफल प्रयोग कहीं न कहीं वेदों में प्रतिपादित संकेतों की ही सफल प्रस्तुति सी प्रतीत होते हैं। ऐसे में आवश्यकता है इनमें प्रतिपादित विषयों की पूर्ण आस्था व श्रद्धा के साथ आधुनिक वैज्ञानिक प्रकाश में पुनरीक्षण करके व्याख्या करने की।

★

(आर्यसमाज बिहारीपुर में स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती के द्वारा भेंट स्वीकार करते डॉ० द्विवेदी)

# उपनिषदों में वर्णित चिकित्सा संबंधी विषयों का वैज्ञानिक एवं दार्शनिक चिंतन

(डॉ० आर० के० यादव, एसोसिएट प्रोफेसर, कायचिकित्सा विभाग, बरेली)

(**संदर्भ एवं परिचय :-** राजकीय आयुर्वेदिक कॉलेज, बरेली में काय चिकित्सा विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ० आर० के० यादव आयुर्वेद के प्रख्यात विद्वान एवं वेद वेदाङ्ग उपनिषदों के अध्ययनशील चिन्तक है। देश के विभिन्न राष्ट्रीय-अर्न्तराष्ट्रीय संगोष्ठियों में आपके सारगर्भित व्याख्यान होते हैं। आर्यसमाज बिहारीपुर बरेली द्वारा आयोजित "वैदिक सिद्धान्तों का वैज्ञानिक चिन्तन व्याख्यान माला (१४) के अन्तर्गत २८ अप्रैल २०१३ को उपनिषदों में चिकित्सा सिद्धान्तों का वैज्ञानिक दार्शनिक चिन्तन" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया था – सम्पादक)

**प्रस्तावना :-** मानव जाति ने अपने उद्भव से लेकर आज तक क्रमिक विकास किया है। यह विकास सभी क्षेत्रों में परिलक्षित होता है। चिकित्सा जगत भी इससे अछूता नहीं रहा है। प्राचीन काल में उपस्थित चिकित्सा विधियों से तुलना करने पर आज की चिकित्सा विधियाँ अत्यंत परिष्कृत प्रतीत होती हैं। परन्तु, यह वैशिष्ट्य क्रमशः विकसित हुआ है और कहीं न कहीं इसका स्रोत प्राचीनकाल में उपस्थित चिकित्सा विधियां ही हैं। जबसे मनुष्य इस संसार में आया है संभवतः उसी समय से उनमें से कुछ व्यक्ति व्याधियों से भी ग्रसित होते रहे होंगे और कुछ न कुछ उपाय उनकी चिकित्सा के लिए भी किये जाते होंगे। इस प्रकार चिकित्सा का इतिहास संभवतः मनुष्य के स्वयं के अस्तित्व के समकालीन ही प्रतीत होता है। उस काल में आयु के ज्ञान एवं रक्षा के लिए किये जाने वाले समस्त उपायों को "आयुर्वेद" के अंतर्गत समाहित कर लिया गया। इन्हीं प्राचीन सिद्धान्तों के आधार पर विश्व भर में अनेक चिकित्सा प्रणालियाँ पुष्पित एवं पल्लवित हो रही है।

**वैदिक कालीन आयुर्वेद :-** आयुर्वेद का ज्ञान ऋषियों एवं महर्षियों के द्वारा समस्त विश्व में प्रचारित एवं प्रसारित हुआ। वैदिक वाङ्गमय वट वृक्ष के समान विशाल है परन्तु उसका सम्पूर्ण ज्ञान उपलब्ध नहीं है। जितना भी साहित्य उपलब्ध है उसके आधार पर उसे चार खण्डों में विभक्त किया जा सकता है जैसे संहिता, ब्राह्मण, उपनिषद् एवं वेदाङ्ग। ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद एवं अथर्ववेद प्राचीनतम संहितायें हैं। अन्य ब्राह्मण आदि ग्रन्थ इन्हीं संहिताओं का विस्तार स्वरूप माने जा सकते हैं। इस कड़ी में अंत में होने के कारण उपनिषदों को वेदान्त भी कहा गया है।

चिकित्सा शास्त्र का उपजीव्य मुख्यतः अथर्ववेद है। इसकी नौ शाखायें, पैप्पलाद, तौद, मौद, शौनकीय, जाजल, जलद्, ब्रह्मवद्, देवदर्श एवं चारण वैद्य हैं। संप्रति शौनकीय एवं पैप्पलाद शाखायें उपलब्ध हैं। अथर्ववेद के पांच कल्प सूत्र - कौशिक, नक्षत्र कल्प, अङ्गिरस कल्प तथा शान्ति कल्प है। इसका ब्राह्मण गोपथ ब्राह्मण तथा उपनिषद् प्रश्न,मुण्डक एवं माण्डूक्य हैं। अथर्ववेद को "ब्रह्मवेद" भी कहा गया है। "ब्रह्म" शब्द यहाँ ज्ञान-विज्ञान परक है।

आयुर्वेद का संबंध अथर्ववेद से अधिक स्थापित किया जाता है क्योंकि इसमें रोगों की चिकित्सा का अन्य संहिताओं की अपेक्षा अधिक विस्तार से वर्णन है। अथर्ववेद "भृग्वङ्गिरस" एवं "अथर्वाङ्गिरस" के रूप में प्रसिद्ध रहा है। "अथर्वण" का अर्थ "सौम्य कर्म" एवं "अङ्गिरस" का "आग्नेय कर्म" अथवा घोर कर्म किया जाता है और यह माना जाता है कि सौम्य कर्म का विकास काय चिकित्सा एवं आग्नेय कर्म का विकास शल्य चिकित्सा के रूप में कालान्तर में हुआ।

इसी प्रकार वेदाङ्ग छः हैं - शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द एवं ज्योतिष। कल्पसूत्र हैं श्रोत सूत्र, गृह्य सूत्र, धर्म सूत्र, पितृमेध सूत्र एवं शुल्व सूत्र। इस प्रकार विचार करने पर यह प्रतीत होता है कि न केवल चिकित्सा बल्कि अनेक अन्य विधाओं का क्रमिक विकास वैदिक वाङ्गमय से ही हुआ है। इसी क्रम में आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपवेद माना गया है।

**उपनिषद :-** उपनिषदों को वेदों का ही विस्तृत अङ्ग माना जा सकता है। अंतिम भाग होने के कारण इन्हें "वेदान्त" भी कहा गया है। उपनिषदों की संख्या के विषय में मतभेद है परन्तु उपलब्धता के आधार पर इन्हें मुख्यतः नौ बताया गया है - ईशावास्योपनिषद, केनोपनिषद्, कठोपनिषद्, प्रश्नोपनिषद्, मुण्डकोपनिषद्, माण्डूक्योपनिषद्, ऐतरेयोपनिषद्, तैत्तिरीयोपनिषद् एवं श्वेताश्वतरोपनिषद्। इनमें से पहला "ईशावास्योपनिषद्" तो शुक्ल यजुर्वेद का चालीसवां अध्याय है। अन्य आठ आरण्यक एवं ब्राह्मण ग्रन्थों के भाग हैं।

**उपनिषदोक्त चिकित्सा संबंधी प्रकरण :-** वृहदारण्यक उपनिषद् के मधुविद्या प्रकरण (२/५) में अश्विनी कुमार दध्यङ्ग आथर्वण से चिकित्सा ग्रहण करते देखे जाते हैं। अथर्वाङ्गिरस ही पूर्णरूपेण अश्विनौ में प्रतिफलित हुआ और वे भिषक् विद्या के प्रतीक बने। अपने चिकित्सा कौशल के आधार पर ही अश्विनी कुमारों को "देवानां भिषजौ" कहा गया और उन्हें आरोग्य, दीर्घायु, शक्ति, प्रजा, वनस्पति तथा समृद्धि का प्रदाता भी माना गया।

उपनिषदों में उपस्थित अश्विनी कुमारों के चिकित्सा कौशलों को वर्गीकृत करने पर आज चिकित्सा विज्ञान में उपलब्ध अनेक विशेषज्ञताओं के आरम्भिक रूपों के दर्शन प्राप्त होते हैं।

**काय चिकित्सा :-** शरीर में होने वाली सामान्य व्याधियों की औषधि द्वारा चिकित्सा। उदाहरण स्वरूप कुष्ठ रोग में उपस्थित विकार को कण्डे से रगड़कर भृंगराज, हरिद्रा, गंधक आदि द्रव्यों का लेप लगाना बताया गया है। क्षतज रक्तस्राव में लाक्षा से सिद्ध जल द्वारा सेक करके उसे रोकने का विधान बताया है। गण्ड माला रोग में शंख घिसकर लेप करने का प्रयोग मिलता है साथ ही मूत्र-पुरीष अवरोध में हरीतकी आदि औषधियों का प्रयोग भी दृष्टव्य है।

**रसायन एवं बाजीकरण चिकित्सा :-** च्यवन ऋषि को वृद्ध से जवान बनाकर उन्हें दीर्घायु बनाया। साथ ही अनेक अन्य राजाओं एवं ऋषियों को जरा से मुक्त कर संतान योग्य बनाये जाने के उद्धरण भी प्राप्त होते हैं।

**शल्य चिकित्सा :-** अनेक स्थानों पर युद्ध में घायल हुये लोगों की चिकित्सा के वर्णन

उपलब्ध होते हैं जैसे युद्ध में खेल राजा की संबंधिनी स्त्री विशाला ने अपने पैर को खो दिया। उसकी चिकित्सा एवं पुनः धातु के पैर लगाये जाने का प्रकरण उपलब्ध होता है। साथ ही टूटे हुए शरीरावयवों को जोड़ने एवं कर्ण एवं नासा संधान का वर्णन भी प्राप्त होता है। मूत्रावरोध में शलाका के द्वारा मूत्र स्राव भी दृष्टव्य है।

**नेत्र चिकित्सा :-** ऋषि परावृक् एवं ऋजाश्व को आँखें प्रदान करने सम्बन्धी वर्णन भी प्राप्त है।

**स्त्री रोग चिकित्सा :-** बन्ध्या स्त्री बध्रिमती को पुत्रवान बनाया। साथ ही प्रसव विकारों में योनि भेदन आदि विधियों का वर्णन भी किया है।

इन विधाओं के अतिरिक्त विषविज्ञान, भूतविधा, बाल ग्रहों की चिकित्सा, नशा उन्मूलन, सूर्य किरणों द्वारा क्रिमि निवारण एवं मानसिक रोगों की चिकित्सा में सत्वावजय समेत अनेक विषयों का वर्णन प्राप्त होता है।

**औषधि परिचय :-** वनस्पतियों एवं औषधियों के विकास का सुन्दर वर्णन भी उपनिषदों में प्राप्त होता है। वनस्पति एवं खनिज द्रव्यों सहित ऋग्वेद में ६७, यजुर्वेद में ८१, अथर्ववेद में २८९, ब्राह्मण ग्रन्थों में १२९ एवं उपनिषदों में लगभग ३१ औषधियों का वर्णन किया गया है।

**मौलिक सिद्धान्त :-** किसी भी विज्ञान का मूल उसके सिद्धान्तों को ही माना गया है इसी प्रकार आयुर्वेद के मूल सिद्धान्तों जैसे त्रिदोषवाद, पाचन एवं धातु व्यापार, शरीर रचना सहित अनेक मौलिक विषयों का वर्णन भी प्राप्त होता है।

**उपसंहार :-** इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि वैदिक वाङ्गमय में उपलब्ध चिकित्सा संबंधी अनेक प्रसंग अत्यंत वैज्ञानिक होने के साथ ही जनमानस के लिए अत्यंत उपयोगी भी हैं। उसी समृद्ध परम्परा पर चलते हुए आज चिकित्सा जगत में अनेक विकास किये जा रहे हैं। जिस काल का वैदिक साहित्य है उस समय लिखित रूप से साहित्य तैयार करना अत्यंत दुष्कर कार्य रहा होगा। अतः विषयों को बोध गम्य बनाने के लिए उदाहरण स्वरूप अनेक कथाओं की सहायता ली गयी होगी। साथ ही व्याधि के वे सभी निदान जो सामान्यतः दिखायी नहीं पड़ते, उन्हें समझने के लिए ही दर्शनों का प्रयोग किया गया प्रतीत होता है। अतः आज हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि आधुनिक चिकित्सा विज्ञान प्राचीन वैदिक एवं उपनिषदों में वर्णित समृद्ध विधियों एवं विषयों का ही विस्तार स्वरूप है।

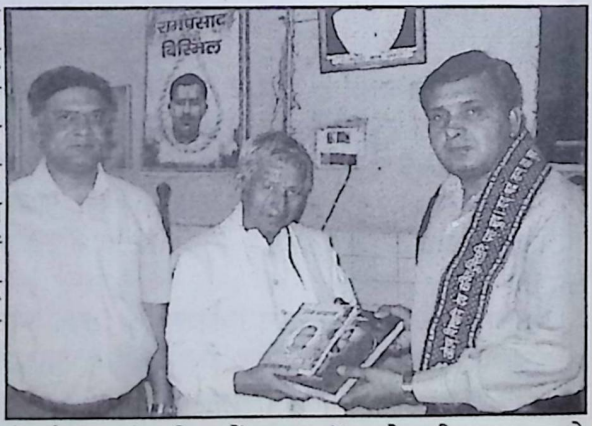


(आर्यसमाज बिहारीपुर में प्रधान डॉ० ओ० पी० अग्रवाल से भेंट स्वीकार करते डॉ० आर० के० यादव)

# आत्मा का वैज्ञानिक दार्शनिक चिन्तन

(सुश्री रीता माथुर, प्रख्यात दार्शनिक चिन्तक, बरेली)

(संदर्भ एवं परिचय :- सुश्री रीता माथुर जी वेद-वेदांगों के वैज्ञानिक पक्ष पर गाम्भीर्य अध्ययनशील एवं चिन्तक है, आपने वेदों मे वर्णित अनेक विषयों पर वैज्ञानिक चिन्तन को सप्रमाण आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया है। आपको आंग्लभाषा पर विशेष अधिकार है इसी विषय की शिक्षिका भी है लेकिन आर्यसमाज द्वारा आयोजित वैदिक सिद्धान्तों का वैज्ञानिक चिन्तन व्याख्यान माला रविवार ३१ मार्च २०१३ को सारगर्भित वैज्ञानिक व्याख्यान के रूप में प्रस्तुत किया था - सम्पादक)

सर्वप्रथम यह ज्ञात होना अनिवार्य है कि ज्ञान और विज्ञान में क्या अन्तर है ? विभिन्न विषयों का अध्ययन और समझ रखना ज्ञान है। ज्ञान में विविध मत और वाद हैं। सूत्रबद्ध, क्रमबद्ध ज्ञान विज्ञान है। विज्ञान में कोई मत नहीं है, कोई वाद नहीं है। अतः हजारों वर्ष पूर्व जो ऋषियों ने विज्ञान प्रतिपादित किया था वही विज्ञान आज भी प्रतिपादित है। यहाँ हमारा विषय आत्मा का वैज्ञानिक दर्शन है। हम सभी जानते हैं कि आत्मा को न कोई काट सकता न जला सकता और न ही सुखा सकता है। आत्मा ऊर्जा शक्ति है, जिसकी केवल अनुभूति होती है। ऊर्जा शक्ति ब्रह्माण्ड में प्रकृति में पृथ्वी के प्रत्येक कण में है। जब आप शब्दों का उच्चारण करते हैं आपकी अपनी विद्युत ऊर्जा जो आपके शरीर में है ध्वनि ऊर्जा में परिवर्तित हो जाती है। यह आपकी अपनी आत्म ऊर्जा शक्ति आपके शरीर में कैसे विद्यमान है ? यह आपकी अपनी आत्मा शक्ति परमात्मा की ऊर्जा शक्ति है जिसका विभव (इलेक्ट्रोमोटिव फोर्स) अनन्त, असीमित है। परन्तु आपकी अपनी आत्मा शक्ति सीमित है जिसका विभव निम्न है। आप जानते हैं कि परमात्मा का अर्थ है परम+आत्मा अर्थात् आत्माओं की आत्मा/परमात्मा में सभी आत्माएँ समाई हैं। अब इस मन्त्र का चिन्तन करते है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इस अमूल्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में परमात्मा की अनन्त शक्ति का किस प्रकार वर्णन किया है।

*एतमग्नि वदन्त्येके मनुमन्ये प्रजापतिम्।*
*इन्द्रमेके परे प्राणमपरे ब्रह्म शाश्वतम्।*

भावार्थ - 'स्वप्रकाश' होने से 'अग्नि', विज्ञान स्वरूप होने से मनु, सबका पालन करने से प्रजापति और परमैश्वर्यवान होने से इन्द्र, सबका जीवन मूल होने से 'प्राण' और निरन्तर व्यापक होने से परमेश्वर का नाम ब्रह्म है।

अतः परमात्मा अनन्त प्रकाश, अनन्त अग्नि, अनन्त प्राण हैं। इसलिये आत्मा परमात्मा में विलीन निम्न विभव की अग्नि, प्रकाश एवं प्राण है। आत्मा परमात्मा के विज्ञान को आप इस प्रकार समझ सकते हैं - आत्मा एक चक्र है जिसकी परिधि कही नहीं है लेकिन केन्द्र शरीर में है। परमात्मा एक चक्र है जिसकी परिधि कही नहीं है लेकिन केन्द्र प्रत्येक

जगह है। जब परिधि नहीं है तो चक्र अनन्त है और वक्रता केन्द्र भी अनन्त है। अब आपको आत्मा और जीवात्मा में क्या अन्तर है बताते हैं। स्वामी जी सत्यार्थ प्रकाश के नवम समुल्लास में बताते हैं -

*सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म यो वेद निहितं गुहायां परमे व्योमन्।*
*सोऽश्नुते सर्वान् कामान् सह ब्रह्मणा विपश्चितेति।।*

भावार्थ - जो जीवात्मा अपनी बुद्धि और आत्मा में स्थित सत्य ज्ञान और अनन्त आनन्द स्वरूप परमात्मा को जानता है वह उस व्यापक रूप ब्रह्म में स्थित है कि उस विपश्चित् अनन्त किया युक्त ब्रह्म के साथ सब कामों को प्राप्त होता है।

आत्मा परमात्मा में विलीन ऊर्जा शक्ति है। जीव आत्मा के चारों तरफ घूमता हुआ एक आवरण है जो आत्मा के प्रकाश को परमात्मा के प्रकाश से अलग करता है। यदि जीव सात्विक गुणों की प्रधानता रखता है तो यह जीवात्मा अपनी आत्मा के प्रकाश का दर्शन करती है और परमात्मा के दर्शन करती है।

यही आत्मा और जीवात्मा में अन्तर है। जीवात्मा = जीव+आत्मा। अब आप अगले मन्त्र पर चिन्तन करिये -

*सं माग्ने वर्चसा सृज सं प्रजया समायुषा।*
*विद्युर्म अस्य देवा इन्द्रो विद्यात्सह ऋषिभिः।। ऋग्वेद १,२३,२४*

भावार्थ - जब जीव पिछले शरीर को छोड़कर अगले शरीर को प्राप्त होता है तब उसके साथ जो स्वाभाविक मानस अग्नि अर्थात् सूक्ष्म शरीर। जो सत्व, रज व तम का मिश्रण है, आत्मा के साथ जाता है और वही फिर शरीर आदि पदार्थों को प्रकाशित करता है जो जीवों के पाप पुण्य और जन्म का कारण है। परमेश्वर यथायोग्य जीवों के पाप व पुण्य को जानकर उनको कर्म के अनुसार शरीर देकर सुख व दुख का भोग कराता है।

अतः यह सिद्ध है कि आत्मा ऊर्जाशक्ति है और जीव द्रव्य है। स्वामी जी के अनुसार जीव मानस अग्नि आत्मा के साथ ले जाता है। इसका तात्पर्य है कि मानस अग्नि सात्विक, रजस व तामसिक गुणों व कर्मों का प्रभाव है जो सूक्ष्म रूप में है। यह सूक्ष्म द्रव्य रूप में है। द्रव्य में भी अग्नि अर्थात् ऊर्जा है लेकिन यह ऊर्जा आत्मा शक्ति से भिन्न है यह ऊर्जा रासायनिक ऊर्जा है जो सूक्ष्म द्रव्य में विलीन है। आत्मा विद्युत ऊर्जा के रूप में नश्वर शरीर में प्रवाहित रहती है। यहाँ यह बताना फिर अनिवार्य है कि परमात्मा जीव और प्रकृति मूल कारण है। तीनों अनादि है। आत्मा परमात्मा में विलीन निम्न विद्युत विभव की ऊर्जा शक्ति है जो जीव से संलग्न होकर नश्वर शरीर का संचालन करती है। अब आप इस मन्त्र पर चिन्तन करिये -

*मैनमग्ने विदहो माभि शोचो मास्य त्वच चिक्षिपो मा शरीरम्।*
*यदा श्रृत कृणवो जातवेदो ऽ व्यै मेनं प्र हिणुतात्पितृभ्यः।। ऋग्वेद १०,१६,१*

भावार्थ - परमात्मा इस मनुष्य को सर्वथा जलाकर नष्ट नहीं करता है, न सर्वथा

संतप्त करते हैं, इसके चर्मेन्द्रिय शक्ति और सूक्ष्म शरीर अर्थात् जीव को भी नष्ट नहीं करता है। यह जीव सदा आत्मा के साथ विद्यमान रहता है। जब परमेश्वर कर्म फल देता है तो इस आत्मा को जीव के साथ पुनः माता-पिता के पास भेज देता है।

नश्वर शरीर - द्रव्य का भण्डार

सूक्ष्म शरीर अर्थात् - सत्व, रज और तम का सूक्ष्म द्रव्य रूप

आत्मा - ऊर्जा शक्ति, अग्नि, प्राण

यहाँ पर आत्मा का वैज्ञानिक दर्शन कराना है इसलिए सत्व, रज व तम और पुर्नजन्म का वैज्ञानिक विचारधारा नहीं करते हैं। यह निम्न विद्युत विभव रूपी आत्मा पृथक जीव का संचालन करती है और जीवात्मा व्यक्तिगत नश्वर शरीर का संचालन करती है। परमात्मा अर्थात् अनन्त विद्युत विभव अनन्त अनादि सृष्टि व प्रलय का संचालन करते हैं। सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में स्वामी जी ने जो परमात्मा का वैज्ञानिक दर्शन कराया है। चिन्तन करते हैं -

*अन्तश्चरति रोश्रनास्य प्राणादपानती।*
*व्यख्यन् महिषो दिवम्।।*

भावार्थ - मनुष्यों को जानना चाहिए कि विद्युत नाम से प्रसिद्ध सब मनुष्यों के अन्तःकरण में रहने वाली जो अग्नि की कान्ति है वह प्राण व अपान वायु के साथ युक्त होकर प्राण, अपान, अग्नि और प्रकाश आदि चेष्टाओं के व्यवहारों को प्रसिद्ध करती है।

अग्नि ऊर्जा है, प्रकाश ऊर्जा है, विद्युत ऊर्जा है, ध्वनि ऊर्जा है। ये सब ऊर्जा के विभिन्न रूप है और ये ऊर्जा का रूपान्तरण है। यह ऊर्जा कभी नष्ट नहीं होती है। यही अग्नि रूपी आत्मा जो जीव व नश्वर शरीर का संचालन करती है। मुख्य रूप से पाँच प्राण अर्थात् पाँच कार्यों के द्वारा नश्वर शरीर की मुख्य क्रियाओं का सम्पादन करती है -

(१) प्राण वायु – श्वसन क्रिया में प्रयोग की गई ऊर्जा।

(२) समान वायु – पाचन क्रिया में प्रयोग की गई ऊर्जा।

(३) अपान वायु – उत्सर्जन क्रिया में प्रयोग की गई ऊर्जा।

(४) व्यान वायु – रक्त परिसंचरण में प्रयोग की गई ऊर्जा।

(५) उदान वायु – तन्त्रिका तन्त्र के समस्त कार्यों में व पुर्नजन्म के कार्य में प्रयोग की गई ऊर्जा।

यही ऊर्जा रूपी आत्मा परमात्मा से साक्षात्कार कराती है -

*प्रम आरूः शितिपृष्ठस्य धासेरा मातरा विविशः सप्त वाणीः।*
*परिक्षिता पितरा स चरेते प्र सर्स्राते दीर्घमायुः प्रयक्षे।। ऋग्वेद ३,७,१*

ऋग्वेद के इस मन्त्र में स्वामी जी बताते हैं -

भावार्थ - जो शरीर में विद्युत रूप अग्नि का ब्रह्मचर्यादि उत्तम कार्यों में यथावत सेवन करते हैं वे बड़ी अवस्था को प्राप्त करते हैं। यह विद्युत रूप अग्नि क्या है ? यही अग्नि रूप

आत्मा शक्ति है, यही प्राण शक्ति है, यही ओजस शक्ति है। यह आत्मा जीव को उत्तम कार्य के लिए प्रेरित करती है। यही अग्नि रूपी आत्मा शक्ति जीव जो सत्व, रज, तम गुणों से रचित है उसकी तामसिकता को जला देती हैं। जीव को सात्विक गुणों की प्रधानता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है। आत्मा न पाप करती है न पुण्य। जीव पाप व पुण्य नश्वर शरीर के द्वारा करता है। आप कह सकते हैं कि जीवात्मा पाप और पुण्य का फल भोगती है। इस ज्ञान का भी वैज्ञानिक दर्शन है। परन्तु अभी आत्मा के वैज्ञानिक स्वरूप का चिन्तन करना है। जब यह अग्नि रूपी, विद्युतरूपी आत्मा जीव से मुक्त हो जाती है मुक्त आत्मा कहलाती है। ***मुक्त आत्मा परमात्मा में विलीन रहती है जैसा आपको बताया गया है - परमात्मा एक चक्र है जिसकी परिधि नहीं है, लेकिन केन्द्र प्रत्येक जगह है। आत्मा भी एक चक्र है जिसकी परिधि नहीं है लेकिन केन्द्र शरीर में है। मुक्त आत्मा बिना शरीर के परिधि रहित अनन्त चक्रमय परमात्मा में विचरण करती है। जब शरीर प्राप्त होता है तो नश्वर शरीर में केन्द्रित हो जाती है।*** यह अग्निरूपी, विद्युतरूपी आत्मा सर्वप्रथम जीव धारण करती है फिर जीवात्मा शरीर धारण करती है। महापुरुषों की जीवात्मा सत्व गुण व तत्व की प्रधानता रखती है।

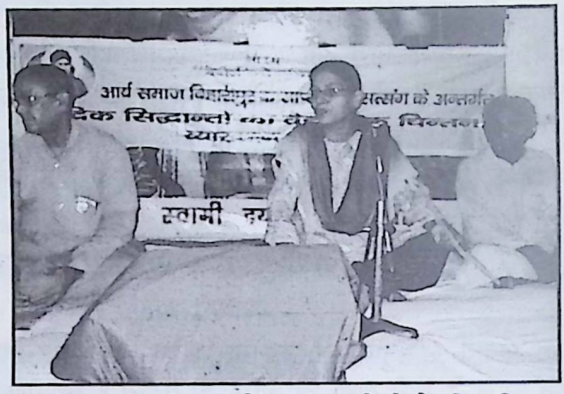

(आर्यसमाज बिहारीपुर के वैदिक सिद्धान्तों के वैज्ञानिक चिन्तन व्याख्यान माला में बोलती हुई सुश्री रीता माथुर)

सत्व गुणों से प्रधान जीवात्मा परमात्मा से साक्षात्कार करती है। यजुर्वेद के तीसरे अध्याय के सातवें मन्त्र पर चिन्तन करते हैं जैसा कि स्वामीजी ने भाषा भाष्य में समझाया है -

*अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती।*
*व्यख्यन् महिषो दिवम्।।*

भावार्थ - जो इस अग्नि की ब्रह्माण्ड और शरीर के बीच में ऊपर जाने वाले वायु से नीचे को जाने वाले वायु को उत्पन्न करती हुई दीप्ति अर्थात् प्रकाशरूपी बिजली ब्रह्माण्ड और शरीर के बीच में चलती है वही अग्नि रूपी आत्मा सूर्य लोक को प्रकट करती है।

कहते हैं समाधि अवस्था अर्थात् परमात्मा से साक्षात्कार जो अति चेतन अवस्था है में दिव्य प्रकाश दिखाई पड़ता है। यह समाधि अवस्था कैसे प्राप्त होती है, इसका वैज्ञानिक दर्शन यहाँ बताना अनिवार्य है हमें आत्मा का वैज्ञानिक स्वरूप बताना है। समाधि अवस्था में जब आत्मा सोमचक्र अर्थात् सहस्रधार चक्र अर्थात् अग्रमस्तिष्क में केन्द्रित हो जाती है

आत्मा, जो निम्न विद्युत विभव है, से इलेक्ट्रान उच्च विद्युत विभव अर्थात् ब्रह्माण्ड की ओर प्रवाहित होना शुरू हो जाते हैं और उच्च विभव से विद्युत धारा शरीर में प्रवाहित होना शुरू हो जाती है आत्मा परमात्मा का समागमन हो जाता है। यह है आत्मा-परमात्मा का वैज्ञानिक दर्शन व स्वरूप।

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान हृदय का ई०सी०जी० के द्वारा शरीर का विद्युत विभव माप करता है। मानव हृदय में 'सानस नोड' दायें अलिन्द में होता है। यह प्राकृतिक विद्युत यन्त्र है जिसे पेसमेकर कहते हैं। यह हृदय का प्राकृतिक बिजली घर है।

नश्वर शरीर में विभिन्न धन आवेशित कण जैसे हाइड्रोजन सोडियम ऋण आवेशित कण जैसे सल्फर, क्लोरीन आदि होते हैं लेकिन शरीर से जीवात्मा निकलते ही सभी उदासीन, आवेश रहित हो जाते हैं।

अतः आत्मा ऊर्जा शक्ति है। आत्मा विद्युत है, आत्मा अग्नि है।

★

## प्रयत्नशील व्यक्ति की हार कभी नहीं होती

**(संकलनकर्त्ता : स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती 'वेदभिक्षु')**

सागर की लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती।
प्रयत्नशील व्यक्ति की हार कभी नहीं होती।।

छोटी चींटी जब दाना लेकर चलती है,
वह दीवारों पर कई बार फिसलती है।
आत्मविश्वास मन में साहस भरता है,
बढ़कर गिरना, गिरकर बढ़ना नहीं खटकता है।
श्रमी की श्रमता व्यर्थ कभी नहीं होती है,
प्रयत्नशील व्यक्ति की हार कभी नहीं होती है।।

सागर में जब गोताखोर गोता लगाता है,
कई बार खाली ही हाथ लौटकर आता है।
नहीं मिलते मोती सहज गहरे पानी में,
बढ़ जाता है विश्वास इसी बेचैनी में।
झोली उसकी हरबार नहीं खाली होती,
प्रयत्नशील व्यक्ति की हार कमी नहीं होती।।

विफलता एक चुनौती है स्वीकार करो,
त्रुटि कहाँ पर हुई देखो सुधार करो।
सतत् प्रयत्न कर - विश्राम का त्याग करो,
संघर्षरत रहकर कर्म पर दृढ़ विश्वास करो।
कुछ किए बिना ही विजय प्राप्त नहीं होती,
प्रयत्नशील व्यक्ति हार कभी नहीं होती।।

# अथर्ववेद में चिकित्सा सिद्धान्त

(डॉ० श्वेतकेतु शर्मा, सम्पादक-ऋषिदर्पण, बरेली)

चिकित्सा विज्ञान में आयुर्वेद चिकित्सा का सर्वाधिक महत्त्व है। आयुर्वेद की परिभाषा महर्षि चरक ने इस प्रकार दी है आयुर्वेदयति इति आयुर्वेदः अर्थात् आयु का जो ज्ञान कराता है, उसे आयुर्वेद कहते हैं। महर्षि चरक ने चरक संहिता के सूत्र स्थान में "सोऽयमायुर्वेदः शाश्वतो निर्दिश्यते अनादित्वात् स्वभाव संसिद्धलक्षणत्वात्-मानवस्वभाव नित्यत्वाच्च (चरक सू. ३०-२६) स्पष्ट है कि आयुर्वेद को शाश्वत विज्ञान मानते हुए उपरोक्त श्लोक में इसको सिद्ध भी किया है।

आयुर्वेद वेदों के मुख्य स्रोत है। वेदों के माध्यम से ही आयुर्वेद का ज्ञान का सम्पूर्ण विश्व में प्रसारित हुआ है। वेदों में आयुर्वेद का भेषज अर्थात् भिषग्वेद कहा गया है। गोपथ ब्राह्मण में कहा है येऽथर्वाणः तद् भेषजम् अर्थात् जो अथर्वा है वह भेषज है। यही अथर्वा मान्य रूप से अथर्ववेद में प्रतिपादित है।

प्राचीन भारतीय साहित्य में चिकित्सा विज्ञान के लिए सर्वप्रथम ग्रन्थ अथर्ववेद है। वर्तमान में अथर्ववेद की शौनक शाखा ही प्रचलित है, जिसमें २० काण्ड है। ४९७७ मंत्र है, जो ऋग्वेद व अथर्ववेद में समानता रखते हैं। इसमें सत्यता और मनोवैज्ञानिकता से सम्बन्धित सूक्तों की संख्या ९०, स्वास्थ्य और उपचार के लिए १५३ सूक्तों, शरीर विज्ञान से सम्बन्धित २१५ सूक्तों का वर्णन प्राप्त होता है।

आचार्य कपिल देव द्विवेदी जी की पुस्तक वेदों में आयुर्वेद में भी आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपाङ्ग माना है। उनके अनुसार ऋग्वेद में ६७, यजुर्वेद में ८२ तथा अथर्ववेद में २८८ वनस्पतियों का विशद् उल्लेख है। अथर्ववेद में अनेक स्थानों पर रोग निवृत्ति सम्बन्धी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। अथर्ववेद का अर्थ है थर्व रहित, संशय रहित ज्ञान, जिसमें कोई संदेह की गुंजाइश न हो। विभिन्न ग्रन्थों में अथर्ववेद के अनेक नाम भी उपलब्ध हैं यथा अथर्ववेद, अथर्वाङ्गिरोवेद, अङ्गिरसवेद, ब्रह्मवेद एवं भैषज्य वेद आदि कहे गये हैं।

अथर्ववेद के अनेक नाम इस वेद के विराट् एवं व्यापक स्वरूप का बोध कराने में समर्थ हैं। अथर्ववेद में शोक, मोह, भयजनक, व्याधियों के निवारण हेतु भैषज्य विद्या, शरीरगत अन्य दुःसाध्य रोगों के लिए औषधि विज्ञान का विशद् वर्णन है। मनुष्य के आत्मिक, बौद्धिक, मानसिक और शारीरिक सभी प्रकार के विकास के लिए अथर्ववेद में गहन एवं सूक्ष्म प्रसंगरूप में चर्चाएं हैं।

प्राण एक जीवनी शक्ति है। प्राण विद्या से हृद् रोग, गुर्दा रोग, जैसे असाध्य रोगों को दूर किया जा सकता है। इन सबका वर्णन अथर्ववेद में असाध्य रोगों को दूर करने में वर्णन विद्यमान है। हस्ताभिमर्षण द्वारा विद्युत् शक्ति का संचार करके हाई ब्लडप्रेशर, दिल के दौरे पर तत्काल प्रभाव डाला जा सकता है। महौषधियों के नाम, गुण प्रयोग चिकित्सा का वर्णन अथर्ववेद में प्राप्त होता है। अथर्ववेद में यज्ञ चिकित्सा, औषधि चिकित्सा, प्राणायाम आदि

चिकित्सा का उपयोग आज भी इतना लाभकारी है। इस क्षेत्र में प्रायोगिक अनुसन्धान करना अत्यन्त उपादेय होगा।

वर्तमान समय में दूषित पर्यावरण विभिन्न रोगों का मूल कारण है। हृदय, त्वचा, केश, ज्वर, राजयक्ष्मा, कुष्ट, पीलिया, रक्ताल्पता, सन्धिवात, गठिया आदि रोगों के उपचार तथा स्वस्थ रहने के लिए आरोग्य और दीर्घायु के उपाय आदि का वर्णन अथर्ववेदोक्त क्षेत्रों में मिलता है। अथर्ववेद में अभिचार व उपचार क्षेत्रों का भी वर्णन संकलित है, अथर्ववेद में अनेक प्रकार के रोग-दोष, औषधि चिकित्सा के यथोचित सेवन से दूर हो सकता है। चारों वेदों की आत्मा यजुर्वेद है। कहा गया है कि आयुर्वेद नामोपाङ्गमथर्ववेदस्य-अथर्ववेद के पढ़ने से रोग के पैदा होने में कारण, स्वस्थ होने के लक्षण, रोगों के परिचय के लक्षण, रोगनाशक औषधियाँ, स्वास्थ्य के हित के लिए आतुरहित औषधियों का लक्षण, रोगनाशक औषधियाँ, स्वास्थ्य के हित के लिए आतुरहित औषधियों का विस्तृत ज्ञान भी होता है।

अथर्ववेद में जहाँ चिकित्सा प्रसंगों का वर्णन है, वहाँ कहीं कहीं काव्यमय, लक्षणा, व्यंजन व अलंकार से युक्त है। कहीं कहीं कूटपद भी है, प्रहेलिका के रूप में भी विद्यमान है। श्लेष तो बड़े-बड़े हैं परन्तु अर्थ को काव्य के नियमों के अनुसार ही किया जा सकता है।

**२. अथर्ववेद में चिकित्सा सिद्धान्तों का वैज्ञानिक चिन्तन :-** अथर्ववेद चिकित्सा विज्ञान से परिपूर्ण है। चिकित्सा का विभिन्न विद्याओं का वैज्ञानिक वर्णन विद्यमान है। चिकित्सा प्रसंगों का सूक्ष्म वर्णन है। इन प्रसंगों को अग्रणी व्यक्तियों ने स्वार्थ को पूर्ण करने के उद्देश्य से अर्थ का अनर्थ भी किया है, परन्तु अथर्ववेद में अनेक स्थानों पर आलंकारिक भाषा का प्रयोग पर प्रसंग को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है।

अथर्ववेद में वर्णित कुछ चिकित्सा सिद्धान्तों का वर्णन कर उसका दार्शनिक वैज्ञानिक चित्रण प्रस्तुत है :-

**३. अथर्ववेद में सौन्दर्यवर्धन औषधियां :-** वैदिक काल में मानव जीवन वनस्पतिमय था। मनुष्य अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति वनस्पतियों के माध्यम से करता था। आहार तथा अन्य लौकिक उपयोग के अतिरिक्त औषधियों तथा वनस्पतियों का औषधि प्रादुर्भाव प्रारम्भ हो गया और तभी से इस विघ्न के निवारण के लिए औषधि का प्रयोग हुआ। प्रयोग की दृष्टि से औषधियों को अथर्ववेद के शौनकीय संहिता ११.४६ में

*आथर्वणीराङ्गिरसी दैवी मनुष्यजा उत।*
*औषधयः प्र जायन्ते यदा त्वं प्राण जिन्वसि।।*

इसी प्रकार अथर्ववेद में सौन्दर्यवर्धन औषधियों का उल्लेख मिलता है यथा -

*मां पश्याम् तथा इर्दे खनामि भेषजं मां पश्यमभिरोरुदम्।*
*परायतो निवर्त न मायतः प्रतिनन्दनम्। अथर्व. ७.३८.१*

स्पष्ट है कि आत्म श्रृंगार मानव की स्वाभाविक वृत्तियों में से एक है। जिस प्रकार की सौन्दर्य औषधियाँ तत्कालीन समाज में प्रयुक्त की जाती थीं, उनका परिवर्तित स्वरूप आज भी दैनिक जीवन में मिल जाता है।

अथर्ववेद में सौन्दर्यवर्धन औषधियों का वर्णन इस प्रकार आया है -

१. केशवर्धनी, २. खदिर, ३. गुग्गल, ४. तिल, ५. दूर्वा, ६. नलद, ७. पर्ण (पलाश),

८. पारिमद्, ९. अश्वत्थ, १०. शतावर, ११. शमी, १२. अमिरोरूद, १३. ऋतावरी (ऋतजात), १४. तलाश (तलाशा), १५. पृतुदु, १६. पुष्पा, १७. बिस, १८. रजनी, १९. रामा, श्यामा आदि आयुर्वेद के महत्वपूर्ण ग्रन्थ भाव प्रकाश निघन्टु में भी उपरोक्त सौन्दर्य औषधियों का विस्तृत वर्णन दिया गया है।

**४. अथर्ववेद में आयुर्विज्ञान :-** अथर्ववेद में आयुष वृद्धि के लिए अनेक वर्णन मिलते है। शुद्ध आचार विहार एवं आहार व्यवहार से निःरोगता पूर्वक दीर्घायु को प्राप्त किया जा सकता है और यदि कोई रोग हो भी जाता है, तो उसका निवारण भी किया जा सकता है।

अथर्ववेद के १०वें काण्ड में पार्ष्णी नामक सूक्त भी ३३ ऋचाओं में प्रश्नोत्तर के रूप में सम्पूर्ण मानव शरीर की रचना को अत्यन्त सुन्दर रूप में वर्णन किया है। मानव शरीर की अस्थि पंजर सामने रखकर एक-एक अस्थियों का विस्तृत चिन्तन है। पार्ष्णी सूक्त मानव शरीर रचना का अद्भुत वैज्ञानिक वर्णन प्रस्तुत करता है। इसी प्रकार अथर्ववेद के १०वें भाग में ८वें सूक्त का चौथा मंत्र शरीर की ३६० अस्थियों का उल्लेख किया गया है।

**ऋग्वेद का मंत्र -**

*त्रयो अस्विना दिव्यानी भेषजा त्रिः पार्थिवानी त्रिरुदत्तमद्भ्याः।*
*ओमानं शर्योर्भममकाय सूनवे त्रिधातु शर्मवहतं शुमस्वती।।*

इस मंत्र में आयुर्वेद तत्वों एवं सिद्धांतों का वर्णन है।

**५. अथर्ववेद में विषमज्वर चिकित्सा सिद्धान्त :-** भारतीय वैदिक संस्कृति ज्ञान विज्ञान से ओत-प्रोत है। जहाँ एक ओर विश्व के वैज्ञानिक विषमज्वर के लक्षणों से सम्बन्धित शोध कार्य कर रहे थे, वहीं हमारे प्राचीन मनीषियों ने अथर्ववेद में विषमज्वर के निदान, लक्षणों व चिकित्सा की विस्तृत रूपरेखा उल्लिखित कर रखी है।

अथर्ववेद में विषमज्वर एवं उनके परजीवियों के अनुरूप ही विभाजित किया गया है। प्लाज्मोडियन ओवेल से होने वाले विषम ज्वर को 'सन्ततः सततोऽन्येद्युस्तृतीक चतुर्थकौ' से स्पष्ट है, कि तृतीयक ज्वर बताना ऋषियों के विस्तृत ज्ञान को इंगित करता है। अथर्ववेद में इस प्रकार के ज्वर को यज्ञाग्नि द्वारा इसके सहकारी शिरःपीड़ा, अंगों में दर्द आदि को दूर किया जा सकता है। ऐसा स्पष्ट उल्लेख है - यथा -

*अङ्गै अङ्गै शोचिषा शिश्रयाणां नमस्यन्तस्तवा हविषा विधेम्।*

*अथर्व. १.१२.२*

इसके अतिरिक्त विषमज्वर पीड़ितों को दूर करने हेतु अथर्ववेद में अन्य औषधियाँ भी विद्यमान है यथा -

*आशरिकं विशरिकं वलसां पृष्टयामयम्।*
*तक्मानं विश्वशारदमरसां जंगडस्करत्।।*

*-अथर्व. १९.३४.१०*

इस सूक्त में मलेरिया व पसलियों के अन्य ज्वर के निदान का उल्लेख है। विषम ज्वर को यज्ञाग्नि द्वारा कैसे उन्मूलन किया जा सकता है इस भाव को अथर्ववेद में निम्नलिखित सूक्त के द्वारा स्पष्ट किया है -

*यत् त्वं शीतोऽथो रूरः सहकासाऽवेपयः।*
*मीमास्ते तक्मन् हेतसयताभिः स्म परिवृङ्ढग्धि नः।।*
*-अथर्व. ४.२२.१०*

अतः स्पष्ट है कि अथर्ववेद में विषमज्वर का निदान व उसकी वैज्ञानिक चिकित्सा यज्ञाग्नि द्वारा कैसे दूर किया जा सकता है, इसका वैज्ञानिक चिन्तन बताया है।

**६. अथर्ववेद में सूर्य चिकित्सा सिद्धान्त :-** प्राचीन प्राकृतिक चिकित्सा हमारे ऋषि मुनियों की महत्त्वपूर्ण चिकित्सा मानी जाती थी। शारीरिक कष्टों को दूर करने के लिए लक्षण पर आधारित सूर्य चिकित्सा का अत्यन्त महत्व है। अथर्ववेद में सूर्य चिकित्सा पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। अथर्ववेद में सूर्य चिकित्सा के माध्यम से रोग, शत्रु व प्रतिपक्ष के निवारण हेतु अनेक मंत्रों का वर्णन है। सूर्य से गण्डमाल, कामला, असूतिका, शल्य, कायश्लेष्मादि, कृतिनाशक, हृदय रोग, पीलिया अदि रोगों को सरलता से दूर किया जा सकता है।

इसी प्रकार शरीर के अधिकांश अंग जैसे पैर, जानु, श्रोणि, कंधा, मस्तक, कपाल, हृदय आदि से सम्बन्धित रोगों को उदीयमान सूर्य रश्मियों से दूर किया जा सकता है, आधुनिक वैज्ञानिकों द्वारा रेडियोथैरेपी भी सूर्य चिकित्सा का आधुनिक स्वरूप है।

सूर्य की सात रश्मियां विभिन्न रोगों को दूर करने में समर्थ हैं। उदय होते हुए सूर्य के लाल वर्ण के सेवन से तथा लाल वर्ण की गाय का दूध पीने से रोग निवृत्ति होकर दीर्घ आयुष्य की प्राप्ति होती है। सूर्य की किरणों के द्वारा विटामिन डी प्रचुर मात्रा में प्राप्त होता है, जिससे शरीर में कैल्शियम व फास्फोरस का निर्माण होता है, जिससे शरीर की हड्डियाँ व दांत मजबूत होते हैं।

आधुनिक चिकित्सा में बाल रोग विशेषज्ञों द्वारा तुरन्त जन्मे बच्चे या समय से पूर्व जन्मे बच्चों को प्रातःकालीन सूर्य की किरणों में लिटाया जाता है, जिससे बच्चे स्वस्थ रहें एवं पीलिया या रक्त की कमी न हो सके।

अथर्ववेद में उल्लिखित किया है 'रक्षोहणं वाजिनमाजिर्धामः' अर्थात् रोगों को नष्ट करने वाला वाजिनम् सूर्य को या अन्न युक्त पदार्थ को सूंघता है या सेवन करता है, स्पष्ट है कि सूर्य की किरणों का सेवन अनेक प्रकार के रोग कीटाणुओं को नष्ट करते हैं। अथर्ववेद के इन्हीं अध्यायों के मंत्रों में स्पष्ट वर्णन है कि गर्भवती स्त्रियों के शरीर में विभिन्न बैक्टीरिया, वाइरस या जीवाणु के प्रवेश को सूर्य की किरणें रोकती है तथा इन जीवाणुओं को नष्ट भी करती है। अथर्ववेद के मंत्र ८.४.२२ 'उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्वयातु-मलकोकयातुम् सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषमेव प्रमृण रक्ष इन्द्र' इस मंत्र में स्पष्ट है कि हे इन्द्र सूर्य के द्वारा उल्लू की गति वाले, भेड़िये की गति वाले, कुत्ते की वृत्ति वाले चकवों की चाल वाले, गरुड़ व गिद्ध की चाल वाले को पत्थर से कुचलकर हमारी रक्षा करो।

यहां उल्लू के समान जो व्यक्ति प्रकाश व ज्ञान से दूर भागते हैं व अन्धकार, अज्ञान को पसन्द कहते हैं। भेड़िये की गति का तात्पर्य सहयोग से दूर रहना, कुत्ते की चाल का तात्पर्य आत्मसम्मान से रहित लालची व्यक्ति, कोक-चकवे की गति का तात्पर्य अत्यन्त कामी, गरुड़ की चाल का तात्पर्य ऊपर से साधुजन्य भेष तथा कामी, हिंसक, विनाश से भरा हुआ

हो, गिद्ध की चाल का तात्पर्य जो स्वयं शिकार नहीं करता अपितु दूसरों के शिकार किए हुए पशुओं को खाता है और कोई भी काम जनहित का नहीं करता है, केवल पेड़ पर बैठा रहता है और अपने भोजन को दूर से देख लेता है।

उपरोक्त मंत्र में रूपक व मुहावरे से युक्त आयुर्वेदिक चिकित्सा का वर्णन है। यहां भूत, प्रेत, राक्षस, जिन्न, देवता आदि का अपरोक्ष रूप से अर्थ करना मिथ्या व कल्पित है। विभिन्न पशु-पक्षियों से मिलते-जुलते लक्षणों से युक्त शरीर को रोग ग्रसित करने वाले जीवाणुओं का द्योतक है। उन जीवाणुओं को सूर्यकिरण चिकित्सा द्वारा नष्ट करने का उपदेश किया है, यही इसका वैज्ञानिक चिन्तन है।

आचार्य कपिल देव द्विवेदी की पुस्तक 'वेदों में आयुर्वेद' में भी सूर्य चिकित्सा का वर्णन मिलता है। उन्होंने वेदों के आधार पर प्रामाणिक मानकर इसका विश्लेषण किया है। अथर्ववेद में अनेकों स्थानों पर सूर्य चिकित्सा का वर्णन मिलता है यथा -

१. सूर्यआत्मा जगतस्तस्थुषश्च। अथर्व. १३.२.३५। अर्थात् सूर्य स्थावर व जंगम जगत् की आत्मा है।

२. आरोग्यं भास्करादिच्छेद्, अर्थात् निरोगिता की इच्छा है तो सूर्य की शरण में जाओ।

३. उद्यन्त्सूर्यो नुदतां मृत्यु पाशान् , अथर्व. १७.१.३०। अर्थात् उदित होते सूर्य से अवरक्त हल्की लाल किरणें निकलती है, जिनमें जीवन शक्ति व रोगों को नष्ट करने की क्षमता है।

४. अनुसूर्यमुदयतां हृद्द्योतो हरिमा च ते। गो रोहितस्य वर्णने तेन त्वा परि दध्मसि, अथर्व. १.२२.१। सूर्य की अवरक्त किरणें हृदय की बीमारियों एवं खून की कमी को दूर करती है।

५. शीर्षक्ति शीर्षामयं कर्णशूलं विलाहितं। सर्व शीर्षण्यं ते रागं वहिर्निर्मन्त्रयामहे, अथर्व. ६.८.१ एवं ८.६.२२। सूर्य की किरणें सिरदर्द, कानदर्द, रक्त की कमी, सभी प्रकार के सिर रोग, बहरापन, अन्धापन, शरीर में किसी प्रकार का दर्द, अकड़न, सभी प्रकार के ज्वर, विष का प्रभाव, वात रोग, कफज रोग, आंख के रोग, फेफड़ों के रोग, टी. वी., हड्डी व पसली के रोग, घाव, रीढ़ की हड्डी के रोग आदि को लाभ करती है।

६. अपचितः प्र पतत सुपर्णो वसते रिव, अथर्व. ६.८३.१। गण्डमाल, गलने व सड़ने वाली बीमारियों तथा कुष्ठ आदि रोगों को सूर्य रश्मि नष्ट करती है।

७. सूर्यस्यभागे अमृतस्य लोके, अथर्व. ८.१.१। मृत्यु के बन्धनों को तोड़ना है तो सूर्य से सम्पर्क बनायें।

८. यः सप्त रश्मी वृषभः - अथर्व. २०.३४१। सूर्य में सात रश्मियां हैं। यह सात रंग लाल, नारंगी, पीला, हरा, आसमानी, गहरा नीला, बैंगनी है। लाल रंग आयोडीन से अधिक गुणकारी है। नारंगी रंग कफजन्य रोगों का नाश करता है। पीला रंग मानसिक शान्ति के लिए उत्तम है। हरा रंग मस्तिष्क, नाड़ी संस्थानों को बल देता है, रक्त शोधक है। आसमानी रंग पोषण टानिक व एंटीसैप्टिक है, ज्वर के लिए रामबाण व मस्तिष्क आदि रोगों के लिए लाभकारी है। नीला रंग शीतलता व शान्ति प्रदान करता है, आमाशय योनि रोग व अण्डकोश में लाभकारी है। बैंगनी रंग लाल रक्त कणिकाओं को बढ़ाता है।

**७. अथर्ववेद में हस्त स्पर्श चिकित्सा सिद्धान्ति :-** वैदिक शास्त्रों में पांच ज्ञानेन्द्रियों का वर्णन किया गया है, ये ज्ञानेन्द्रियां शब्द, स्पर्श, रूप, रस व गन्ध है। हस्त स्पर्श चिकित्सा में ये पांच ज्ञानेन्द्रियों का अत्यन्त महत्त्व है। व्यवहार रूप में सभी चिकित्सा पद्धतियों में इनका प्रयोग किसी न किसी रूप में होता चला आ सहा है।

अथर्ववेद में वायु को संतापहारक व रोग निवारक देव कहा गया है। यथा - आ वात वाहि भेषजं विवात वाहि यद्रपः। त्वं हि विश्वभेजं देवानां दूत ईयसे' अथर्व. ४.१३.३। चरणस्पर्श करने में प्रत्युत्तर स्वरूप सिर अथवा पीठ पर हाथ रखकर आशीर्वाद कहना, मां द्वारा बच्चे को सहलाना, थपथपाना, पुचकारना, गुरु द्वारा शिष्यों को अथवा पिता द्वारा पुत्र को पीठ ठोंक कर उत्साह देना आदि क्रिया कलाप हस्त स्पर्श चिकित्सा के महत्व को बढ़ाते हैं। इसी प्रकार किसी के आगमन पर हाथ मिलाना, स्वागत वचन कहना आदि भी सामान्य रूप में प्रसन्नता, हर्ष, उल्लास का सूचक है।

अथर्ववेद का मंत्र है -

*अयं मे हस्तो भगवानयं मे भगवत्तरः।*
*अयं मे विश्वभेषयोऽयं शिवाभिमर्शनः।। अथर्व.४.१३.६*

अर्थात् यह मेरा हाथ सामर्थ्यशाली है और मेरा दूसरा हाथ तो अधिक ही प्रभावशाली है। मेरे इस हाथ में सब रोग दूर करने वाली शक्तियाँ और मंगल करने का धर्म है।

उपरोक्त मंत्र हस्त स्पर्श चिकित्सा के भावात्मक पक्ष को इंगित करता है। यहाँ हस्त स्पर्श का भाव विशेष रूप से चिकित्सा के क्षेत्र में कार्य करने वाले चिकित्सक व उनके सहायक के अच्छे व्यवहार, नम्र व्यवहार, विश्वासयुक्त व्यवहार तथा रोगी के रोग को दूर करने के प्रति रोगी को आत्मविश्वास उत्पन्न करने का भाव है। वैदिक काल में चिकित्सक का व्यवहार भावप्रधान व विश्वासप्रधान ही था। चिकित्सक स्वयं अपने व्यवहार से, स्पर्श करने मात्र से रोगी के रोग को सरलता व आत्मविश्वास से प्रस्तुत करता था, जिससे रोगी को आत्म विश्वास व प्रतिरोधात्मक भावना का विकास स्वतः होने लगता था।

अथर्ववेद में हस्त स्पर्श चिकित्सा का वर्णन चिकित्सकों एवं चिकित्सा से जुड़े लोगों को रोगी के साथ आत्मीय व्यवहार करने का संदेश प्रदान करता है। आत्मीय व्यवहार से रोगी को मनः शान्ति, धैर्य, आत्मबल व विश्वास प्राप्त होता है। इससे रोग निदान व चिकित्सा में सरलता, सफलता एवं स्वस्थ जीवन की प्रेरणा प्राप्त होती है। अथर्ववेद में हस्त स्पर्श चिकित्सा का यही वैज्ञानिक चिन्तन है।

**८. अथर्ववेद में औषधि चिकित्सा सिद्धान्त :-**

**रसायन चिकित्सा** - अथर्ववेद चिकित्सा की दृष्टि से पूर्ण वैज्ञानिक ग्रन्थ है। इसमें शरीर को बलकारी, पौष्टिक बनाने के लिए रसायन चिकित्सा का वर्णन मिलता है -

*शमीमश्वत्थ आरुठस्तत्र पुंसुवनं कृतम्।*
*पुमान् पुंसः परिजातोः अश्वत्थः खदिरादधि।। अथर्व. ६.११.१*

अथर्ववेद के उपरोक्त मंत्र में रसायन शास्त्र का सैद्धान्तिक वर्णन मिलता है अर्थात् शमी वृक्ष, अश्वत्थ, खदिर वृक्ष आदि के संयोग से पुरुष सन्तान कैसे उत्पन्न कर सकता है तथा पुरुषत्व स्थिर रखने के लिए उपरोक्त औषधियों से रसायन चिकित्सा करनी चाहिए।

इसी प्रकार अथर्ववेद के प्रथम काण्ड के २२ च २३ सूक्त में रोहित औषधि का वर्णन किया गया है। यह औषधि सूर्य के सामने विकसित होती है तथा एक श्रेष्ठ रसायन के रूप में इसका प्रयोग किया जाता है।

**श्वेत कुष्ठ औषधि :-** अथर्ववेद के काण्ड के प्रथम सूक्त २३ में औषधि का वर्णन आया है। यह औषधि श्वेत कुष्ठ को नाश करने वाली श्रेष्ठ औषधि बताई गई है। रामा, कृष्णा व आसिक्कनी औषधियां रात्रि में खिलती हैं, जो श्वेत कुष्ठ को दूर करने का काम करती है। बिना समय के केशों का श्वेत हो जाने पर भी यह औषधि लाभप्रद है।

बलदायक औषधि - अथर्ववेद के काण्ड ५ सूक्त ४ में -

*योगिरिष्वः जायथः वीरुधां बलवत्तमः*

अर्थात् कुष्ठ या कुढा नामक औषधि बलदायक होती है।

विषनाशक औषधि - अथर्ववेद के सू. १४ मंत्र १ में -

*सूपर्णस्त्वान्य विन्दत्। सूकरस्त्वा नन्नसा।।*

अर्थात् विष नाशक औषधियों की जानकारी मुख्यतः सुपर्णा (गरुड़) और सूकर को होती है। वे इन औषधि को पृथ्वी पर खोदते हैं, जिससे विष औषधि का ज्ञान हो जाता है।

९. अथर्ववेद में पशु पक्षियों को औषधि ज्ञान :- अथर्ववेद के निम्नलिखित मंत्रों में पशु पक्षियों में औषधि ज्ञान का वर्णन मिलता है -

*१. वराहो वेद वीरुधं नकुलो वेदभेषजीम्।*
*सर्पागंधां यां विदुस्ता अस्मा अबसे हुवे।। अथर्व. ८.७.२३*

२. पुष्यमती प्रसुमतीः फलनी रफला उत....। अथर्व. ८.७.२७। अर्थात् वराह (सुअर), नकुल (न्योला), सांप आदि गंधर्व औषधियों को जानते हैं।

३. यथा नकुली पिच्छद्य संदद्यात्यर्हि पुनः....। अथर्व. ६.१३९.५। न्योला सांप को छेदन करके पुनः जीड़ देता है। न्योले को घाव ठीक करने वाली औषधि का ज्ञान है।

स्पष्ट है कि उपरोक्त पशु पक्षियों को चिकित्सा में प्रयुक्त होने वाली विभिन्न औषधि का ज्ञान है। इसलिए इन जीवों को औषधि ज्ञान के लिए पाला जाता था, हत्या नहीं की जाती थी। इसका संरक्षण व समयानुसार उपयोग होता था।

**१०. अथर्ववेद में मणियों से मानसिक चिकित्सा सिद्धान्त :-** अथर्ववेद में पांच प्रकार की मणियों का वर्णन मिलता है - १. वरुण मणि २. दर्भमणि ३. अतिसर मणि ४. पर्ण मणि ५. औदुम्बर मणि। इन मणियों का उपयोग मानसिक रोगों में अधिक लाभप्रद है।

१. वरुण मणि :-

अयं मे वयरणो मणिः। अथर्व. १०.३.१

२. दर्भ मणि :-

*इमं बध्नामि ते मणि दीर्घायुत्वाय तेजसे।*
*दर्भं सपत्न दम्भनं द्विषतस्तपनं हृदः।। अथर्व. १९.२८.१*

यह दर्भमणि कुश है कुशों की जड़ों में उत्पन्न होने वाला कोई रत्न है। कुश को धारण करने से अनेक लाभ है। इस मणि का प्रयोग भी मानस रोगों में अधिक होता है।

३. अतिसर मणि :-

*अयं प्रतिसरो मणिः वीते वीतराय वध्यते। अथर्व. ८.५.१*

यह मणि मानसिक उत्सुकता व वीरता बोधक है। भय से दूर हटकर वीरता के गुणों का बोधक है।

४. पर्ण मणि :-

*आयमगन् पर्णमणि र्बली बलेन प्रमृणन्त्सपत्नान्। अथर्व. ३.५.१*

यह मणि वृक्ष से ही बनती है, वृक्ष की पकी लकड़ी में ही बनाई जाती है। इस मणि का उपयोग बालों को बढ़ाने में भी किया जाता है। कुछ लोग इस मणि का उपयोग झाड़ फूंक, जंतर मंतर आदि से लोगों को भ्रमित करने का कार्य करते हैं। यह लोग उपरोक्त मंत्र का अनर्थ करके भोली भाली परेशान जनता को अर्थलाभ के लिए भ्रमित करते रहते हैं।

वास्तविकता यह है कि आयुर्वेद में मणियों का उपयोग भस्म के रूप में औषधि के लिए होता है। इस औषधि से विभिन्न प्रकार के मानसिक रोग दूर किये जाते हैं। यही इसका वैज्ञानिक वैदिक आधार है।

५. औदुम्बर मणि :- यह मणि गूलस से उत्पन्न होने वाली मणि है -

*औदुम्बरेण मणिना पुष्टि कामाय वेधसा। अथर्व. १९.३१.१*

मानसिक रोगों की मणियों के अतिरिक्त अथर्ववेद में मनसा परिक्रमा मंत्र 'प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो....' ३.२७.१, दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपति... ३.२७.२, प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपति... ३.२७.३, उदीची दिक् सोमोऽधिपति... ३.२७.४, ध्रुवादिग् विष्णुरधिपतिः... ३.२७.५, ऊर्ध्वादिग् बृहस्पतिरधिपति... ३.२७.६, आदि में भी मानसिक सन्तुलन बनाने तथा मानसिक रोगों को दूर करने के लिए सकारात्मक सोच उत्पन्न करने का महत्वपूर्ण संदेश दिया गया है।

**११. अथर्ववेद में जल चिकित्सा सिद्धान्त :-**

ज्ञान की अक्षय निधि वेदों में चिकित्सा विज्ञान के विविध विषयों का उल्लेख है, वहीं मानव जीवन की सुरक्षा के लिए प्रकृति के विभिन्न रूपों अग्नि, जल, वृक्ष आदि के महत्त्व को भी प्रतिपादित किया गया है। ब्रह्माण्ड सृष्टि का प्रथम तत्त्व जल न केवल प्राणियों का जीवनाधार है, अपितु संसार में दृश्यमान समस्त चैतन्य का मूल भी है। स्वास्थ्य, धन, शक्ति, दीर्घायु और अमरत्व की प्राप्ति हेतु जल ही है। वेदों के अनुसार जल ही अग्नि, वनस्पति आदि का उत्पादक, मनुष्य के जीवन का साधन तथा सभी औषधियों की औषधि है। जल से रोग निवारक और पुष्टिवर्धन पदार्थ उत्पन्न होते हैं। जल अपने रस से औषधियों को बढ़ाता है और उत्तम रसयुक्त जल के संयोग से रोगों का नाश होता है। जल के प्रयोग से प्राणों में दर्शन शक्ति, श्रवण शक्ति, घोष ध्वन्यात्मक शब्द व वाक् वर्णात्मक शब्द बोलने की शक्ति प्राप्त होती है।

अथर्ववेद के काण्ड ६ अ. ५८ मं. में जल सम्बन्धी द्रव्य से समस्त रोगों को दूर करने तथा सुखों को प्राप्त करने का विस्तृत वर्णन किया है। वृष्टि की प्रार्थना व जल के गुणों का वर्णन भी किया गया है। जल ही सांसारिक पदार्थों की शुद्धि का निदान है। औषधियां सारभूत तत्त्वों से युक्त है। संसार में वृष्टि, नदी, कूप आदि इसलिए है जिससे मनुष्य जल चिकित्सा करके निरोग हो सके।

आधुनिक वैज्ञानिकों ने भी जल का वैज्ञानिक विश्लेषण $HO_2$ अर्थात् ऑक्सीजन व हाइड्रोजन के रूप में किया है, जो प्राण शक्ति का द्योतक है। ऑक्सीजन के बिना मनुष्य का जीवन रहित है, इसी प्रकार जल के बिना जीवन नहीं है।

**१२. अथर्ववेद में यज्ञ चिकित्सा विज्ञान :-** चिकित्सा विज्ञान का विस्तृत चित्रण यदि कहीं देखने को प्राप्त होता है, तो अथर्ववेद सर्वोपरि है, चिकित्सा की विभिन्न विद्याओं के साथ अथर्ववेद में यज्ञ चिकित्सा का विस्तार से वर्णन विद्यमान है।

यह एक विलक्षण सत्य है कि शरीर की क्रिया व्यापार को चलाने वाली रस, रक्त स्राव विहीन नाड़ियां होती हैं, जिनमें इससे भी कहीं अधिक सूक्ष्मतम प्राण चेतना प्रभावित होता है। यदि कोई ऐसी पद्धति हो जो स्नायु संस्थान को प्रभावित कर सके तो उसे आधुनिक इन्जेक्शन चिकित्सा को ही आजकल प्रमुखता से प्रचलित तथा त्वरित लाभप्रद माना जा रहा है, परन्तु इससे भी कहीं अधिक सूक्ष्मतम वायु में मिश्रित होकर शरीर में पहुँचने वाली औषधि आयुर्वेदिक यज्ञ अधिक कारगर हो सकती है।

अथर्ववेद में यज्ञ चिकित्सा के अतिरिक्त भारतीय आयुर्वेदाचार्यों जैसे - चरक, धन्वन्तरि, सुश्रुत, बाग्भट आदि ने भी यज्ञ चिकित्सा को माना है। ऋषियों ने इसे आत्मोत्कर्ष का अमोघ साधन माना है। यदि इसकी गहराई में न जायें, केवल भौतिक स्तर तक ही कल्पना करें तो यज्ञ की गरिमा अपार है। यज्ञ आरोग्य की दृष्टि से सर्वोपरि चिकित्सा है। वन्ध्यत्व के निवारण से लेकर भयंकर असाध्य रोगों के निवारण में यज्ञ का प्रयोग किया जाता है। यज्ञ के माध्यम से औषधि का गुण अत्यन्त सूक्ष्म बना दिया जाता है। यज्ञ का वैज्ञानिक आधार भी यही है कि अग्नि अपने में जलाई गई वस्तुओं को करोड़ों गुना अधिक सूक्ष्म बनाकर वायु में फैला देती है। एक छोटे से प्रयोग से हम इस तथ्य को और अधिक अनुभव कर सकते हैं। एक मिर्च उतनी अधिक तीखी नहीं होती परन्तु उसे जला दिया जाये तो उसका प्रभाव दूर-दूर तक फैल जाता है।

वैज्ञानिक स्तर पर अग्नि की सूक्ष्मिकरण सामर्थ्य सिद्धान्त फ्रांस के डॉ० हाफकिन तथा मद्रास के सेनेट्री कमिश्नर डॉ० कर्नल किंग के प्रयोगों द्वारा प्रमाणित की गई है। उनका कहना है कि आग में घी जलने पर कोसों दूर के कीटाणु मर जाते हैं। घी, चावल, केसर आदि के धूएं से विष का नाश होता है और वायु में घुले हुए विभिन्न पदार्थ वर्षा के साथ जमीन में चले जाते हैं तथा खाद बनकर पृथ्वी की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हैं।

यज्ञ की गैस कष्ट को रोकती है। शरीर के अन्दर और बाहर के छोटे बड़े कीटाणुओं को नष्ट करने के लिए उपयोगी सिद्ध हुई है। इसके अनेक प्रयोग किये जा चुके हैं। डॉ० कुन्दन लाल, डॉ० रामप्रकाश-चण्डीगढ़, डॉ० स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती-इलाहाबाद ने अनेक प्रयोगों से इसको सिद्ध किया है।

यज्ञ में स्वास्थ्य संवर्धन व रोग निवारण की अद्भुत शक्ति है। वायुभूत बनी औषधियां जितना काम करती हैं, उतना वे खाने या पीने से नहीं कर सकती हैं। भयंकर असाध्य रोगों के लिए वैज्ञानिक प्रयोग सिद्ध हैं, कि औषधियों के साथ ऑक्सीजन मिश्रित वायु सेवन की सुविधा हो तो रोग को नष्ट करने में अत्यधिक लाभ हो सकता है। यदि यह वायु औषधि मिश्रित हो तो निःसंदेह उसका प्रभाव शरीर पर अधिक होगा।

प्राण वायु ऑक्सीजन भी एक औषधि है। प्रातःकाल जलवायु में जब ऑक्सीजन की मात्रा अधिक होती है, तो टहलने जाना आरोग्यवर्धक माना जाता है। वायु में लाभप्रद तत्व मिले तो उसकी उपयोगिता का लाभ अधिक मिलेगा। यज्ञ द्वारा इसी प्रयोजन को पूरा करता है। उपयोगी औषधियों को वायुभूत बनाकर और उसका लाभ वातावरण के सम्पर्क में आने वाले को मिले, तो आरोग्य की दृष्टि से यज्ञ का लाभ अधिक महत्त्वपूर्ण है।

शारीरिक रोगों के निवारण करने के अतिरिक्त यज्ञ से मानसिक रोगों के निवारण की अपूर्व क्षमता है, फल स्वरूप सनक, उद्वेगा, आवेश, संदेह, कामुकता, अहंकार, अविश्वास, निराशा, आलस्य, विस्मृति आदि अनेक मनोरोगों में ऐसे व्यक्ति उद्विग्न रहते हैं, कलह करते हैं, सम्बन्धित लोगों से खिन्न बने रहते हैं, फलस्वरूप उनकी प्रगति रुक जाती है और अनेक प्रकार की हानियाँ उठानी पड़ती हैं। इन सभी मनोरोगियों की एकमात्र चिकित्सा यज्ञ है। यज्ञ सामग्री की सुगन्ध के साथ दिव्य वेदमन्त्रों के प्रभावशाली कम्पन मस्तिष्क के गर्म स्थानों को प्रभावित करते हैं। विशिष्ट सुगन्ध से कीटाणुओं का नाश करते हैं। फलतः मनोविकारों के निवारण में यज्ञ का प्रभाव पड़ता है।

आयुर्वैदिक यज्ञ अर्थात् हिमालय की कंदराओं से प्राप्त जड़ी बूटियों वाली लाभकारी औषधियाँ अग्नि के सम्पर्क में आकर वायु द्वारा शरीर के अंग, प्रत्यंगों, नस, नाड़ियों में सूक्ष्म से सूक्ष्म रूप में प्रवेश कर जीवाणुओं को समाप्त करने का बल या प्रतिरोधक क्षमता उत्पन्न करती है। यही यज्ञ का वैज्ञानिक विश्लेषण है।

१. अथर्ववेद के विभिन्न मन्त्रों में यज्ञ की विशेषताओं का वर्णन विद्यमान है -

*विद्म वै ते जायान्य जानं यतो जायान्य जायसे।*
*कथं ह तत्र त्वं हनो यस्य कृण्मो हवि गृहे।। अथर्व. ७.७६.५*

अर्थात् हे भयंकर रोग तेरे उत्पन्न होने को हम निश्चित जानते हैं। तू जहां से उत्पन्न होता है और वहां किस प्रकार हानि कर सकता है। जिस घर में विद्वान् जन नाना औषधियों से रोग नाशक हवि (यज्ञ) करते हैं, उन वनस्पतिक औषधियों द्वारा इस भयंकर रोग को निकाल डालने पर कष्ट सब प्रकार से दूर हो सकता है।

*२. इन्द्रस्य या मही हषत् क्रिमे र्विश्वस्य तर्हणी।*
*तया पिनष्मि सं क्रिमीन् दृष्टा खल्वँ इव।। अथर्व. २.३१.१*

अर्थात् - बड़े यज्ञ की विशाल शिला रोगों व अनेकों मंत्र विस्तृत रूप में वर्णित है। यज्ञ चिकित्सा का वर्णन अत्यन्त विस्तृत है। इस यज्ञ पद्धति पर अनेक अनुसंधान व प्रयोग हो चुके हैं।

**१३. उपसंहार :-** भारतीय ऋषियों के वैदिक सिद्धान्तों पर प्रतिपादित 'अथर्ववेद में चिकित्सा सिद्धान्तों पर प्रतिपादित 'अथर्ववेद में चिकित्सा सिद्धान्तों का वैज्ञानिक व दार्शनिक चिन्तन' आज मानवीय

(ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर कर्मठ आर्यसेवक ६४ वर्षीय श्री अर्जुन सिंह आर्य का अभिनन्दन करते हुए स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती एवं मंत्री डॉ० श्वेतकेतु शर्मा)

मूल्यों की शारीरिक चिकित्सा का महत्वपूर्ण आवाह्न है। यह सिद्धान्त भले ही भौतिकतावादी समाज की विचारधारा के विपरीत अवश्य लग रहे हों, परन्तु अथर्ववेद का चिकित्सा सिद्धान्त पूर्ण वैज्ञानिक व दार्शनिक आधार पर विद्यमान है, तथा मानव जीवन को पूर्ण स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन को प्राप्त करने का महत्त्वपूर्ण विचार विनिमय है तथा वैज्ञानिक साधन भी हो सकता है।

आज सम्पूर्ण विश्व भारतीय आयुर्वेदीय दर्शन पर आधारित हो रहा है। चाहें वह हृदय रोग, कैंसर, मधुमेह, गुर्दा रोग, चर्म रोग से सम्बन्धित आधुनिक सिद्धान्त Life Style Modification नाम से प्रचलित हो रहा हो, वह भी पूर्ण वैदिक आयुर्वैदिक सिद्धान्त है। इसको विश्व स्तर पर मान्यता प्रदान की जा रही है। इसी प्रकार आज के परिवेश में स्वास्थ्य लाभ एवं असाध्य रोगों को समूल नष्ट करने हेतु अथर्ववेद में वर्णित चिकित्सा प्रसंगों व सिद्धान्तों पर वैज्ञानिक चिन्तंन अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि अभी तक आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने अथर्ववेद में वर्णित चिकित्सा सिद्धान्तों पर अनुसन्धान नहीं कर पाये हैं। वैदिक ऋषियों ने अथर्ववेद के माध्यम से सृष्टि के आदि काल में ही इस चिकित्सा सिद्धान्तों को अवगत करा दिया था।

आइये ! अथर्ववेद के चिकित्सीय वैज्ञानिक व दार्शनिक सिद्धान्तों पर चिन्तन करें तथा इस पर अधिक अनुसंधान करके विश्व को स्वास्थ्य लाभ प्रदान करें। ★

## अनुपम है सत्यार्थ प्रकाश

(गीतकार : इंद्रदेव त्रिवेदी, बरेली)

अनुपम है सत्यार्थ प्रकाश, अनुपम है सत्यार्थ प्रकाश।
इसमें भरा हुआ है मित्रों, अंतर्मन का सत्य प्रकाश।।

स्वामी दयानंद ने लिखकर, सत्य मार्ग दिखलाया है।
चौदह समुल्लास रचकर के, सत्य मार्ग समझाया है।।
है सुदीर्घ इतना ये मानों, जैसे उर्ध्व उच्च आकाश।।
अनुपम है.....

विश्व धरोहर ये पुस्तक, उन्नत करती है मस्तक।
जीवन का चिंतन देने, गृह-गृह में दे ये दस्तक।।
है सत्यार्थ प्रकाश वस्तुतः, उन्नत सा इक शब्दाकाश।।
अनुपम है.....

ओ३म् शब्द परमेश्वर का, जो इसमें उल्लिखित है।
ओ३म् शब्द का उच्चारण से, लगता मन ये प्रमुदित है।।
दयानंद जी की कृति से, ज्योतित है साहित्याकाश।।
अनुपम है.....

(संदर्भ :- आर्य समाज बिहारीपुर के द्वारा आयोजित "वैदिक सिद्धांतों का वैज्ञानिक दार्शनिक चिंतन" व्याख्यान माला ७ रविवार १७ फरवरी २०१३ को "अनुपम है सत्यार्थ प्रकाश" स्वरचित गीत प्रस्तुत किया : संपादक)

# वेदों में वर्णित 'ओ३म्' पर वैज्ञानिक अनुसंधान

## 'ओ३म्' का उच्चारण विभिन्न रोगों में चमत्कारी इलाज

**'ओ३म्' का अर्थ :-** ओ३म् का पहला वर्णन वेदों में मिलता है। ओ३म् को ब्रह्माण्ड के निर्माण का आधार माना जाता है। यह तीन अक्षरों अ, उ् और म् से मिलकर बना है। "अ" यानि आत्मन, "उ" स्वप्न और "म्" यानि सुषुप्ति।

**महत्त्व एवं वैज्ञानिक अनुसन्धान :-** हिन्दू एवं सिख धर्म में ओ३म् का विशेष महत्त्व है। ओ३म् को अक्षय ब्रह्म माना गया है। कहा जाता है कि ओ३म् का जाप करने वाले को ब्रह्म लोक की प्राप्ति होती है। मांडूक्य उपनिषद के पहले छन्द में कहा गया है कि ओ३म् पूरे ब्रह्माण्ड का प्रतीक है। हिन्दू धर्म में ओ३म् का जाप अत्यन्त लाभकारी माना जाता है।

ब्रह्माण्ड के निर्माण का रहस्य, परमब्रह्म प्राप्ति का मार्ग और अब विज्ञान जगत की नई उम्मीद। वैदिक ऋचाओं से निकले ओ३म् में अब मेडिकल साइंस उन बीमारियों का इलाज ढूँढ रहा है जिनसे दवायें हार गई हैं। प्रख्यात विज्ञान पत्रिका 'साइन्स' में हाल ही में प्रकाशित एक शोध में कहा गया है कि ओ३म् एक ऐसा शब्द है जिसका अलग-अलग आवृत्तियों में जाप दिल, दिमाग, पेट और खून से जुड़ी कई बीमारियों के इलाज में चमत्कारी असर दिखा सकता है। यहाँ तक सेरीब्रेल पैल्सी जैसी असाध्य बीमारी में भी ओ३म् का उच्चारण उपचार की सम्भावना बढ़ा सकता है। पत्रिका में रिसर्च एंड एक्सपेरिमेन्टल इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरो साइन्सेज के एक दल ने सात साल तक दिल और दिमाग के रोगियों पर प्रशिक्षण किया है। परीक्षण के दौरान देखा गया है कि ओ३म् का अलग-अलग आवृत्तियों और ध्वनियों में नियमित जाप काफी असरकारी है। ओ३म् का उच्चारण पेट, सोने और मस्तिष्क में एक कंपन पैदा करता है। देखा गया कि यह कंपन शरीर की मृत कोशिकाओं को पुनर्जीवन देता है और नई कोशिकाओं का निर्माण भी करता है। यह जाप मस्तिष्क से लेकर नाक, गला एवं फेफड़े तक के हिस्से में बड़ी तेज तरंगों का वैज्ञानिक रूप से संतुलित संचार करता है। प्रोफेसर मार्गन ने बताया कि परीक्षण के लिए मस्तिष्क और हृदय के विभिन्न रोगों से ग्रस्त २५०० पुरुषों और २००० महिलाओं को चुना गया। इनमें से कुछ लोग बीमारी के अंतिम चरण में पहुँच चुके थे। प्रो० मार्गन की टीम ने इन लोगों को मिलने वाली दवाइयाँ बन्द कर दीं। सिर्फ वही दवायें जारी रखीं जो जीवन बचाने के लिए जरूरी थी। डॉक्टरी निरीक्षण में इन लोगों ने सुबह ६ बजे से ७ बजे तक एक घंटे तक विभिन्न आवृत्तियों में ओ३म् का जाप किया। इसके लिए योग्य प्रशिक्षक रखे गये थे। हर तीन माह पर इन लोगों का शारीरिक परीक्षण करवाया गया। चार साल बाद सामने आए परिणाम चौकाने वाले थे। ७० फीसदी पुरुष और ८५ फीसदी महिलाओं को ६० फीसदी राहत मिली। कुछ लोगों पर इसका असर १० फीसदी ही हुआ। लेकिन प्रो० मार्गन ने इसका कारण मर्ज का आखिरी चरण में पहुँचना बताया।

विज्ञान पत्रिका 'साइंस' में प्रकाशित शोध कहता है कि ओ३म् का उच्चारण बीमारियों के इलाज में कारगर साबित हो सकता है।

रिसर्च एंड एक्सपेरिमेन्टल इन्स्टीट्यूट ऑफ न्यूरो साइन्सेज के शोध दल के प्रमुख प्रो० जे० मार्गन ने कहा कि आश्चर्यजनक हैं नतीजे।

गम्भीर रोगों से ग्रस्त २५०० पुरुषों एवं २००० महिलाओं पर चार साल तक किया परीक्षण।

प्रतिदिन ओ३म् के उच्चारण से अधिसंख्य रोगियों के स्वास्थ्य में काफी सुधार, दवाओं का असर बढ़ा।

"यह शोध हमारी आँखें खोलने वाला है जबकि हम पहले से यह बात कहते हुए आए हैं। योग का एक हिस्सा प्राणायाम है और प्राणायाम का एक हिस्सा ओ३म् का उच्चारण भी है। इन ध्वनियों से फायदा पहुँचता है। –एस० एन० ठाकुर, विशेष योग काउंसलर"

"ओ३म् के उच्चारण से मस्तिष्क तक ध्वनियाँ सामान्य होने लगती हैं। इससे रक्त प्रवाह सामान्य होता है। बीमारियों का नियंत्रण आसान हो जाता है। ओ३म् का असर नकारा नहीं जा सकता। –प्रो० मंजरी त्रिपाठी, विभागाध्यक्ष, न्यूरोलॉजी एम्स"

"ओ३म् के उच्चारण से इंटरनल, ऑटोनामिक नर्व्स पर असर पड़ता है और दोनों गतिविधियाँ कम हो जाती है। इससे लोग शांति महसूस करने लगते हैं। एंग्जाइटी, डिप्रेशन और रक्तचाप कम हो जाता है। –डॉ० अनूप मिश्रा, पूर्व विभागाध्यक्ष (मेडीसन) एम्स"

*(सौजन्य से : अमर उजाला मुरादाबाद, मंगलवार २६ मई २००७ पेज २)*

(रोटरी क्लब रुहेलखण्ड के पूर्व अध्यक्ष संजीव साहनी जी आर्यसमाज की विचारधारा पर विचार प्रकट करते हुए)

# प्राणायाम का वैज्ञानिक दार्शनिक चिन्तन

(डॉ० वेदप्रकाश शर्मा)

(प्रसंग एवं परिचय :- प्रख्यात पैथोलॉजिस्ट एवं वेदों के अध्ययनशील डॉ० वेदप्रकाश शर्मा जी रोहिलखण्ड कॉलेज मेडिकल (रोहिलखण्ड विश्वविद्यालय) बरेली में व्याख्याता भी है। शील हास्पिटल में पैथोलॉजिस्ट हैं। ऋषि दयानन्द के वैदिक विचारों के प्रति समर्पित एवं प्रभावित हैं। वैदिक सिद्धान्तों का वैज्ञानिक चिन्तन व्याख्यान माला के प्रथम व्याख्याता है। ३ मार्च २०१३ को "प्राणायाम का वैज्ञानिक दार्शनिक चिन्तन" विषय पर प्रामाणिक सारगर्भित व्याख्यान का आलेख प्रस्तुत है - सम्पादक)

वेद परमेश्वर का दिव्य ज्ञान है। परमेश्वर ने यह ज्ञान संसार के कल्याणार्थ सृष्टि के आरम्भ में अग्नि (ऋग्वेद), आदित्य (सामवेद), वायु (यजुर्वेद) और अंगिरा (अथर्ववेद) नामक ऋषियों के अन्तःकरण में प्रकट किया और उनसे समस्त मानव जाति ने ग्रहण किया।

विशेष ज्ञान को विज्ञान कहते हैं। वेदों में ३५ प्रकार की विद्यायें विद्यमान है, जो पूर्णतया वैज्ञानिक है और आधुनिक विज्ञान उनकी कसौटी पर सही उतरता है। यह विद्यायें निम्नवत् हैं -

प्राण विद्या - इस विद्या को जानने से पहले प्राणों के विषय में जानना आवश्यक है। मुख्य और गौण प्राण पाँच-पाँच प्रकार के हैं, जो निम्नलिखित प्रकार हैं -

| | *मुख्य प्राण* | *गौण प्राण* | *प्राणों के संयमित न होने से उत्पन्न रोग* |
|---|---|---|---|
| १. | अपान | कूर्म | कब्ज, दस्त, उल्टी (Gastrointestinal Disorders) |
| २. | व्यान | धनंजय | अनिद्रा, मानसिक व्यथायें और पथरी आदि मूत्र रोग |
| ३. | समान | कृंकण | साँस और जोड़ों के विकार (Respiratory & Joint Disorders) |
| ४. | प्राण | नाग | आँख और दिमागी विकार (मूर्छा आदि) (Eye Disorders & Coma) |
| ५. | उदान | देवदत्त | त्वचा और यकृत की बीमारियाँ जैसे - पीलिया, फोड़ा, फुन्सी, सूजन |

प्राणों को संयमित करने की विधि - प्राणायाम और मुद्राओं से प्राणों को संयमित और स्थिर किया जा सकता है।

प्राणायाम की विधि और निरूपण - प्राणायाम मुख्यतः चार चरणों में पूरा होता है और इसको करने के लिए प्रातःकाल, दैनिक कार्य से निवृत होकर, स्वच्छ एकान्त, खुले स्थान पर, सिद्धासन या पद्मासन पर बैठकर, गुदा को ऊपर की ओर संकुचित करके, प्रक्रिया करें :-

१. बाह्य विषय प्राणायाम :- प्राण (श्वास) को बाहर ही यथाशक्ति रोकना।

२. आभ्यान्तर प्राणायाम :- श्वांस को धीरे-धीरे भीतर लेना और जितना रोका जा सके, रोकना।

३. स्तम्भ वृत्ति प्राणायाम :- जहाँ का तहाँ प्राण को यथाशक्ति अन्दर रोक लेना।

४. बाह्यभ्यन्तराक्षेपी प्राणायाम :- जब प्राण (श्वास) भीतर से बाहर निकलने लगे, तब उसके विरुद्ध न निकलने देने के लिए, बाहर से भीतर ले और रोके, जब न रुके, धीरे-धीरे श्वांस श्वांस बाहर निकाले। उपर्युक्त वर्णित, यह एक पूरी प्रक्रिया (Cycle) है। कम से कम १०-१५ बार इस प्रक्रिया को दोहरायें।

लाभ :-

१. प्राण, इन्द्रियाँ और मन वश में आ जाते हैं और उनके विकार नष्ट होने लगते हैं।

२. ध्यान, आत्म और ब्रह्म दर्शन में सहायक।

३. कैन्सर को दूर भगाता है।

शारीरिक रोगों को दूर करने में सहायक अन्य प्राणायाम :-

१. नाड़ी शोधन प्राणायाम - तन्त्रिका तन्त्र के विकार दूर होते हैं।

२. कपालभाँति प्राणायाम - मधुमेह में लाभदायक।

३. बाह्य प्राणायाम - मधुमेह में लाभदायक।

४. अनुलोम विलोम प्राणायाम - हृदय रोगों (Angina Heart Attack) को दूर करता है।

५. भ्रामरी प्राणायाम - रक्तचाप को नियंत्रित करता है।

६. उद्‌गीथ प्राणायाम - प्रत्याहार, धारणा, ध्यान एवं समाधि की तरफ ले जाता है और मानसिक विकारों को दूर करता है।

मुद्रायें :- प्राणों को स्थिर करने के लिए, मुद्राओं का प्रयोग करते हैं - जो पाँच मुख्य मुद्रायें इस प्रकार हैं और इनको कम से कम पन्द्रह मिनट करें -

१. ज्ञान मुद्रा :- अंगूठे को तर्जनी (Index Finger) पर रखकर, सिद्धासन में बैठकर, आज्ञा चक्र पर ध्यान करे।

लाभ - मानसिक (Psychiatric disorders) रोगों को दूर करता है और अध्यात्म की ओर प्रेरित करता है।

२. आकाश मुद्रा :- अंगूठे के Tip को मध्यमा (Middle Finger) से छूकर ध्यान करना।

लाभ - आँखों और हड्डियों के रोगों को दूर करता है।

३. पृथिवी मुद्रा :- अंगूठे के Tip को Ring Finger से छूना और इसी अवस्था में बैठना।

लाभ - शारीरिक क्षमता को बढ़ाता है और कृश शरीर को सामान्य बनाता है।

४. वरुण मुद्रा :- सबसे छोटी अँगुली के सिरे Tip को अंगूठे से स्पर्श करना और ध्यानावस्थित होना।

लाभ - त्वचा (Skin) में कान्ति लाना है और खाल के रोगों को दूर करता है।

५. सूर्य मुद्रा - Ring finger को अँगूठे के Base पर स्पर्श करना और ध्यानावस्थित होना।

लाभ - मधुमेह, यकृत की बीमारियाँ, गुर्दे की बीमारियाँ और मोटापे को दूर करता है।

प्राण विद्या का वैज्ञानिक निरूपण - शरीर की मेटाबोलिक, क्रियाओं में Free Radicals पैदा होते हैं, जो हमारे शरीर में विभिन्न रोगों (मधुमेह, बुढ़ापा, कैन्सर, Hyperlipidaemia आदि) को पैदा करते हैं। प्राणायाम द्वारा हमारी molecular oxygen इन Free Redicals को नष्ट करती है।

कोशिका में फ्री रेडिकल का दुष्प्रभाव -

१. Free radicals causes peroxidation of Membrance Phospholipids (पर-ऑक्सीकरण क्रिया द्वारा, कोशिका भित्ति को नष्ट करना)।
२. Denaturation of cell proteins (कोशिकीय प्रोटीन्स को नष्ट करना)।
३. Damage to DNA कोशिका के गुण सूत्रों को नष्ट करना।
४. Cell Skeleton Damage कोशिका के ढाँचे का विघटन करना।

प्राणायाम द्वारा उपर्युक्त दुःप्रभाव समाप्त हो जाते हैं और शरीर को रोगों से बचाते हैं। अतः प्राणविद्या के द्वारा हम शारीरिक रोगों से बचते हैं और आत्मसात और ब्रह्मज्ञान की ओर अग्रसर होते हैं। मुद्राओं द्वारा शरीर में प्रवाहित होने वाली विद्युत तरंगों को नियंत्रित किया जाता है जिससे आत्मदर्शन, मानसिक विकास और ब्रह्म दर्शन प्राप्त किया जाता है। प्राणायाम द्वारा कई रोग जैसे मधुमेह, कैंसर, बुढ़ापा और दिल के रोगों से बचे रहते हैं। प्राणायाम से बुद्धि, स्मृति और मन की एकाग्रता में आश्चर्यजनक वृद्धि होती है। प्रतिदिन प्राणायाम करने से अविद्या नष्ट होती जाती है और ज्ञान का प्रकाश बढ़ता जाता है। ★

## सूर्यदेव

(गीतकार : इंद्रदेव त्रिवेदी, बरेली)

है सूर्यदेव तेरी, शक्ति का साधक जग।
तुझसे ही पाया सब, तेरा ही याचक जग।।

सृष्टि का नियंता तू, सृष्टि का संचालक।
सृष्टि का केंद्र बिंदु, सृष्टि का संवाहक।।
तेरा ही सारा है, भू पर आराधक जग।।
है सूर्य देव.....

हर मानव जीवन को, जिससे मिलती शक्ति।
ओजस्वी ऊर्जा से, रखते सब अनुरक्ति।
इसलिए सूर्य तेरा, है आज उपासक जग।।
है सूर्य देव....

वेदों में वर्णन है, वेदों ने गाया है।
ओजस्वी आर्य सत्य तू सविता कहलाया है।
जब यज्ञ हुआ करते, अग्नि सा पावक जग।।
है सूर्य देव.....

(प्रसंग :- आर्यसमाज बिहारीपुर के द्वारा आयोजित वैदिक सिद्धांतों का वैज्ञानिक चिंतन व्याख्यान माला रविवार ०३ मार्च २०१३ को "प्राणायाम का वैज्ञानिक दार्शनिक चिंतन" के संदर्भ में "सूर्यदेव" स्वरचित गीत प्रस्तुत किया था - सम्पादक)

# अक्षर, मंत्र, वेद की त्रयी से

(गीतकार : इंद्रदेव त्रिवेदी, बरेली)

हर अक्षर में मंत्र की शक्ति होती है यह जान लें।
इसीलिए हम मानव सारे अक्षर को पहचान लें।।

अक्षर-अक्षर सृष्टि का निर्माण किया करता है।
अक्षर-अक्षर जीवन में बस प्राण भरा करता है।।
मंत्र बना करते हैं अक्षर, सभी आज यह मान लें।।
इसीलिए.....

हर अक्षर ने मानव पर उपकार किया है हरदम।
हर अक्षर ने जीवन का श्रृंगार किया है अनुपम।।
करें आज अक्षर का मंथन, अक्षर का अहसान लें।।
इसीलिए.....

हर अक्षर की शक्ति में पूरा ब्रह्मांड समाया।
ध्वनि-प्रतिध्वनि सुनो आज, अक्षर जगती की काया।।
अक्षर मंत्र बना करते हैं, अक्षर से विज्ञान लें।।
इसीलिए.....

वेदों का हर अक्षर देखो, मंत्र रूप धरता दीखा।
सृष्टि के हर अंश ने इससे जीवन का चिंतन सीखा।।
अक्षर, मंत्र, वेद की त्रयी से, अक्षर का संज्ञान लें।।
इसीलिए.....

(संदर्भ :- आर्यसमाज बिहारीपुर के द्वारा आयोजित वैदिक सिद्धांतों का वैज्ञानिक चिंतन व्याख्यान माला ७ रविवार १० फरवरी २०१३ को "ईश्वर स्तुति प्रार्थना मंत्रों का वैज्ञानिक दार्शनिक चिन्तन" विषय के संदर्भ में स्वरचित गीत प्रस्तुत किया - संपादक)

(आर्यसमाज बिहारीपुर के वैदिक सिद्धांतों का वैज्ञानिक चिंतन व्याख्यान माला में गीतकार इंद्रदेव त्रिवेदी स्वरचित गीत प्रस्तुत करते हुए)

# वेदों को अपनाओ, वेदों को अपनाओ

(गीतकार : इंद्रदेव त्रिवेदी, बरेली)

वेदों को अपनाओ, वेदों को अपनाओ।
अनुरोध यही सबसे, वेदों को अपनाओ।

वो आर्य यहां होते, सबका हित जो करते।
सच्चे मानव हैं वो, बस परहित जो करते।।
इसलिए मैं कहता हूँ, जीवन में मुस्काओ।।
अनुरोध.....

जीवन का हर दर्शन, वेदों में निहित यहाँ।
मानव का हर चिंतन, वेदों में लिखित यहाँ।।
है वेद वचन ये ही, सोते से जग जाओ।।
अनुरोध.....

जब यज्ञ यहाँ होते, सब स्वच्छ यहाँ होता।
व्यक्ति का तन-मन सब, बस स्वस्थ यहाँ होता।।
भारतवासी हो तो, वेदों को पढ़ जाओ।।
अनुरोध.....

(संदर्भ एवं परिचय :- प्रख्यात गीतकार इंद्रदेव त्रिवेदी जी वरिष्ठ साहित्यकार व गीतकार है। आर्यसमाज बिहारीपुर द्वारा आयोजित वैदिक सिद्धांतों का वैज्ञानिक चिंतन व्याख्यान माला ३ रविवार २० जनवरी २०१३ के अवसर पर "वेद मंत्रों का वैज्ञानिक दार्शनिक चिंतन" विषय के प्रसंग में उपरोक्त स्वरचित गीत प्रस्तुत किया था - संपादक)

# ओ३म्

(गीतकार : इंद्रदेव त्रिवेदी, बरेली)

ओ३म् नाम उच्चारण कर, ओ३म् मंत्र उच्चारण कर।
जीवन का पथ पा लेगा, ओ३म् ओ३म् उच्चारण कर।।

ध्वनित हो रही सभी जगह, ओ३म् नाम की व्यापकता।
उच्चारित कर सका वही, जिसके मन में है शुचिता।।
तन मन शुद्ध बनेगा तब, ओ३म् रूप उच्चारण कर।।
जीवन का.....

त्रय अक्षर इसमें शामिल, ओ३म् नाम जब भी बोला।
सभी मार्ग अंतर्मन के, ओ३म् नाम ने ही खोला।।
जीवन मर्म अगर पाना, ओ३म् शब्द उच्चारण कर।।
जीवन का.....

सत् चित् का आनंद सभी, निहित ओ३म् में मिलता है।
हद्कलिका का हर अनुभव, ओ३म् नाम में खिलता है।।
लक्ष्य सभी मिल जायेंगे, ओ३म् तत्व उच्चारण कर।।
जीवन का.....

(संदर्भ :- आर्यसमाज बिहारीपुर द्वारा आयोजित वैदिक सिद्धान्तों का वैज्ञानिक चिंतन व्याख्यान माला ८ रविवार २४ फरवरी १३ को 'ओ३म्' स्वरचित गीत प्रस्तुत किया था-संपादक)

## ऐसा है सत्यार्थ प्रकाश

(गीतकार : इंद्रदेव त्रिवेदी, बरेली)

चौदह समुल्लास जिसमें हैं, ऐसा है सत्यार्थ प्रकाश।
सत्य छिपा जीवन का अनुपम, ऐसा है सत्यार्थ प्रकाश।।

पहले समुल्लास में हमको, परमेश्वर के नाम मिले।
ओ३म् नाम परमेश्वर का है, विविध रूप हर ओर मिले।।
वो महान् शक्ति है इसमें, ऐसा है सत्यार्थ प्रकाश।।
सत्य छिपा.....

सबकी शिक्षा बहुत जरूरी, द्वितीय समुल्लास कहता।
अध्ययन अध्यापन की महिमा, तृतीय समुल्लास कहता।।
ब्रह्मचर्य की विधि वर्णित है, ऐसा है सत्यार्थ प्रकाश।।
सत्य छिपा.....

चौथा समुल्लास ये कहता, गृहस्थ धर्म होता है क्या।
पंचम समुल्लास बतलाता, वानप्रस्थ सन्यास है क्या।।
राजधर्म छठवें में मिलता, ऐसा है सत्यार्थ प्रकाश।।
सत्य छिपा.....

सप्तम् समुल्लास में पाया, ईश्वर और जीव महिमा।
अष्टम् समुल्लास से मानव, ईश्वर सृष्टि की गरिमा।।
विद्या मोक्ष नवम् बतलाता, ऐसा है सत्यार्थ प्रकाश।।
सत्य छिपा.....

दशमें समुल्लास में पाया, क्या होते आचार-विचार।
भक्ष्याभक्ष्य विषय पर हमने, पाये ऋषि के उच्च विचार।।
प्रेरक कृति दयानंद जी की, ऐसा है सत्यार्थ प्रकाश।।
सत्य छिपा.....

मंत्र सिद्धि, अद्वैतवाद और मूर्ति समीक्षा है जिसमें।
गंगा तीर्थ गुरु की महिमा या आर्य समाज स्वयं जिसमें।।
ये एकादश समुल्लास है, ऐसा है सत्यार्थ प्रकाश।।
सत्य छिपा.....

आस्तिक नास्तिक चारवाक का वर्णन इसमें मिलता है।
जैन धर्म और बौद्ध धर्म का चित्रण इसमें मिलता है।।
द्वादश समुल्लास ये कहता, ऐसा है सत्यार्थ प्रकाश।।
सत्य छिपा.....

ईसाइयों के धर्म विषय पर समुल्लास तेरह लिक्खा।
ईश्वर की उत्पत्ति विषयक, विविध समीक्षा को लिक्खा।।
समुल्लास चौदह यवनों पर, ऐसा है सत्यार्थ प्रकाश।।
सत्य छिपा.....

# श्रद्धांजलि

## स्वामी इन्द्रदेव यति जी के प्रति शोक-संवेदना

### वैदिक विचारों से ओत-प्रोत समर्पित व्यक्तित्व थे स्वामी इन्द्रदेव जी

आर्य जगत के ही नहीं अपितु देश के जाने-माने वेद वेदांगो, उपनिषदों, आयुर्वेद के प्रकाण्ड मूर्धन्य विद्वान, वैदिक वाङ्गमय के सिद्धहस्त, आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रति समर्पित स्वामी इन्द्रदेव यति जी के आकस्मिक निधन पर आर्यसमाज, बिहारीपुर, बरेली की 'शोक सभा' में प्रधान डॉ० ओ० पी० अग्रवाल की अध्यक्षता में हार्दिक शोक संवेदना अर्पित करते हैं।

(शास्त्रार्थ महासम्मेलन बरेली के अवसर पर स्वामी इन्द्रदेव यति बोलते हुए एवं साथ में कैलाश नारायण मेहरा एवं जगदीश शरण आर्य)

स्वामी जी का जीवन त्याग-तपस्या से ओत-प्रोत व वैदिक सिद्धान्तों के प्रति पूर्ण निष्ठा से समर्पित था। वे शास्त्रार्थ के योद्धा थे। आर्य सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार के लिए उन्होंने अपना जीवन समर्पित किया था। बड़े से बड़े विद्वानों की शंका समाधान चुटकियों में कर देते थे तथा अनार्य कार्य को कभी भी स्वीकार नहीं करते थे। आर्य समाज बिहारीपुर, बरेली से उनका आत्मिक सम्बन्ध था। जब कभी भी आर्य समाज को उनकी आवश्यकता होती थी, तो सहृदयपूर्वक अपनी गरिमामयी उपस्थिति से गौरवान्वित करते थे। स्वामी जी वृष्टि यज्ञ विज्ञान के ज्ञाता ही नहीं अपितु प्रमाण थे। उन्होंने अनेक स्थानों पर वृष्टि यज्ञ के द्वारा वर्षा को प्रमाणित किया था। जब पिछले २००३ में बरेली के आस-पास स्थानों पर धरती वर्षा के लिए त्राहि-त्राहि कर रही थी, उस समय आर्य समाज बिहारीपुर बरेली ने विशाल वृष्टि यज्ञ का

आयोजन स्वामी जी के निर्देशन में आर्य समाज अनाथालय प्रांगण में विशाल यज्ञ कुण्ड के माध्यम से प्रारम्भ किया था। वृष्टि यज्ञ की पूर्ण आहुति के साथ ही घनघोर वर्षा हुई थी, जो सात दिन तक लगातार वर्षा होती रही। स्वामी जी के इस विशेष ज्ञान के प्रमाण आज भी उपलब्ध हैं।

ऋषि दयानन्द के बरेली शास्त्रार्थ के १२५वें वर्ष के अवसर पर आर्यसमाज बिहारीपुर के द्वारा २००५ में शास्त्रार्थ महासम्मेलन का आयोजन अत्यन्त भव्यता व गरिमा के द्वारा किया गया था। इस अवसर पर भी स्वामी जी ने मंच को गौरवान्वित किया था। इसी अवसर पर उनके समर्पित जीवन के लिए सम्मानित भी किया गया था।

स्वामी जी एक साहसी, कर्मठ, वैदिक सिद्धान्तों पर अटूट निष्ठावान व्यक्तित्व के धनी थे। वेदों पर उनका जीवन आधारित था, इसीलिए स्वस्थ दीर्घ आयु उनके जीवन को प्रमाणित करती है। स्वामी जी को आयुर्वेद पर अत्यन्त विश्वास था। वे आयुर्वेद चिकित्सा को ही अपनाते थे तथा समाज को भी चिकित्सा के लिए समर्पित रहते थे। उन्होंने जीवन भर आयुर्वेद को ही अपने जीवन में अपनाया था। उनका निधन आर्यसमाज के लिए अपूर्णनीय क्षति है।

ऐसे महानतम व्यक्तित्व के लिए आर्य समाज बिहारीपुर, बरेली के सभी सदस्यगण हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उनके बताये मार्ग का अनुसरण कर हम सभी अपने जीवन को सफल बनायें। ★

## स्वामी इन्द्रदेव यति जी का स्वलिखित संक्षिप्त जीवन परिचय

नाम - इन्द्रदेव (छेदा सिंह उर्फ इन्द्र सिंह स्वतंत्रता सेनानी)

जन्म - ७ सितम्बर १९१९ ई०

स्थान - ग्राम जतीपुर थाना जहानाबाद, तहसील व जिला पीलीभीत (उ० प्र०)

पिता - श्री जय सुख राम आर्य

माता - श्रीमती बिलासा देवी आर्या। जब आप पांच वर्ष के थे, तब माता का देहान्त हो गया। पिता ने पालन-पोषण किया।

शिक्षा - हिन्दी और उर्दू मिडिल तक जिला पीलीभीत में और संस्कृत, ब्राह्म महाविद्यालय, कृष्ण नगर लाहौर से उत्तीर्ण की। उसी समय वहाँ रह कर गुरुमुखी लिपि को भी सीखा।

आन्दोलन- १. आर्य सत्याग्रह हैदराबाद में २२ अप्रैल १९३८ को गिरफ्तार हुए। गुलबर्गा जेल में रहे। विजय प्राप्त होने पर वहां से १५ अगस्त १९३९ को रिहा, घर वापिस आया। २. अंग्रेजों भारत छोड़ो आन्दोलन में २९ अगस्त १९४२ को गिरफ्तार। पीलीभीत जेल में बन्द। ११ नवम्बर १९४२ दीपावली के अवसर पर जेल से पलायन। उसी समय सारे उत्तर प्रदेश में जेल की दीवारें ऊँची करायी गयी जो आज भी साफ दिखाई देती है।

जेल से निकलकर नानकमता लालकुआं, अमृतसर, होशियारपुर, लाहौर वहां

से बम्बई मद्रास होकर केरल पहुँचे। स्वतंत्रता प्राप्ति तक वहीं रहे वहां रहकर अनेक आर्य समाजों की स्थापना की तथा मलयालम भाषा को सीखा।

वारण्ट समाप्त होने पर १५ अगस्त १९४७ को घर वापिस आये।

गृहस्थाश्रम- स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् आपने १९४८ में श्रीमती मोहनी देवी आर्या से विवाह किया पुत्र पुत्रियों नाती पोतों से भरा पूरा परिवार है। इसी वर्ष पिता का देहान्त हो गया।

सरपंच - उसी वर्ष अपनी न्याय पंचायत के सरपंच चुने गये। पांच वर्ष सरपंच रहे।

चेयरमैन - १९५९ में पीलीभीत गन्ना सहकारी समिति का चेयरमैन चुने गये। तीन बार बराबर १९७२ तक समिति के चेयरमैन रहे।

आर्यसभा - १९६४ फरवरी १९ को महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस पर अ० भा० आर्य सभा की स्थापना की जो सरकार से पंजीकृत है। जिसके तीनों अंग धर्म आर्य सभा, विद्या आर्य सभा, राज आर्य सभा कार्यरत हैं राजार्यसभा भारत निर्वाचन आयोग से संबद्ध है जो समय-समय पर निर्वाचनों में भाग लेती है। इस समय देश में गणतंत्र है जिसके कारण समस्याओं पर समस्यायें खड़ी हो गई हैं और होती जा रही हैं। इनका कारण प्रजातंत्र का अभाव है। राजार्य सभा प्रजातंत्र की स्थापना हेतु प्रयासरत है।

परीक्षायें - गत इन्हीं वर्षों में आपने आयुर्वेद रत्न, ज्योतिष रत्न और साहित्य रत्न की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं।

गुरुकुल - १९६७ में पीलीभीत जिले में गुरुकुल मनुकामना, जहानाबाद जो वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है और १९७२ में शाही ग्राम में गुरुकुल की स्थापना की है।

वानप्रस्थ - १९६९ में आपने वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश किया।

संन्यास - १९९४ से संन्यास आश्रम में रहे। आपने नाम का परिवर्तन नहीं किया है और न आनन्द, सरस्वती आदि का भी प्रयोग किया है क्योंकि महर्षि दयानन्द का कहीं पर भी आदेश नहीं है। ये परम्परायें शंकराचार्य के मतावलम्बियों की हैं।

दो देहान्त - पत्नी और बड़े पुत्र का देहावसान हो गया है।

आर्यराष्ट्र - १९६५ से आर्यराष्ट्र का प्रकाशन आरम्भ हुआ जो आज तक निरन्तर प्रकाशित हो रहा है।

पञ्चांग - २९ वर्ष से सायन पञ्चांग को प्रकाशित कराया, जो सूर्य सिद्धान्त पर आधारित है।

साहित्य - बड़े प्रयत्न से श्रुति पद समुच्चय लिखा छपने हेतु प्रेस में दिया। प्रेस की अव्यवस्था से छप नहीं सका, जिसमें चारों वेदों के पदों का समुच्चय है। योगदर्शन, सांख्य, वैशेषिक, न्याय वेदान्त दर्शन आदि सौ से अधिक छोटी-मोटी पुस्तकें लिखकर प्रकाशित की है। जिनकी सूची सायन् पञ्चांग में प्रकाशित है। पञ्चांग आप को भेज रहा हूँ।

मृत्यु - १४ फरवरी २०१३

*(सौजन्य से - आर्य राष्ट्र)*

# श्रद्धांजलि : स्वतंत्रता सेनानी श्री शान्तिशरण विद्यार्थी जी

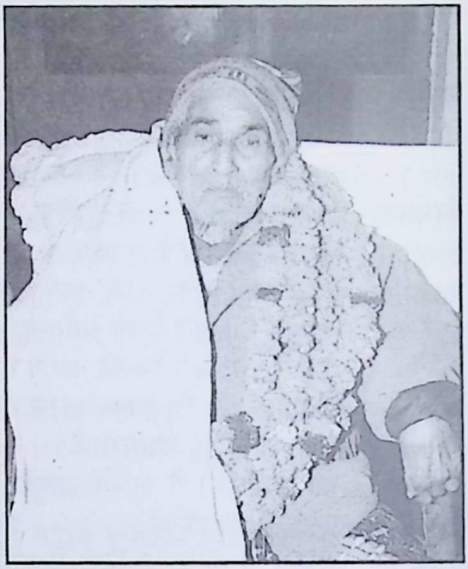

आर्यविचारों से ओत-प्रोत,

'भारत के गौरवमयी स्वतंत्रता आन्दोलन में अग्रणी भूमिका निभाने वाले, भारतीय राष्ट्रीय मूल्यों के लिए समर्पित एवं भारतीय संस्कृति, सभ्यता व संस्कारों को जीवन में अवतरित करने वाले, इस शताब्दी के महानतम व्यक्तित्व के धनी परम आदरणीय स्वतंत्रता सेनानी श्री शान्ति शरण विद्यार्थी जी के आकस्मिक निधन पर हम बिहारीपुर आर्यसमाज के सभी सदस्यगण शोक संवेदना व्यक्त करते हैं। आपका निधन ४ मई २०१३ को अपने निज निवास पर हुआ था। आर्यसमाज बिहारीपुर बरेली में ५ मई २०१३ को शोक सभा आयोजित की गई। विद्यार्थी जी का जीवन त्याग-तपस्या से युक्त भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के लिये समर्पित रहा। देश की गुलामी को काली घटाओं से निकालकर स्वतंत्रता प्राप्त होने तक संघर्षों से जूझते हुए आजादी के गौरव को प्राप्त कराने में अपूर्व योगदान प्रदान किया था।

आर्यसमाज बिहारीपुर, बरेली के लिए १९ दिसम्बर २०१३ पं० रामप्रसाद बिस्मिल शहीद समारोह के प्रसंग में स्वतंत्रता आन्दोलन के कर्णधार श्री शान्तिशरण विद्यार्थी स्वतंत्रता सेनानी को धर्मकांटा स्थित उनके निवास पर आर्यसमाज बिहारीपुर के प्रधान डॉ० ओ० पी० अग्रवाल, उपप्रधान डॉ० आलोक कुमार सेठ, मंत्री डॉ० श्वेतकेतु शर्मा, पुस्तकालयाध्यक्ष वेदभानु आर्य ने उन्हें दुशाला उड़ाकर भव्य पुष्पमालाओं से भाव-विभोर होते हुए उनका अभिनन्दन किया था।

इस अवसर पर स्वतंत्रता सेनानी विद्यार्थी जी ने भावपूर्ण शब्दों में कहा था, "इस देश की स्वतंत्रता में ना जाने कितने शहीद हुए, अनेक यातनाओं, कष्टों तथा घर परिवार बर्बाद करने के बाद हमें आजादी मिली है। इस आजादी पर भ्रष्टाचार व बेईमानी की आँच मत आने दो। इस देश के कर्णधारों से अपेक्षा है ईमानदारी से काम करें।"

इन शब्दों के साथ विद्यार्थी जी अस्वस्थ होते हुए भी उनका जोश आज भी वैसा ही दिख रहा था। उठ-उठकर अपनी यातनाओं के बारे में बता रहे थे कि १९४० में जब चन्द्रशेखर आजाद बरेली आए थे तो मैं उनका पंखा किया करता था। मेरे सिर पर हाथ रखते हुए आर्शीर्वाद देते थे और आन्दोलन को चलाने के लिए कान में मंत्र भी फूंकते थे।

विद्यार्थी जी बड़े उत्साह से दोनों हाथ ऊपर उठाते हुए भावपूर्ण शब्दों में बोले -

*फूंक दो बरबाद कर दो, आशियां अंग्रेज की*
*नौजवान-ए-वतन फिर से, गदर पैदा करो।*
*तुममे से हरेक बन जाओ, भगत सिंह।*

इन लाइनों को पढ़ते ही विद्यार्थी जी जोश में आ गये और कहते हैं स्वतंत्रता आन्दोलन को हम सबने जान की बाजी लगा देने का संकल्प लिया। क्या उत्साह था। क्या गर्मी थी। कैसी लगन थी जो आज भी कई दशकों के बाद भी वही जोश दीख रहा था।

इसी के साथ विद्यार्थी जी कहते हैं कि क्रान्तिकारियों के साथ स्वयं आगे बढ़कर गुलामी की जंजीरों को तोड़ने निकल पड़े। भारत माता की जय, वन्देमातरम् का उद्घोष करते हुए जब हमारा जुनून चला तो अंग्रेज हुकूमत के सिपाहियों ने उन्हें कुँवर दयाशंकर इण्टर कॉलेज पर गिरफ्तार कर लिया। लेकिन जेल में रहकर भी वन्देमातरम् की गूंज ही गूंजती थी। जेलर यातनायें देता था, मिलने नहीं देता था, लेकिन जुनून था देश को आजाद कराने का। वे सब यातनायें भी स्वतंत्र भारत को देखने की खुशी से फूलों की तरह लगती थीं।

अन्त में विद्यार्थी जी बैठे-बैठे नीचे सिर कर आजाद भारत की तस्वीर से बड़े परेशान थे और बोले भ्रष्टाचार रहित ईमानदार भारत देखना चाहते थे, खुशहाली और मानवीयता का प्राचीन भारत देखना चाहते हुए नौजवानों के चेहरे को क्रान्तिवान संस्कारवान देखना चाहते थे। देश का नौजवान कर्तव्यनिष्ठा हो, कर्मठ हो, देश पर कुर्बान होने वाला हो, यही उनके दिलो जवान पर आज भी दीख रहा था।

ऐसे महानतम स्वतंत्रता सेनानी आदरणीय विद्यार्थी जी को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए उनके बताये मार्ग का अनुसरण करें।

★

(आर्यसमाज बिहारीपुर द्वारा उनके निज निवास पर अभिनन्दन करते हुए आर्यसमाज के पदाधिकारी तथा उनके पारिवारिक स्वजन)

# सम्पादक के नाम पत्र

आर्यसमाज बिहारीपुर बरेली की त्रिमासिक प्रगति पत्रिका "ऋषि दर्पण" का प्रथम अंक आरम्भ से अन्त तक पढ़ा है। आपने पत्रिका के सम्पादन में सबको जोड़ने का जो कठिन परिश्रम किया। उसके लिए हमारी शुभकामनायें स्वीकार करें। आज देश की प्रमुख समस्या आतंकवाद एवं हिंसा तथा गैंगरेप की हृदय विदारक तथा काँपने वाली घटना ने भारतीय समाज व संस्कृति को कलंकित कर दिया है। मेरी समझ में इस समस्या का एक ही समाधान है कि गाँव गाँव की सज्जन शक्ति संगठित होकर आगे आने वाले लोकसभा के चुनाव में ग्राम सभाओं को ग्राम स्वराज्य अभिमुख बनायें अर्थात् गाँव गाँव में एक नारा गूँजे कि गाँव की धरती गाँव का राज्य गाँव गाँव में ग्राम स्वराज्य। यह अधिकार स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी ग्राम सभाओं को देना चाहते थे। अब भी समय है। गाँव की सज्जन शक्ति चले और ग्राम सभाओं को गाँव की धरती गाँव का राज्य गाँव गाँव में ग्राम स्वराज्य की माँग लोकसभा चुनाव से पूर्ण करें। जब ग्राम सभाओं को कानून बनाने का अधिकार मिल जाये तब यह ग्राम सभायें कलयुग के आधार जुआ-माँस-शराब-वैश्यावृत्ति तथा असीमित मुद्रा रखने पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगायें। ग्राम सभायें ही ऐसे आतंकवादी कार्यकर्ताओं को दण्ड की व्यवस्था करें तभी महर्षि स्वामी दयानन्द का स्वप्न साकार होगा।

–ओमप्रकाश

*संरक्षक-जिला सर्वोदय मण्डल, बरेली*

# आर्यसमाज बिहारीपुर की गतिविधियाँ

**१. वैदिक सिद्धान्तों का वैज्ञानिक चिन्तन व्याख्यान माला का प्रारम्भ :-**

आर्यसमाज बिहारीपुर बरेली ने अपने साप्ताहिक सत्संग को रोचक, आकर्षक एवं सिद्धान्तों के वैज्ञानिक पक्ष को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए ६ जनवरी २०१३ से वैदिक सिद्धान्तों का वैज्ञानिक चिन्तन व्याख्यान माला प्रारम्भ की है। इस व्याख्यान माला में ख्याति प्राप्त, अध्ययनशील व चिन्तक, आर्यजगत के मूर्धन्य विद्वानों/विदुषियों, चिकित्सक, वैज्ञानिकों का सारगर्भित, प्रमाणित व्याख्यान विभिन्न विषयों पर हुए तथा वैदिक सिद्धान्तों पर स्वरचित काव्य भी प्रस्तुत किये गये। विभिन्न वैदिक विषयों पर वैज्ञानिक दार्शनिक व्याख्यानों की रोचकता एवं नवीनता से युवाओं के साथ-साथ सभी वर्गों के धर्मापेक्षी बन्धु व मातृशक्ति अत्यधिक प्रभावित हुई तथा साप्ताहिक सत्संग में उनकी उपस्थिति पर भी आशातीत सफलता प्राप्त हुई। आर्यसमाज के मूल उद्देश्यों का भी प्रस्तुतिकरण हुआ। इस व्याख्यान माला में निम्नलिखित विद्वानों ने विषयों पर प्रकाश डाला गया -

(डॉ० वी० पी० शर्मा व्याख्यान देते हुए)

क) **"वेदों में विज्ञान"** विषय पर प्रख्यात पैथोलॉजिस्ट व आर्यविद्वान डॉ० वी० पी० शर्मा ने ६ जनवरी २०१३ को

प्रमाणिक व आधुनिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में प्रकाश डाला। इस अवसर पर प्रख्यात अर्थशास्त्री डॉ० एन० एल० शर्मा ने मुख्य आतिथ्य ग्रहण किया एवं बरेली कॉलेज संस्कृत विभाग की प्रवक्ता डॉ० प्रतिभा वार्ष्णेय, वरिष्ठ फिजीशियन डॉ० महेश गुप्ता, वेदविद्वान डॉ० वी० के० शर्मा, आचार्य अवनीन्द्र शास्त्री विशेष रूप से उपस्थित रहे। प्रख्यात गीतकार इन्द्रदेव त्रिवेदी जी ने काव्यपाठ कर मन्त्र मुग्ध कर दिया। अध्यक्षता प्रधान डॉ० ओ० पी० अग्रवाल ने की तथा संयोजन संचालन मंत्री डॉ० श्वेतकेतु शर्मा ने किया। समाचार पत्र अमर उजाला व दैनिक जागरण ने भव्यता से प्रकाशित भी किया।

(डॉ० एन० एल० शर्मा बोलते हुए)

ख) **ईश्वर की सर्वव्यापकता का दार्शनिक चिन्तन :-** आर्यजगत के प्रख्यात विद्वान आचार्य अवनीन्द्र शास्त्री जी ने वैदिक सिद्धान्तों का व्याख्यान माला (२) के अन्तर्गत "ईश्वर की सर्वव्यापकता का वैज्ञानिक दार्शनिक चिन्तन" विषय पर रविवार, १३ जनवरी २०१३ का सारगर्भित प्रमाणिक व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधान डॉ० ओ० पी०

(आचार्य अवनीन्द्र शास्त्री बोलते हुए)

(आर्यसमाज बिहारीपुर में उपस्थित श्रोतागण)

अग्रवाल तथा व्याख्यान का सार वेद विद्वान डॉ० वी० के० शर्मा ने प्रस्तुत किया। गीतकार इन्द्रदेव त्रिवेदी जी ने स्वरचित काव्य प्रस्तुत कर मन्त्रमुग्ध कर दिया। संचालन संयोजन मंत्री डॉ० श्वेतकेतु शर्मा ने किया।

ग) **वेद मंत्रों का वैज्ञानिक चिन्तन व चिकित्सकीय महत्त्व :-** प्रख्यात हृदय रोग विशेषज्ञ व प्रधान डॉ० ओ० पी० अग्रवाल ने वैदिक सिद्धान्तों का व्याख्यान माला (३) के अन्तर्गत "वेद मंत्रों का वैज्ञानिक चिन्तन व चिकित्सकीय महत्त्व" विषय पर २० जनवरी २०१३ का प्रस्तुत किया। इस

(डॉ० ओ० पी० अग्रवाल व्याख्यान देते हुए)

अवसर पर मुख्य अतिथि कर्नल सुरेन्द्र आर्य जी थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रख्यात आर्य विद्वान स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती वेदभिक्षु जी थे। गीतकार इन्द्रदेव त्रिवेदी जी ने गीत सुनाकर मन्त्रमुग्ध कर दिया। संचालन संयोजन मंत्री डॉ० श्वेतकेतु शर्मा ने किया।

(डॉ० ओ० पी० अग्रवाल बोलते हुए)

घ) **यज्ञ का वैज्ञानिक दार्शनिक स्वरूप :-** आर्य जगत के प्रकाण्ड विद्वान आचार्य रामदेव शास्त्री ने वैदिक सिद्धान्तों का वैज्ञानिक चिन्तन व्याख्यान माला (४) के अन्तर्गत "यज्ञ का वैज्ञानिक दार्शनिक स्वरूप" विषय पर २७ जनवरी २०१३ को प्रमाणिक सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया। अध्यक्षता प्रधान डॉ० ओ० पी० अग्रवाल ने की तथा गीतकार इन्द्रदेव त्रिवेदी जी ने स्वरचित "यज्ञ करो यज्ञ करो" गीत प्रस्तुत पर भावविभोर पर दिया। संचालन संयोजन मंत्री डॉ० श्वेतकेतु शर्मा ने किया।

(दैनिक जागरण के छायाकार उमेश जी का स्वागत करते हुए)

(आचार्य रामदेव शास्त्री विषय का प्रतिपादन करते हुए)

(गीतकार इंद्रदेव त्रिवेदी गीत सुनाते हुए)

ङ) **वेदों मे चिकित्सा विज्ञान का दार्शनिक वैज्ञानिक चिन्तन :-** वैदिक सिद्धान्तों का वैज्ञानिक चिन्तन व्याख्यान माला (५) के अन्तर्गत ३ फरवरी २०१३ को प्रख्यात आयुर्वेदाचार्य एवं प्रवक्ता राजकीय आयुर्वेदिक कॉलेज, बरेली डॉ० डी० के० द्विवेदी ने "वेदों में चिकित्सा

(आर्यसमाज बिहारीपुर में उपस्थित श्रोतागण)

(इंद्रदेव त्रिवेदी गीत सुनाते हुए)

विज्ञान का दार्शनिक वैज्ञानिक चिन्तन" विषय पर वेदो के प्रमाणों के आधार पर विषय का प्रतिपादन किया। मुख्य अतिथि स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी ने भी इस अवसर पर पाँच दोषों को दूर कर जीवन को स्वस्थ रखने का संदेश दिया। अध्यक्षता प्रधान डॉ० ओ० पी० अग्रवाल ने की थी। संचालन संयोजन मंत्री डॉ० श्वेतकेतु शर्मा ने किया।

च) **ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना मंत्रों का वैज्ञानिक दार्शनिक चितन :-** वैदिक सिद्धान्तों का वैज्ञानिक चिन्तन व्याख्यान माला छः, सात व आठ और नौ के अन्तर्गत १० फरवरी, १७ फरवरी, २७ फरवरी, ३ मार्च को डॉ० वी० के० शर्मा, प्रख्यात वेद व आयुर्वेद विद्वान के द्वारा ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना मंत्रों का वैज्ञानिक दार्शनिक चिन्तन विषय पर सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। २७ फरवरी को बरेली कॉलेज की संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ० प्रमोद बाला मिश्रा जी मुख्य अतिथि थी तथा प्रो० मिश्रा ने भी वेदों के महत्व विषय पर अपने विचार रखें। इस अवसर पर प्रख्यात गीतकार इंद्रदेव त्रिवेदी जी ने "अनुपम है सत्यार्थ प्रकाश" "ओ३म्" 'सूर्य' स्वरचित शीर्षक का काव्य प्रस्तुत कर मन्त्रमुग्ध कर दिया।

(डॉ० बी० के० शर्मा बोलते हुए)

छ) **स्वस्थ कैसे रहे ? वैज्ञानिक आयुर्वेदीय चिन्तन :-** वैदिक सिद्धान्तों का वैज्ञानिक चिन्तन व्याख्यान माला (१०) के अन्तर्गत प्रख्यात आयुर्वेदाचार्य डॉ० डी० के० द्विवेदी जी ने "स्वस्थ कैसे रहे? वैज्ञानिक आयुर्वेदीय चिन्तन" विषय पर २४ मार्च २०१३ को अत्यन्त प्रमाणिक वैज्ञानिक व्याख्यान प्रस्तुत किया। अध्यक्षता प्रधान डॉ० ओ० पी० अग्रवाल ने की थी तथा संयोजन संचालन मंत्री डॉ० श्वेतकेतु शर्मा ने किया।

(संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ० प्रमोद बाला मिश्रा का स्वागत करते हुए)

ज) **आत्मा का वैज्ञानिक दार्शनिक चिन्तन :-** वैदिक सिद्धान्तों का वैज्ञानिक चिन्तन व्याख्यान माला (११) के अन्तर्गत प्रख्यात दार्शनिक चिन्तक, सुश्री रीता माथुर ने ३१ मार्च २०१३ को दार्शनिक-वैज्ञानिक व्याख्यान प्रस्तुत किया। अध्यक्षता प्रधान डॉ० ओ० पी० अग्रवाल ने की थी तथा मुख्य अतिथि वरिष्ठ पैथोलॉजिस्ट एवं पूर्व प्रधान डॉ० वेदप्रकाश शर्मा जी थे। कार्यक्रम का संचालन मंत्री डॉ० श्वेतकेतु शर्मा ने किया।

## २. शारदीया संस्कृत संगोष्ठी :-

आर्य समाज विहारीपुर के तत्वावधान व शारदीया संस्कृत परिषद् के सहयोग से आर्य समाज सभागार में भव्यता से ३ फरवरी २०१३ को अपराह्न ४ से ७ बजे तक शारदीया संस्कृत संगोष्ठी का आयोजन किया गया, इस अवसर पर हिन्दी एवं संस्कृत के मूर्धन्य विद्वानों व ख्याति प्राप्त कवियों ने भाग लिया। प्रधान डॉ० ओ० पी० अग्रवाल के मुख्य आतिथ्य तथा प्रकाण्ड वेदों के

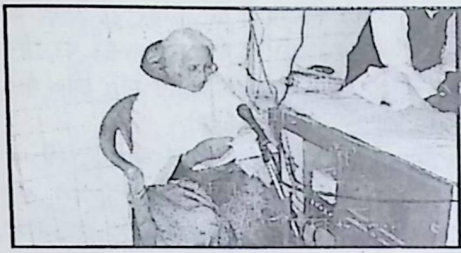

(श्रीमती लीलावती शास्त्री काव्यपाठ करती हुई)

(श्रीमती कृष्णा बजाज काव्यपाठ करती हुई)

(संस्कृत विद्वान महेश चन्द्र शर्मा काव्यपाठ करते हुए)

(डॉ० मुरारीलाल सारस्वत काव्यपाठ करते हुए)

विद्वान स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती वेद भिक्षु जी की अध्यक्षता में आचार्य रामदेव शास्त्री, डॉ० मुरारी लाल सारस्वत, श्रीमती कृष्ण बजाज के विशिष्ट आतिथ्य में सर्वश्री मेघाव्रत शस्त्री, श्रीमती प्रीति मेहरा, श्रीमती लीलावती शास्त्री, संजय वीरेश, डॉ० आलोक कुमार सेठ, रीता माथुर, सुभाष साहनी, सत्यप्रकाश आदि ने हिन्दी-संस्कृत काव्यपाठ से मन्त्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम का संयोजन पूर्व प्रधानाचार्य गुलाबराय इण्टर कॉलेज आचार्य महेश चन्द्र शर्मा ने किया। आयोजन का संचालन व्यवस्था मंत्री डॉ० श्वेतकेतु शर्मा ने की थी।

**३. निःशुल्क डायबिटीज परीक्षण-परामर्श शिविर एवं संगोष्ठी :-**

आर्यसमाज बिहारीपुर के तत्वावधान में विश्व स्वास्थ्य दिवस ७ अप्रैल २०१३ को प्रातः ८ बजे से १ बजे तक डायबिटीज परीक्षण परामर्श शिविर एवं संगोष्ठी का आयोजन आर्यसमाज परिसर में भव्यता से किया गया। इस अवसर पर डायबिटीज पर संगोष्ठी का आयोजन किया जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात हृदय रोग विशेषज्ञ एवं प्रधान डॉ० ओ० पी० अग्रवाल ने की थी। मुख्य वक्ता प्रख्यात फिजीशियन एवं डायबिटीज विशेषज्ञ डॉ० महेश गुप्ता (प्रधान चिकित्सक शील हास्पिटल, बरेली) थे। डॉ० महेश गुप्ता ने इस अवसर पर मधुमेह रोग का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया। डॉ० वी० पी० शर्मा (वरिष्ठ पैथोलॉजिस्ट, शील हास्पिटल, बरेली), डॉ० वी० के० शर्मा (आयुर्वेद विशेषज्ञ), डॉ० दिनेश सक्सेना (होमियो विशेषज्ञ), डॉ० सोमपाल शर्मा, आयुर्वेद विशेषज्ञ एवं डाबर इण्डिया लि० के प्रतिनिधि, डॉ० मोहिनी राठी (होमियो विशेषज्ञ), डॉ० सुधांशु आर्य (वरिष्ठ होमियो चिकित्सक) ने भी अपने विचार रखे तथा १३५ रोगियों का परीक्षण व परामर्श प्रदान किया। इस अवसर पर डॉ० आलोक कुमार सेठ, शचीन्द्र सक्सेना, वेदभानु आर्य, गौरव अग्रवाल, कोषाध्यक्ष संदीप अग्रवाल आदि ने अपूर्व सहयोग प्रदान किया। डाबर इण्डिया लि० की बरेली शाखा के प्रमुख डॉ० सोमदेव शर्मा के सौजन्य से

(परामर्श देते हुए डॉ० दिनेश सक्सेना एवं डॉ० मोहिनी राठी)

# डायबिटीज कैम्प एक दृष्टि में.....

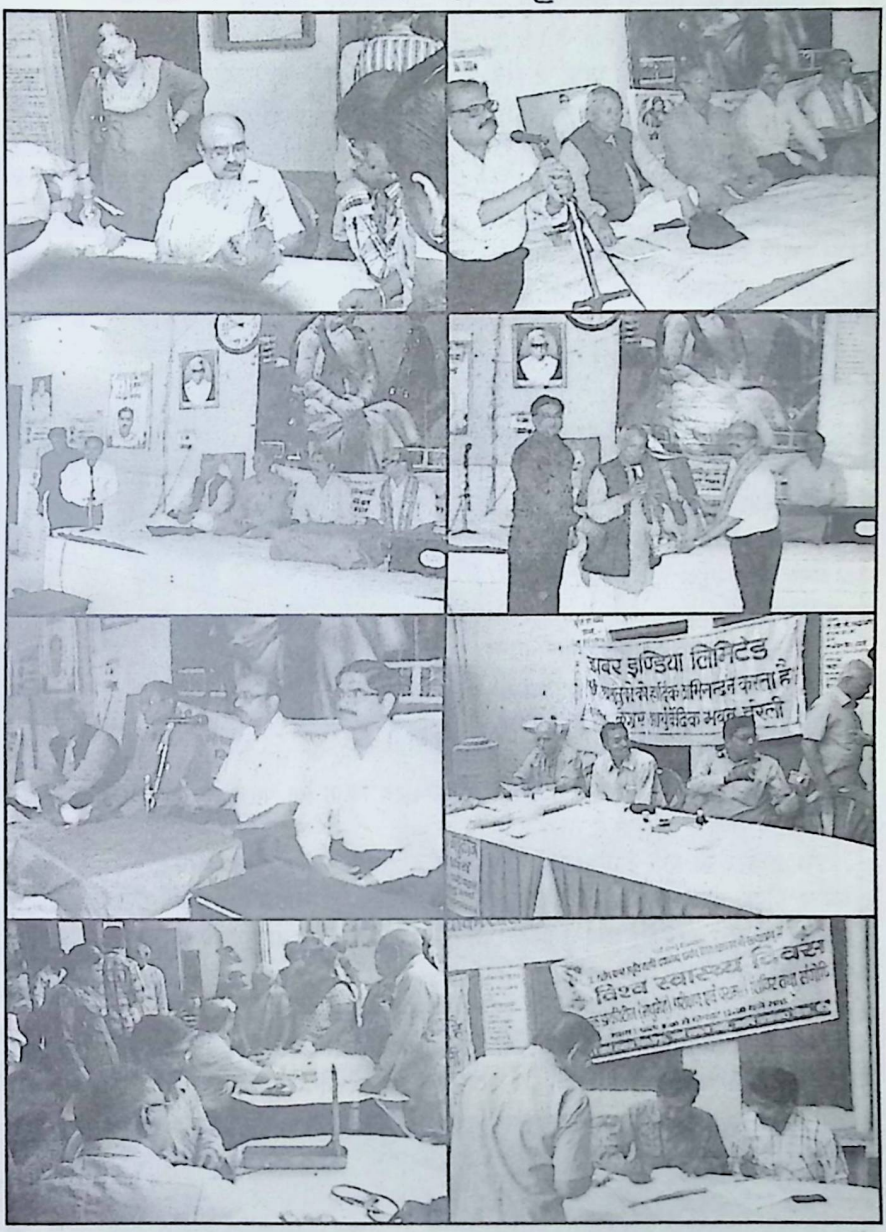


डायबिटीज का परीक्षण व अन्य सुविधायें प्रदान की गई थी। इस शिविर में संगोष्ठी के साथ रोगियों को डायबिटीज परीक्षण के लिए ग्लूकोज की व्यवस्था भी डाबर इण्डिया लि० के सौजन्य से की गई थी। अत्यन्त भव्य एवं समाजोपयोगी आयोजन किया गया। शिविर व संगोष्ठी का संयोजन व संचालन मंत्री डॉ० श्वेतकेतु शर्मा ने किया।

## ४. आर्यसमाज का १३८ वाँ स्थापना दिवस एवं नव संवत्सर महोत्सव :-

आर्यसमाज बिहारीपुर बरेली के तत्वावधान में आर्य समाज स्थापना दिवस एवं नव संवत्सर महोत्सव १ अप्रैल २०१३ को प्रातः ८ से १० बजे तक भव्यता से आयोजित किया गया। इस अवसर पर प्रख्यात वयोवृद्ध आर्य विद्वान आचार्य व्रतपाल शास्त्री जी थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधान डॉ० ओ० पी० अग्रवाल ने की थी। इस अवसर पर प्रख्यात प्रकाण्ड विद्वान स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती वेदभिक्षु ने कहा कि आर्यसमाज ने समाज को सोचने-समझने सत्य-असत्य का विवेचन करने का मार्ग दिखाया जिससे समाज में विभिन्न प्रकार की कुरीतियों को दूर करने का मार्ग प्रशस्त हुआ। वेद की और लौटों का संदेश प्रदान कर राष्ट्रीय मूल्यों की उत्थान की बात कही। प्रख्यात विद्वान आचार्य रामदेव शास्त्री, राजेन्द्र कुमार, डॉ० वी० के० शर्मा, डॉ० ओ० पी० अग्रवाल ने भी अपने विचार रखे।

(स्वामी ब्रह्मानन्द जी उद्बोधन करते हुए)

(ओ० पी० अग्रवाल व्याख्यान देते हुए)

इस अवसर पर वयोवृद्ध आर्यविद्वान आचार्य व्रतपाल शास्त्री का भव्य अभिनन्दन किया गया। स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी व प्रधान डॉ० ओ० पी० अग्रवाल ने शाल उढ़ाकर उनका सम्मान किया। मंत्री डॉ० श्वेतकेतु शर्मा ने उन्हें साहित्य भेंट करते हुए उनके जीवन पर प्रकाश डाला। आचार्य शास्त्री जी ने इस अवसर पर आवाह्न किया कि पाखण्ड, अन्धविश्वास से दूर रहकर देश व राष्ट्र के विकास में सहयोग प्रदान करें।

इस अवसर पर युवा आर्य कर्मठ कार्यकर्ता डॉ० आलोक कुमार सेठ, शचीन्द्र सक्सेना, गौरव अग्रवाल, दीपक गोयल, डॉ० वेदप्रकाश श्रीवास्तव, वेदभानु आर्य का विशेष सहयोग रहा। संचालन संयोजन मंत्री डॉ० श्वेतकेतु शर्मा ने किया। अमर उजाला, दैनिक जागरण में यह समाचार भव्यता से प्रकाशित हुआ।

## ५. आर्यसमाज बिहारीपुर का १३०वाँ वार्षिकोत्सव एवं ऋषिबोधोत्सव :-

आर्यसमाज बिहारीपुर बरेली ने अपना १३०वाँ वार्षिकोत्सव एवं ऋषिबोधोत्सव ८ से १३ मार्च २०१३ तक बड़ी भव्यता से मनाया। इस अवसर पर आर्य जगत के मूर्धन्य अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति

(शोभायात्रा में जिला प्रधान विजय बहादुर गौड़ एवं सदस्य बिहारीपुर गयाराम यादव)

(आचार्या गायत्री देवी का सम्मान करतीं श्रीमती लीलावती शास्त्री)

(आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी उद्बोधन देते हुए)

(वार्षिकोत्सव के अवसर पर मंत्रमुग्ध श्रोतागण)

(संदीप अग्रवाल को उपहार देते आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी)

(वार्षिकोत्सव पर व्याख्यान देते आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी)

(भजनोपदेश करते संजीव कुमार रूप जी)

(कन्या गुरूकुल हाथरस की छात्राओं के द्वारा सस्वर वेदपाठ)

प्राप्त विद्वान आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय (दिल्ली), प्रकाण्ड वेद विद्वान आचार्य विष्णु मित्र वेदार्थी (बिजनौर), प्रख्यात भजनोपदेशक एवं आकाशवाणी दूरदर्शन के गायक कवि संजीव कुमार 'रूप' (बदायूँ) तथा कन्या गुरूकुल सासनी, हाथरस की विदुषी बहन आचार्या गायत्री देवी व ब्रह्मचारियों का सस्वर वेदपाठ की आकाश गूँज के साथ सफल हुआ।

**६. शोभायात्रा :-**

इस अवसर पर १० मार्च को ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया गया था। इस शोभयात्रा के माध्यम से सैकड़ों की संख्या में आर्यवृन्द व ब्रह्मचारियों का उच्च स्वर से जयघोष, मंत्रोच्चारण

(रथ पर आसीन प्रधान डॉ० ओ० पी० अग्रवाल)

(शोभायात्रा का विहंगम दृश्य)

एवं कई प्रकार की झांकियों के साथ नगर के प्रमुख स्थानों से होता हुआ आर्य समाज के वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार किया गया।

**७. एक शाम दयानन्द के नाम :-**

ऋषिबोधोत्सव १० मार्च २०१३ को आर्यसमाज सभागार में प्रख्यात भजनोपदेशक संजीव कुमार 'रूप' एवं उनके सहयोगियों के द्वारा "एक शाम दयानन्द के नाम" प्रस्तुति सायं ७ से १० बजे तक आयोजित की गयी। इस प्रस्तुति में अपार जन समूह की उपस्थिति में ऋषि का नाम गुंजायमान हुआ, सभी मंत्रमुग्ध हो गये।

(काव्यपाठ करतीं डॉ० महाश्वेता चतुर्वेदी)

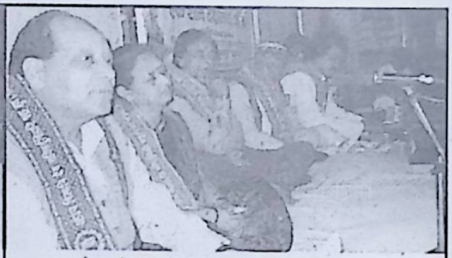

(मंचासीन कविगण)

(मंत्रमुग्ध श्रोतागण)

(एक शाम दयानन्द के नाम प्रस्तुत करते हुए संजीव रूप)

(काव्यपाठ करते डॉ० आलोक कुमार सेठ)

(गुरुकुल हाथरस की छात्राओं द्वारा काव्य प्रस्तुतिकरण)

इसी अवसर पर नगर के सुविख्यात कविगण सर्वश्री रामप्रकाश गोयल 'सोज', डॉ० मुरारी लाल सारस्वत, डॉ० महाश्वेता चतुर्वेदी, राजेश गौड़ (आकाशवाणी बरेली), इन्द्रदेव त्रिवेदी, देवेन्द्र नाथ शर्मा, श्रीमती शिवरक्षा पाण्डे आदि कवियों वं कवयित्रियों के काव्यपाठ के द्वारा भव्यता से कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधान डॉ० ओ० पी० अग्रवाल ने की थी तथा संयोजन एवं संचालन मंत्री डॉ० श्वेतकेतु शर्मा ने किया।

८. राष्ट्र रक्षा सम्मेलन :-

वार्षिकोत्सव एवं ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर ११ मार्च को अपराह्न ३ से ६ बजे तक आर्य समाज माडल टाउन सभागार में राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रख्यात वेद विज्ञान विद्वान आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय दिल्ली, जिला सभा के प्रधान विजय बहादुर गौड़ जी, आचार्य रामदेव शास्त्री, श्रीमती कृष्णा बजाज ने राष्ट्र रक्षा के लिए आवाह्न किया। आर्यसमाज की विचारधारा को साथ में लेकर चलने पर ही समाज एवं देश को एकरूपता एवं भारतीयता के परिप्रेक्ष्य में लाया जा सकता है। जब तक दयानन्द के विचारों को आत्मसात नहीं किया जायेगा। तब तक राष्ट्र सुरक्षित नहीं हो सकता है। आचार्या गायत्री देवी ने मातृशक्ति की उन्नति हेतु अपने सारगर्भित विचार रखे।

(आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी उद्बोधन करते हुए)

(मंत्रमुग्ध श्रोतागण)

इस अवसर पर भजनोपदेश श्री संजीव कुमार रूप ने अपने भजनोपदेश से मंत्रमुग्ध कर दिया। संचालन श्रीमती कृष्णा बजाज ने किया तथा संयोजन मंत्री डॉ० श्वेतकेतु शर्मा ने किया तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधान डॉ० ओ० पी० अग्रवाल ने की थी। गुरूकुल की ब्रह्मचारिणियों ने गीतों से राष्ट्र रक्षा के संकल्प को दोहराया। इस अवसर पर डॉ० आलोक कुमार सेठ, रामकुमार वीरेश, राजेन्द्र कुमार, शचीन्द्र सक्सेना, मंत्री कृष्ण लाल बजाज, प्रधान प्रवेश चन्द्र पाहवा, राकेश चौकसी, वीरेन्द्र आर्य, डॉ० पूरन लाल वर्मा, डॉ० राजकुमारी अरोड़ा, राजेन्द्र कुमार सरीन, डॉ० रश्मि जायसवाल आदि उपस्थित थे।

इस अवसर पर आर्यसमाज मॉडल टाउल द्वारा सभी विद्वानों/विदुषियों को सम्मानित भी किया गया।

९. आर्य युवा सम्मेलन :-

आर्यसमाज बिहारीपुर के १३०वें वार्षिकोत्सव व ऋषिबोधोत्सव के अवसर १२ मार्च २०१३ को अपराह्न ३ बजे से ६ बजे तक आर्यसमाज जगतपुर बरेली में आर्य युवा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधान डॉ० ओ० पी० अग्रवाल ने की थी तथा मुख्य वक्ता के रूप में प्रख्यात वेद विद्वान आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी ने युवाओं को देश व राष्ट्र के लिए सचेत किया। वेद की विचारों को आत्मसात करने का आवाह्न किया। संस्कारवान, चरित्रवान राष्ट्र, परिवार निर्माण करने के ऋषि संकल्प को दोहराया।

इस अवसर पर काफी संख्या में आर्य युवाओं ने भाग लिया। इस अवसर पर डॉ० आलोक कुमार सेठ, आलोक चौधरी, सूरज गुप्ता, वेदप्रकाश श्रीवास्तव, शचीन्द्र सक्सेना, आचार्य रामदेव

शास्त्री, ओमप्रकाश आर्य, भजनोपदेशक संजीव कुमार रूप, सुनील शर्मा, नीरज गुप्ता, विमल शर्मा, रामदेव गुप्ता, संजय गुप्ता आदि उपस्थित रहे। आर्यसमाज जगतपुर का प्रशंसनीय सहयोग रहा।

**१०. वेद विज्ञान संगोष्ठी :-**

आर्यसमाज बिहारीपुर के १३०वें वार्षिकोत्सव एवं ऋषिबोधोत्सव के अन्तिम दिन १३ मार्च २०१३ को अपराह्न ३ बजे रोटरी क्लब, रुहेलखण्ड, बरेली के सम्मिलित तत्वावधान में 'रोटरी भवन, बरेली' में आयोजित किया गया। इस अवसर पर संगोष्ठी की अध्यक्षता प्रधान डॉ० ओ० पी० अग्रवाल ने की थी, मुख्य अतिथि बरेली नगर निगम के मेयर एवं प्रख्यात सर्जन डॉ० आई० एस० तोमर थे। रोटरी क्लब रुहेलखण्ड बरेली के अध्यक्ष ने मयंक खण्डेलवाल स्वागताध्यक्ष राजा रणञ्जय सिंह महाविद्यालय अमेठी में एसोसिएट प्रोफेसर (डॉ०) ज्वलन्त कुमार शास्त्री विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

इस अवसर पर वेद विज्ञान के प्रकाण्ड विज्ञान अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी मुख्य वक्ता के रूप में तथा शील हास्पिटल के प्रख्यात पैथोलॉजिस्ट डॉ० वेदप्रकाश शर्मा, आयुर्वैदिक कॉलेज, बरेली में कार्यरत आयुर्वैदिक सर्जन एवं चिकित्साधिकारी आयुर्वेद डॉ० डी० के० द्विवेदी विशिष्ट वक्ता के रूप में सहभागिता की।

इस अवसर पर आचार्य (डॉ०) विशुद्धानन्द मिश्र स्मृति देववाणी शोध व विकास पीठ, दिल्ली के अध्यक्ष डॉ० मेधाव्रत मिश्र के तत्वावधान में डॉ० ज्वलन्त कुमार शास्त्री को वेद श्री, आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय को वेदरत्न, डॉ० वेदप्रकाश शर्मा को आर्यरत्न तथा डॉ० डी० के०

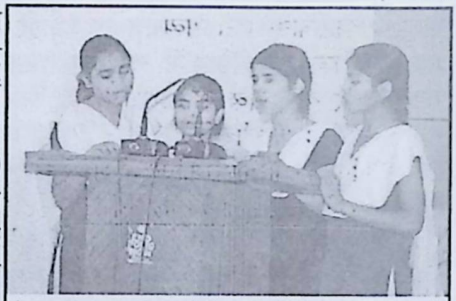

(गुरुकुल हाथरस की छात्राएँ ईश-प्रार्थना से शुभारम्भ करती हुई)

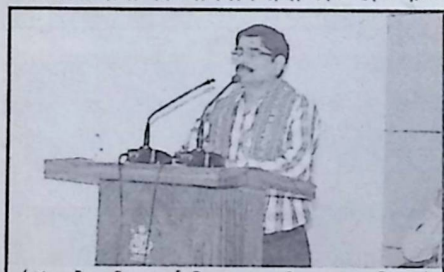

(डॉ० वी० पी० शर्मा विषय का प्रतिपादन करते हुए)

(डॉ० डी० के० द्विवेदी विषय का विवेचन करते हुए)

(मंचासीन अतिथिगण राष्ट्रगान के अवसर पर)

(उपस्थित श्रोतागण)

द्विवेदी को आयुर्वेद रत्न सम्मान से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र की स्मृति में ट्राफी, स्मृति चिन्ह, दुशाला संस्कृत में लिखित सम्मान पत्र से डॉ० मेघाव्रत मिश्रा, डॉ० प्रतिभा मिश्रा, आचार्य माधव मिश्रा, डॉ० श्वेतकेतु शर्मा, डॉ० ओ० पी० अग्रवाल, मयंक खण्डेलवाल (अध्यक्ष-रोटरी क्लब रुहेलखण्ड), पुनीत मित्तल (सचिव, रोटरी क्लब रुहेलखण्ड), संजीव साहनी (सह संयोजक), शचीन्द्र सक्सेना (सह संयोजक) एवं मुख्य अतिथि डॉ० आई० एस० तोमर के सानिध्य में विद्वानों का अभिनन्दन किया गया।

इस अवसर पर मेयर डॉ० आई० एस० तोमर जी का भी पीठ के सौजन्य से उनकी विशिष्ट सामाजिक सेवाओं के लिए अभिनन्दन किया गया। संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी ने ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति से लेकर सृष्टि की रचना, अणु संयोग एवं पंचतत्व की विस्तृत व्याख्या वेदों के आधार पर की तथा वेदों को अप्रमाणिक और अप्रसांगिक सिद्ध करने का प्रयास किया जाता रहा उनमें सृष्टि के उन अति सूक्ष्म तत्व गॉड पार्टिकल्स तक की व्याख्या की थी, जिसमें खोज के नाम पर दुनिया भर हंगामा मचा हुआ है। डॉ० ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने ज्योतिष, गणित, संगीत, मानविकी की समस्त ऋचाओं में सम्मिलित हैं ज्योतिष वास्तव में परिष्कृत गणित व खगोलीय विज्ञान वेद से उत्पन्न ज्ञान है, प्रमाणित किया।

वरिष्ठ पैथोलॉजिस्ट डॉ० वेदप्रकाश शर्मा वेदों में विज्ञान, वरिष्ठ आयुर्वेदाचार्य डॉ० डी० के० द्विवेदी ने वेदों में चिकित्सा विज्ञान, शल्य आदि का जनक बताते हुए आधुनिक मैटरनिटी आपरेशन तक की आसान क्रियाविधि वेदों में वर्णित है, सप्रमाण उद्बोधन दिया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि मेयर डॉ० आई० एस० तोमर ने वेदों पर अनुसन्धान प्रक्रिया को तेज करनें पर बल दिया एवं वेदों में विज्ञान विषय पर विद्वानों द्वारा रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय में हजारों छात्रों के बीच ऐसा उद्बोधन एवं कार्यक्रम कराने में अपना पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। डॉ० प्रतिभा मिश्रा, आचार्य माधव मिश्रा ने भी उद्बोधन दिया। स्वागत भाषण रोटरी क्लब के सचिव पुनीत मित्तल ने दिया।

अध्यक्षीय भाषण डॉ० ओ० पी० अग्रवाल ने दिया। आभार सह संयोजक जिला विज्ञान क्वल समन्वयक डॉ० रविप्रकाश शर्मा ने दिया। संगोष्ठी में रोटरी क्लब के संजीव साहनी, डॉ० आलोक कुमार सेठ, शचीन्द्र सक्सेना, डॉ० वेदप्रकाश श्रीवास्तव, संदीप अग्रवाल, दीपक गोयल, वेदभानु आर्य, गौरव अग्रवाल, परमानन्द अग्रवाल का विशेष सहयोग रहा।

संगोष्ठी का सफल संचालन संयोजन आर्यसमाज बिहारीपुर के मंत्री डॉ० श्वेतकेतु शर्मा ने किया। दैनिक जागरण बरेली ने भव्यता से प्रकाशित किया।

**११. ऋषि दर्पण (त्रैमासिक प्रगति पत्रिका) का भव्य विमोचन :-**

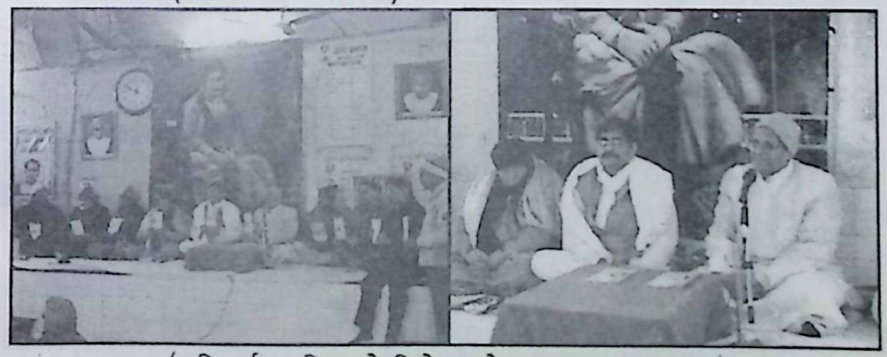

(ऋषि दर्पण पत्रिका के विमोचन के अवसर का भव्य दृश्य)

(ऋषि दर्पण पत्रिका के विमोचन के अवसर का भव्य दृश्य)

आर्यसमाज बिहारीपुर के द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक प्रगति पत्रिका ऋषि दर्पण का भव्य विमोचन ६ जनवरी २०१३ को प्रधान डॉ० ओ० पी० अग्रवाल, प्रख्यात अर्थशास्त्री, डॉ० एन० एल० शर्मा, प्रख्यात पैथोलॉजिस्ट डॉ० वी० पी० शर्मा, गीतकार इन्द्रदेव त्रिवेदी, वेदज्ञ डॉ० बी० के० शर्मा प्रख्यात फिजीशियन डॉ० महेश गुप्ता, आचार्य अवनीन्द्र शास्त्री, डॉ० प्रतिभा वार्ष्णेय (संस्कृत प्रोफेसर, बरेली कॉलेज), दीपक गोयल, राजेन्द्र कुमार, ओम आर्य, संदीप अग्रवाल, डॉ० आलोक कुमार सेठ तथा सम्पादक मंत्री डॉ० श्वेतकेतु शर्मा के द्वारा भव्यता से विमोचन किया गया।

इस अवसर पर डॉ० ओ० पी० अग्रवाल, दीपक गोयल, प्रधान अनाथालय तेजगुप्त, हर्षवर्धन बिज, शचीन्द्र सक्सेना, श्रीमती भारती (लखनऊ), सतीश चन्द्र अग्रवाल, प्रवीण कुमार सक्सेना, श्रीमती सुधा श्रीवास्तव (हरदोई), बनवारी लाल आदि ने आजीवन सदस्यता शुल्क ११००/- देकर सदस्यता प्राप्त की।

**१२. होली मिलाप महोत्सव :-**

होली के पावन अवसर पर २७ मार्च २०१३ को गुलाबराय इण्टर कॉलेज प्रांगण होली मिलाप मेले में आर्यसमाज बिहारीपुर, बरेली ने होली मिलाप महोत्सव कैम्प लगाया गया। इस अवसर पर पुरोहित पुष्पेन्दु शुक्ला, इन्द्रदेव आर्य ने यज्ञ से महोत्सव का शुभारम्भ किया। नगर के गणमान्य व्यक्तियों में विधायक डॉ० अरुण कुमार एवं सांसद श्री प्रवीण सिंह ऐरन, पूर्व केन्द्रीय मंत्री संतोष गंगवार, पूर्व मेयर सुप्रिया ऐरन आदि उपस्थित होकर आर्य समाज के पदाधिकारियों को शुभकामनायें प्रदान की। जनता में प्रचार-प्रसार के लिए निःशुल्क साहित्य वितरण भी किया गया। डॉ० आलोक कुमार सेठ, राजेन्द्र कुमार, वेदभानु आर्य, संदीप अग्रवाल, आचार्य रामदेव शास्त्री, श्रीमती कृष्णा बजाज, आचार्य अवनीन्द्र शास्त्री का मेले में सक्रिय सहयोग रहा। संयोजन मंत्री डॉ० श्वेतकेतु शर्मा ने किया।

(होली मिलाप समारोह के अवसर पर यज्ञ का भव्य दृश्य)

# जिले की अन्य आर्यसमाजों की गतिविधियाँ

**१. आर्यसमाज धमोरा का वार्षिकोत्सव :-**

आर्यसमाज धमोरा (जि० रामपुर) का वार्षिकोत्सव २७ मार्च से ३० मार्च तक भव्यता से मनाया गया। इस अवसर पर आर्यसमाज बिहारीपुर, बरेली के मंत्री डॉ० श्वेतकेतु शर्मा एवं सन

(आर्यसमाज धमोरा के वार्षिकोत्सव का भव्य दृश्य चित्रों में)

फार्मा के पूर्व जोनल मैनेजर राजीव अवस्थी ने भाग लिया तथा आर्य समाज के द्वारा समाज को कैसे व्यवस्थित किया जा सकता है विचार प्रकट किये। मूर्धन्य विद्वान आचार्य श्रीकृष्ण देव जी (हरिद्वार), भजनोपदेशक श्री सतपाल जी सरल (देहरादून), श्री कुलदीप विद्यार्थी (बिजनौर), श्री वीरदेव जी भजनोपदेशक (मिलक) ने वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार कर जन जागृति प्रदान की। मंत्री ओम कुमार आर्य के सफल संयोजन व प्रयास से तीनों समय पर उपस्थित अपार जन समूह ने इसका लाभ उठाया। प्रधान सुरेश कुमार आर्य की अध्यक्षता में कोषाध्यक्ष संजीव कुमार आर्य के अथक प्रयासों से आर्य सिद्धान्तों का प्रचार किया गया।

**२. आर्य स्त्री समाज बिहारीपुर का वेदप्रचार सप्ताह :-**

आर्य स्त्री समाज बिहारीपुर, बरेली का वेद प्रचार सप्ताह ८ मार्च व ९ मार्च २०१३ का भव्यता से मनाया गया। इस अवसर पर बिजनौर से आये आचार्य विष्णु मिश्र वेदार्थी, भजनोपदेशक संजीव कुमार रूप (बदायूँ) तथा आचार्या गायत्री देवी, गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों ने अपने भजनोपदेशों से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। मंत्राणी श्रीमती कृष्णा आर्या ने संयोजन व संचालन किया। प्रधाना श्रीमती कस्तूरी देवी ने अध्यक्षता की थी। पूर्व प्रधान श्रीमती लालावती गुप्ता, कोषाध्यक्ष श्रीमती प्रीति मेहरा, उपप्रधाना वेदवती आर्या का विशेष सहयोग रहा।

(काव्यपाठ करतीं स्त्री समाज की कोषाध्यक्ष श्रीमती प्रीति मेहरा)

**३. पुस्तक मेले में आर्य साहित्य सदन की धूम :-**

"वेदों की ओर लौटो, पढ़ो वेद घरों में हो वेद" वाक्य को सार्थकता प्रदान करने के लिए बरेली में लगे पुस्तक मेले में "आर्ष साहित्य सदन" के संस्थापक राजेन्द्र कुमार जी ने आर्य साहित्य विक्रय

हेतु अपना स्टाल लगाया। इस अवसर पर बरेली और आस-पास के पुस्तक प्रेमियों को आर्ष साहित्य की उपलब्धता प्राप्त हुई। आर्ष साहित्य के द्वारा लोगों को आर्य समाज का ज्ञान प्राप्त हुआ। मेले में पुस्तकों का स्टाल लगाकर राजेन्द्र जी ने सराहनीय कार्य किया।

(पुस्तक मेले में संस्थापक राजेन्द्र कुमार एवं मंत्री डॉ० श्वेतकेतु शर्मा)

४. आर्यसमाज फरीदपुर का वार्षिकोत्सव :-

आर्यसमाज फरीदपुर, बरेली ने १९ से २१ अप्रैल २०१३ तक भव्यता से वार्षिकोत्सव सम्पन्न किया। इस अवसर पर प्रख्यात वेद विद्वान आचार्य विष्णु मित्र वेदार्थी (बिजनौर), स्वामी क्षमानन्द सरस्वती, भजनोपदेशिका श्रीमती सीता आर्या तथा श्री जितेन्द्र आर्य ने उपदेश व भजनोपदेश से वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार किया। जिला सभा के प्रधान तथा आर्यसमाज के प्रधान श्री विजय बहादुर गौड़ के संयोजन में मंत्री (मेजर) सुशील कुमार सक्सेना, कोषाध्यक्ष उमेश गुप्ता के अथक प्रयासों से वार्षिकोत्सव सफल रहा। आर्यसमाज बिहारीपुर, बरेली के मंत्री डॉ० श्वेतकेतु शर्मा ने इस अवसर पर उपस्थित होकर वैदिक ज्योति के जन जन में प्रकाशित करने पर बल दिया। आर्य समाज फरीदपुर के प्रयासों से प्रख्यात चिकित्सक डॉ० नरेन्द्र कुमार अग्रवाल के द्वारा धर्मार्थ चिकित्सालय भी चलाया जा रहा है। जो समाज की सेवा में संलग्न है।

(आर्यसमाज फरीदपुर के वार्षिकोत्सव का एक दृश्य)

## वेद और विज्ञान

(रचयिता : देवेन्द्रनाथ शर्मा, बरेली)

वेदों से विज्ञान है उपजा, जो दुनिया में छाया है।
बुद्धि द्वारा विद्वानों ने, इसका लाभ उठाया है।।
सहस्त्र मील पर जो बैठा है, वह भी निकट दिखाता है।
दूरदर्शन का खेल अलबेला, सबके मन को भाया है।।
टेलीफोन व मोबाइल भी सारे, सारा हाल बताते हैं।
किसने क्या खोया है अब तक किसने क्या-क्या पाया है।।
वायुमण्डल के द्वारा ही सभी दिशा में जाते हैं।
अद्भुत यंत्र वह ऐसा है अद्भुत उसकी माया है।।
धरती वाले नभ पर घूमे, नभ वाले सब धरती पर।
सागर पार करें पल भर में, ऐसा यन्त्र बनाया है।।
वायु, पावक, जल, नभ, भू पर पूरा ही अधिकार किया।
वेदों द्वारा वैज्ञानिक ने, "देवेन्द्र" चक्र चलाया है।।

## विनम्र निवेदन

ऋषि दर्पण (त्रैमासिक प्रगति पत्रिका) सभी आर्य बन्धुओं, आर्य समाजों को जोड़ने, मिलने, सहयोग करने का प्रयास है। आप भी ऋषि दर्पण से जुड़ने के लिए हमें अपने काव्य, विचार, आर्यसमाज की गतिविधियाँ, आगामी आयोजन, वर्तमान समस्यायें व स्मृतियाँ फोटो सहित ई-मेल (shwetketusharma@gmail.com) या पत्र के द्वारा भेजें, हम सम्मानपूर्वक प्रकाशित करेंगे। आर्यसमाज बिहारीपुर, बरेली की वेबसाइट www.aryasamabeharipur.com (निर्माणाधीन) भी अतिशीघ्र आपको देखने को मिलेगी।

**विज्ञापन प्रदान करके लाभ उठायें।** —सम्पादक

# चित्रों में आर्यसमाज बिहारीपुर की गतिविधियाँ

वेद विज्ञान संगोष्ठी में बोलते हुए मेयर डॉ0 आई0 एस0 तोमर

ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री संतोष गंगवार जी का स्वागत

गुरूकुल हाथरस की ब्रह्मचारिणियों द्वारा सस्वर वेद-पाठ

वार्षिकोत्सव के अवसर पर भजनोपदेशक संजीव रूप गायन करते हुए

वेद विज्ञान संगोष्ठी में बोलते हुए आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय

वेद विज्ञान संगोष्ठी में बोलते हुए प्रोफेसर (डॉ0) ज्वलन्त कुमार शास्त्री

वार्षिकोत्सव के अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ में भाजपा महानगर अध्यक्ष पुष्पेन्दु शर्मा

वार्षिकोत्सव के अवसर पर बोलते हुए आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी

आर्य समाज बिहारीपुर द्वारा प्रकाशित ऋषि दर्पण (त्रैमासिक प्रगति पत्रिका) के प्रकाशन पर हार्दिक मंगल कामनायें।

# आधुनिक बरेली की पहचान

ALLIANCE Sun City VISTAAR
बरेली की पहली इंटीग्रेटेड टाउनशिप, पूर्णतः विकसित और बसी हुई

एतायेव महानगर Life है यहाँ
बरेली की सबसे बड़ी, सबसे लोकप्रिय टाउनशिप

ALLIANCE Residency Gardens
शहर के बीचोंबीच बसी एक आलीशान टाउनशिप

ALLIANCE SUPER CITY
बेजोड़ लोकेशन पर एक सुपर टाउनशिप

A ALLIANCE बढ़ते कदम

ALLIANCE BUILDERS & CONTRACTORS LIMITED

Corporate Office : Stadium Road, Bareilly - 243122 Ph : 0581 - 2533020, 2533021, 2533022 | Rudrapur : Kashipur Road, Rudrapur (Uttarakhand) Ph : 05944-242305, 239361, 246668
Shahjahanpur : South City, Bareilly More, Shahjahanpur Ph : 05842-240371, 240372, 240373 | Website : www.alliancebuilderindia.com E mail : info@alliancebuilderindia.com

'ऋषि दर्पण' पत्रिका के प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनाएं।

भाभी जी
एक दान.....सदा आरम

लहंगा चुनरी, वैवाहिक एवं कलात्मक साड़ियों, वैडिंग सूट एवं कुरती का विशाल शोरूम

गली आर्यसमाज, बरेली।
फोन : 9897077668, मो. 9997767777

'ऋषि दर्पण' पत्रिका के प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनाएं।

Cosmetic Herbal Skin Clinic

डॉ. वी. के. शर्मा
B.Sc., B.A.M.S., Ayurvedacharya

पुराने जीर्ण, त्वचा, उदर एवं लीवर, हड्डी, जोड़ों के रोगों का विशेष अनुभव प्राप्त, सिरदर्द माइग्रेन, बच्चों के समस्त रोगों का अधुनान्त आयु. हर्बल ट्रीटमेंट भय, तनाव, आत्मविश्वास में कमी, बेचैनी, नशे की लत, याद्दाश्त कमजोर होना, डिप्रेशन, मानसिक रोगों का इलाज प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति से किया जाता है।

Helpline : 8449090500
Timing : 10 a.m. - 1 p.m., 6 p.m. - 9 p.m.

'ऋषि दर्पण' पत्रिका के प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनाएं।

डॉ. मानवेन्द्र सिंह
B.D.S.
डेन्टल सर्जन
दाँत, मुँह एवं जबड़ा रोग विशेषज्ञ
मो. 9412424388

दु.नं.4, निकट रामजानकी मन्दिर, डेलापीर रोड, बरेली।

- SINGLE SITTING RCT
- मुँह के छाले
- कम मुँह खुलने का इलाज
- फिक्स दाँत लगाना
- मुँह एवं दाँत के सभी रोगों का इलाज

मिलने का समय : सायं 6 बजे से रात्रि 9 बजे तक

तिवारी मार्केट (प्रथम तल) ऊपर रामजानकी मन्दिर, डेलापीर रोड, जनकपुरी, बरेली।


नारायन प्रिन्टर्स, नैनीताल रोड, बीसलपीर, बरेली। मो. ९८०८११५०५